# आजका रूस

सत्यनारायण बनर्जी

अनुवादक
व्रजमोहन वर्मा

विशाल भारत बुक-डिपो

# आजका रूस


नित्यनारायण बनर्जी

अनुवादक
ब्रजमोहन वर्मा



विशाल भारत बुक-डिपो
१६५।१, हरिसन रोड, कलकत्ता

प्रकाशक
श्री अयोध्या सिंह
विशाल भारत बुक-डिपो
१९५।१, हरिसन रोड, कलकत्ता



मूल्य तीन रुपया

# प्राक्कथन

पिछले महायुद्धने अनेक ऐसी जटिल और विशालकाय समस्याएँ पैदा कर दी हैं, जिनके समाधानमें, युद्धके बीस वर्ष बाद आज भी, हमारी अक्ल चकरा रही है। इन समस्याओंमें शायद सबसे अधिक चकरानेवाली समस्या रूसी साम्यवादी सोवियट प्रजातन्त्रोंने उपस्थित की है। सन् १९१७ की रूसी क्रान्तिके बाद ही क्रमश: आस्ट्रिया, जर्मनी, इटली तथा अन्य बहुतेरे देशोंमें क्रान्तियाँ हुईं, जिनसे यूरोपियन महाद्वीपका राजनैतिक और आर्थिक जीवन ही नये साँचेमें ढल गया। लेकिन इन सब देशोंकी क्रान्तियोंने संसारका उतना ध्यान आकर्षित नहीं किया, जितना सोवियट रूसने ज़बरदस्ती अपनी ओर खींचा है। दूसरा नम्बर मुसोलिनीकी अध्यक्षतामें इटलीका आता है; पर विश्वव्यापी प्रसिद्धिमें लेनिन और स्टेलिनके रूसके साथ उसकी तुलना नहीं हो सकती। रूसके दोस्त और दुश्मन दोनों ही इस बातमें सहमत हैं कि रूसी क्रान्ति इस युगकी सबसे महान घटना है। सोवियट तरीकों और विचारोंका संसारमें खूब प्रचार हुआ—उनके द्वारा भी जो इन विचारोंके बड़े हिमायती हैं, और उनके द्वारा भी, जो उनके घोर विरोधी हैं। बाइबिलके वर्जित पत्थरकी भाँति यह वर्जित देश भी विभिन्न देशोंके करोड़ों लोगोंके लेखे मूलकी तरह पड़ गया है। फिर जब १९२७ में सोवियट सरकारने 'सोवियट

प्रकाशक
श्री [illegible] सिंह
विशाल भारत बुक-डिपो
१९५/१, हरिसन रोड, कलकत्ता



मूल्य तीन रुपया

प्रोफेसर सर्ज द' ओल्डेनबर्ग ( Prof Serge d' Oldenberg ) हैं। फिर जब प्रोफेसर शेरबैट्स्की ( Prof Tscherbatsky ) ने, जो रूसमें बौद्ध साहित्यके अध्ययनके निरीक्षक हैं, अपना महान ग्रन्थ 'निर्वाण' प्रकाशित किया, तो भारतीय पुरातत्त्वके प्रेमी दंग रह गये। सोवियट वैज्ञानिकोंने कलकत्ता-यूनिवर्सिटीके प्रोफेसर रमनको निमन्त्रित करके भारतीय विज्ञान-संसारके प्रति सम्मान प्रकट किया था। रूसमें शान्तिपूर्वक जो निर्माण-कार्य हो रहा है, प्रोफेसर रमनने उसकी बड़ी प्रशंसा की थी। लेकिन रूसके सम्बन्धमें सबसे ज्ञानप्रद पुस्तक, जो भारतमें प्रकाशित हुई, वह कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टाकुरकी 'रूसकी चिट्ठी' थी। कवीन्द्रने सन् १९३० में रूसकी यात्रा की थी। उसी समय अमेरिकामें मारिस हिन्डसकी 'Humanity Uprooted' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। अब विचारशील व्यक्ति लोगोंसे सोचने लगे कि रूस जो कुछ करता है, क्या वह वास्तवमें अमानुषिक है, अथवा यह कि राष्ट्रीय जीवनके उलट-फेरके साथ-साथ रूस मानव-जातिकी कुछ वास्तविक समस्याओंको हल कर रहा है। पंडित जवाहरलाल नेहरूने भी रूसकी यात्रा करके अपने अनुभव और विचार प्रकाशित किये थे।

पाठकोंको यह ज्ञात हो जायगा कि इस पुस्तकके लेखक एक सच्चे जिज्ञासु हैं, जो स्वार्थियोंके प्रोपेगण्डेसे नहीं, वरन प्रत्यक्ष रूपसे रूसके बारेमें कुछ जाननेके इच्छुक हैं। सन् १९३३ में रूसकी यात्रा करके इन्होंने लेनिनग्रेड और मास्कोकी प्रमुख संस्थाओंको देखा है, और अब वे अपना यात्रा-वृत्तान्त अपने देशवासियोंके सामने

इयर बुक' के रूपमें अपने दस वर्षके कार्योंका विवरण प्रकाशित किया, तो संसारके समझदार व्यक्तियोंको —जिनकी संख्या निस्सन्देह बहुत थोड़ी है—एक दूसरा ज़ोरका धक्का लगा। उन्हें मालूम हुआ कि यू० एस० एस० आर० का अर्थ केवल क्रान्ति ही नहीं, बल्कि बड़ा भारी विकास भी है। निरक्षरता दूर करने, सबकी सामाजिक स्थिति समान बनाने, स्त्रियोंकी दशा सुधारने और उत्पादन तथा वितरणकी प्रणालीमें मौलिक परिवर्तन करनेमें यू०एस० एस० आर० ने इस वर्षके अल्पकालमें ही एक 'रेकर्ड' स्थापित कर दिया है। इस 'रेकर्ड' ने संसारके जनमतको नकारात्मक घृणाकी ओरसे पलटकर यह जाननेके लिए मजबूर किया कि रूसमें चीज़ोंकी दशा क्या है, और क्यों है? नतीजा यह हुआ कि रूसके पंचवर्षीय कार्यक्रमकी योजना जब पुस्तकाकार प्रकाशित हुई, तो वह वर्तमान युगकी सबसे अधिक बिकनेवाली किताब सिद्ध हुई। यहाँ तक कि आज भारतीय विश्वविद्यालयोंके फर्स्ट इयरका कोई भी विद्यार्थी इस बातको शानके खिलाफ़ समझता है कि कालेजमें पहला लेक्चर सुननेके पहले वह सोवियट रूसके बारेमें कुछ न जानता हो।

किन्तु, अफसोस कि हम हिन्दुस्तानियोंको रूसके सम्बन्धमें कुछ विश्वसनीय और स्थायी ज्ञानकी बातें जानना बहुत कठिन है। दो-चार भारतीय विद्वानोंको कुछ धीमी खबरें सुनाई पड़ीं कि भयंकर ाजिक और आर्थिक उलट-फेरके बीचमें जब रूसियोंने अपनी एकेडेमीकी जुबलीके अवसरपर संसारके विभिन्न भागोंसे प्रसिद्ध ोंको निमन्त्रित किया है। इस एकेडेमीके स्थायी मन्त्री

फेसर सर्ज द' ओल्डेनबेर्ग ( Prof Serge d' Oldenberg )
। फिर जब प्रोफेसर शेरबैट्स्की ( Prof Tscherbatsky ) ने,
ो रूसमें बौद्ध साहित्यके अध्ययनके निरीक्षक हैं, अपना महान
न्थ 'निर्वाण' प्रकाशित किया, तो भारतीय पुरातत्त्वके प्रेमी दंग रह
ये। सोवियट वैज्ञानिकोंने कलकत्ता-यूनिवर्सिटीके प्रोफेसर रमनको
आमन्त्रित करके भारतीय विज्ञान-संसारके प्रति सम्मान प्रकट किया
ा। रूसमें शान्तिपूर्वक जो निर्माण-कार्य हो रहा है, प्रोफेसर
मनने उसकी बड़ी प्रशंसा की थी। लेकिन रूसके सम्बन्धमें सबसे
ानदार पुस्तक, जो भारतमें प्रकाशित हुई, वह कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ
ठाकुरकी 'रूसकी चिट्ठी' थी। कवीन्द्रने सन् १६३० में रूसकी
यात्रा की थी। उसी समय अमेरिकाके मारिस हिन्दसकी 'Humanity Uprooted' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। अब विचारशील
व्यक्ति जोरोंसे सोचने लगे कि रूस जो कुछ करता है, क्या वह
वास्तवमें अमानुषिक है, अथवा यह कि राष्ट्रीय जीवनके उलट-फेरके
साथ-साथ रूस मानव-जातिकी कुछ वास्तविक समस्याओंको हल कर
रहा है। पंडित जवाहरलाल नेहरूने भी रूसकी यात्रा करके अपने
अनुभव और विचार प्रकाशित किये थे।

पाठकोंको यह ज्ञात हो जायगा कि इस पुस्तकके लेखक एक
सच्चे जिज्ञासु हैं, जो स्वार्थियोंके प्रोपेगेण्डेसे नहीं, वरन प्रत्यक्ष रूपसे
रूसके बारेमें कुछ जाननेके इच्छुक हैं। सन् १६३३ में रूसकी
यात्रा करके इन्होंने लेनिनग्रेड और मास्कोकी प्रमुख संस्थाओंको
देखा है, और अब वे अपना यात्रा-वृत्तान्त अपने देशवासियोंके सामने

उपस्थित कर रहे हैं। उनका सरल और दम्भ-रहित वृत्तान्त बहुतोंको पसन्द आयेगा, क्योंकि उन्होंने आदिसे अन्त तक अपनी स्वतन्त्र राय क़ायम रखी है; वे रूसी प्रोपेगेण्डेके रोबमें नहीं आये। नैतिकता और सामाजिक जीवन, धार्मिक और धर्म-विरोधी भावों, किसानों और औद्योगिक मज़दूरोंके सम्बन्ध आदि बातोंपर उनके व्यक्तिगत विचार बड़े मनोरंजक सिद्ध होंगे। लेखकने रूसकी यात्रा करके साहस दिखलाया है; और साहस सदा साहसीको इनाम दिया करता है—वह है वास्तविकताके साथ सीधा सम्बन्ध। रूस न तो ऐसा स्वर्ग है, जहां हमारी सारी समस्याएँ हल हो जायँगी, जैसा कि बहुतसे अनजान उत्साही लोग कल्पना करते हैं, और न वह भयंकर षड्यन्त्रोंका ऐसा जहन्नुम ही है, जो चिरस्थायी वर्ग-युद्ध द्वारा संसारमें आग लगा देगा, जैसा कि बहुतेरे सोविएट-विरोधी समझते हैं। यह तो केवल हमारी शताब्दीकी एक बड़ी क्रान्ति है, जैसी कि अठारहवीं शताब्दीकी औद्योगिक क्रान्ति या फ्रांसकी राजक्रान्ति थी; मगर यह क्रान्ति ऐसी ज़रूर है, जिसने सिर्फ बीस वर्षके भीतर ही नाशकी राह छोड़कर विकासका रास्ता पकड़ लिया है। यही कारण है कि संयुक्त-राज्य अमेरिकाने रूसी सरकारको मान लिया है, और लीग आफ नेशन्सने निमन्त्रण भेजकर उसे अपना सदस्य बनाया है।

—कालिदास नाग

निकोलाय लेनिन

रूसी अभी तक कम्यूनिस्ट नहीं हुए हैं। वे अभी तक साम्यवादी योजनापर ही चल रहे हैं, परन्तु उनका कथन है कि इस मार्गके द्वारा ही वे अपने लक्ष्य—कम्यूनिज्म—को प्राप्त करेंगे।

आजकल प्रायः प्रत्येक देशमें बुद्धिवर्ग तथा जनसाधारणमें कुछ ऐसे लोग मौजूद हैं, जो खुल्लमखुल्ला या मन-ही-मन कम्यूनिस्ट विचारोंके पोषक हैं। सभ्य संसारके प्रत्येक हिस्सेमें हमें अक्सर मजदूरोंकी हड़तालें, कृषकोंके विद्रोह और कम्यूनिस्टोंके झगड़ोंकी बातें सुनाई पड़ती हैं, लेकिन मुझे शक है कि इनमें भाग लेनेवाले लोगोंको अथवा मार्क्स और लेनिनके सिद्धान्तोंका प्रचार करनेवाले नेताओंको इसका पूरा पता भी है कि इन विचारोंकी जन्मभूमि—रूस—में क्या-क्या व्यावहारिक अड़चनें पड़ती हैं, और व्यावहारिक क्षेत्रमें इन सिद्धान्तोंने कैसे-कैसे रूप धारण किये हैं।

लाल बागियोंके—जिनके भयंकर कारनामोंसे विदेशी अखबारोंके पेज-के-पेज काले रहते हैं—इस रहस्यपूर्ण देशसे आकर्षित होकर मैंने सन् १९३३ में उसकी यात्रा की और अपने परिमित समयमें जो कुछ देख सकना सम्भव था, देखनेकी कोशिश की। लौटनेपर मैंने 'माडर्न रिव्यू' और 'विशाल भारत' आदि पत्रोंमें कुछ लेख लिखे, जिन्हें पाठकोंने बहुत पसन्द किया, इसलिए मैं इस पुस्तकमें अपना यात्रा-वृत्तान्त पाठकोंके सम्मुख रखता हूं।

कालिदास नागका विशेष अनुगृहीत हूं, जिन्होंने कृपा करके प्राक्कथन लिख दिया है।

रूसपर लिखनेवाले विभिन्न प्रामाणिक लेखकोंने रूसी शब्दोंका उच्चारण ( spelling ) अलग-अलग तरहसे किया है, अतः Kolkhoz या Fabkom जैसे शब्दोंकी लिखावटमें पाठकोंको भिन्नता दिखाई पड़ सकती है।

मैंने अलग-अलग अध्यायोंमें अलग-अलग विषयोंका वर्णन न करके, अपनी यात्राके अनुसार जैसे-जैसे जो देखा, वैसे-वैसे ही उसका वर्णन किया है, इसलिए यह सम्भव है कि एक ही विषयका जिक्र दो अध्यायोंमें मिले। इसके लिए मैं पाठकोंसे क्षमा चाहता हूँ।

मई १९३४
पुर—बीरभूम

— नित्यनारायण बनर्जी

# दो शब्द

रूसके सम्बन्धमें प्रायः सभी देशोंमें बड़ी ग़लतफ़हमी फैली हुई है। अंगरेज़ीमें रूसपर हालमें कुछ अच्छी किताबें प्रकाशित हुई हैं; मगर हिन्दीमें इस प्रकारकी पुस्तकोंका सर्वथा अभाव है। श्री नित्यनारायण बनर्जीके इस यात्रा-वृत्तान्तसे हिन्दी-पाठकोंको रूसके सम्बन्धमें बहुत-कुछ जानकारी प्राप्त होगी।

मूल अंगरेज़ी पुस्तक भारतमें कितनी लोकप्रिय सिद्ध हुई, यह बात समाचारपत्रोंकी सम्मतियोंसे प्रकट होगी, जो अन्यत्र प्रकाशित की जाती हैं।

इस हिन्दी-अनुवादमें मूल अंगरेज़ी पुस्तककी अपेक्षा अनेक नये चित्र बढ़ा दिये गये हैं, और परिशिष्टमें अनेक ज्ञातव्य बातें जोड़ दी गई हैं।

'विशाल भारत' कार्यालय<br>विजयादशमी १९९१

—ब्रजमोहन वर्मा

# विषय-सूची

# दो शब्द

रूसके सम्बन्धमें प्रायः सभी देशोंमें बड़ी ग़लतफ़हमी फै
हुई है। अंगरेज़ीमें रूसपर हालमें कुछ अच्छी किताबें
हुई हैं; मगर हिन्दीमें इस प्रकारकी पुस्तकोंका सर्वथा अभाव है
श्री नित्यनारायण बनर्जीके इस यात्रा-वृत्तान्तसे हिन्दी-पाठकोंको
सम्बन्धमें बहुत-कुछ जानकारी प्राप्त होगी।

मूल अंगरेज़ी पुस्तक भारतमें कितनी लोकप्रिय सिद्ध हुई, य
बात समाचारपत्रोंकी सम्मतियोंसे प्रकट होगी, जो अन्यत्र प्रका
की जाती हैं।

इस हिन्दी-अनुवादमें मूल अंगरेज़ी पुस्तककी अपेक्षा
नये चित्र बढ़ा दिये गये हैं, और परिशिष्टमें अनेक ज्ञातव्य बा
जोड़ दी गई हैं।

—व्रजमोहन वर्मा

'विशाल भारत' कार्यालय
विजयादशमी १९९१

# चित्र-सूची

# चित्र-सूची

# 'आजके रूस' पर सम्मतियाँ

मूल अंगरेजी पुस्तकपर भारतके कुछ पत्रोंकी राय :—

'हिन्दोस्तान टाइम्स', दिल्ली—

"पुस्तकमें उपन्यासका मजा आता है, और उसे समाप्त करनेपर मेँ होता है कि लेखकने और क्यों नहीं लिखा।"

'अमृतबाजार पत्रिका' कलकत्ता—

"हम इस पुस्तकका हार्दिक स्वागत करते हैं।......लेखक हर चीज़ खुले दिमागसे देखता है और पक्षपात-रहित होकर लिखता है।"

'डेली सन', बम्बई—

"मास्को और लेनिनग्रेडमें जो साम्यवादी प्रयोग हो रहे हैं, उनपर इस पुस्तकसे बहुत प्रकाश पड़ेगा।"

'फारवर्ड', कलकत्ता—

"लेखकने रूसी जीवन और सरकारके हरएक पहलूको दिखलाया है।"

'लीडर', इलाहाबाद—

"लेखकका वृत्तान्त सरल, बनावटसे रहित और अपने निजी अनुभवों तक ही परिमित है। उनमें सोवियट-प्रणालीके प्रति या उसके विरुद्ध कोई पक्षपात नहीं है।"

'एडवांस', कलकत्ता

"इस वृत्तान्तको पाठक बड़ी उत्सुकता और आग्रहसे पढ़ेंगे......रूसी जीवनपर लेखकके विचार आँखें खोलनेवाले हैं।"

जारका ग्रीष्म-प्रासाद—लेनिनग्रेड

लेनिनग्रेडकी प्रधान यामस्काया रोड
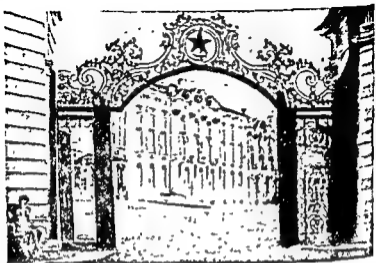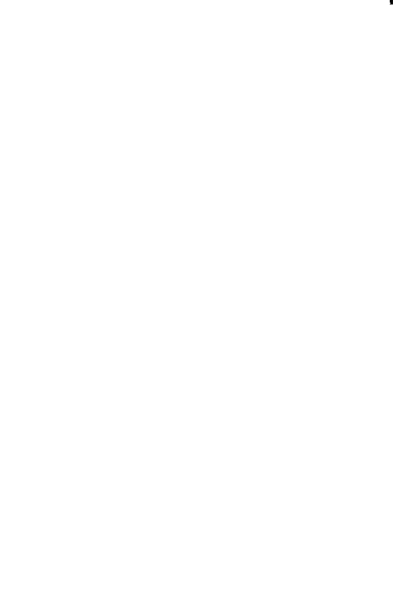
हासे ■ तो मैं कुली ही बुला सका और न कोई टैक्सी ही किराये कर सका। कौन जानता है कि यहाँ कुलीको पैसे किस तरह देने चाहिए? अगर मैं सीधे कुलीके हाथपर उसकी मजदूरी रख दूँ, तो कहीं ऐसा न हो कि यहाँकी साम्यवादी सरकार मुझे मुजरिम करार देकर पकड़ ले; लेकिन इस भयंकर सर्दीका क्या किया जाय? मैं प्लेटफार्मपर इधरसे उधर टहलने लगा। मेरा साथी यात्रा-एजेन्टकी तलाशमें चला गया। इधरसे उधर टहलनेसे बदनमें कुछ-कुछ गर्मी आती थी। किसी नये विदेशीका, जो सरकारी प्रबन्धमें इस देशमें यात्राके लिए आया हो, ऐसा उपेक्षापूर्ण स्वागत! मैं इस देशको उसकी इस बदइन्तजामीके लिए मन-ही-मन कोस रहा था।

एक नवयुवती मेरे सामने आ खड़ी हुई, और बहुत अच्छी अंगरेजीमें बोली—"क्या आप कोपेनहेगनसे आ रहे हैं?"

"जी हाँ,"—मैंने कहा—"क्या आप यात्रा-विभागकी एजेन्ट हैं?"

"हाँ,"—कहकर उसने, देरीके लिए क्षमा माँगे बिना ही, एक कुलीपर मेरा असबाब लदवाया और स्टेशनके बाहर खड़ी हुई मोटरपर जा रखा। उसे देखकर मुझे कुछ तसल्ली हुई। मैंने सोचा, चलो, अब जान बची। हम दोनों मोटरपर जा बैठे। युवतीने कुलीको पैसेकी जगह एक पुर्जा थमा दी। मोटर चलने लगी, और हम दोनों ऐसे बातें करने लगे, मानो बर्षोंके

परिचित हों ! हम दोनोंको बातें करने और हँसते देखकर कों
भी आसानीसे यह यक़ीन न करना कि हमारी जान-पहचान
चन्द मिनटसे ज्यादाकी नहीं है। उसकी बातचीत और
व्यवहार बड़ा सुन्दर था। मैंने पूँजीवादी देशोंके अखबार
आदिको पढ़-पढ़कर अपने मनमें रूसियोंके विषयमें यह धारणा
बना रखी थी कि वे रूखे, कठोर स्वभावके और कभी न हँसनेवाले
जीव होंगे, जिनमें न तो हास्यरसका माद्दा ही होगा और
न कलाओंका ज्ञान; लेकिन थोड़ी-सी बातचीतसे ही उस युवतीने
मेरे मनसे रूसियोंका यह चित्र मिटाकर साफ कर दिया।
मुझे बोध होने लगा कि रूसी भी ठीक वैसे ही आदमी हैं
जैसे मैंने यूरोपके अन्य सभ्य देशोंमें देखे हैं।

मैंने कहा—"मुझे ज्ञान पड़ता है कि स्टेशनपर कुलियोंकी
संख्या काफ़ी नहीं है।"

"हाँ,"—उसने मुसकराकर जवाब दिया—"क्योंकि आज
हर आदमी अपना असबाब खुद ही उठा ले जाता है।
वे अमीरीकी शान बघारनेवाले 'बुर्जुआ' हैं ही नहीं, जिन्हें नन्हे
अटैची-केस ले जानेके लिए भी कुलीकी ज़रूरत हो।"

"फिर भी भारी-भारी बंडलोंको उठानेके लिए कु[illegible]
ज़रूरत होती ही है।"—मैंने कहा।

"हाँ,"—वह बोली—"इसीलिए तो थोड़ेसे कुली [illegible]
रख छोड़े हैं। आप जानते हैं कि हमें कारखानों औ[illegible]
[illegible] चलानेके लिए बहुत मजदूरोंकी ज़रूरत है, इसलि[illegible]

। इस तरहके कामोंके लिए बहुत थोड़े आदमी निकाल
ते हैं।"

हमारी मोटर लेनिनग्रेडकी सड़कोंसे गुजर रही थी। मैंने
। कि सड़कोंपर बहुतसे अधबने मकान खड़े हैं। मैंने इसका
ण पूछा, तो उसने बताया—"बात यह है कि सर्दीके दिनोंमें
ी हवामें इस तरहके काम करना बहुत मुश्किल है, इसलिए
ान बनानेवाले मजदूर कारखानों और खेतोंपर लगा दिये
। हैं। गर्मीमें ये लोग आकर इन अधबने मकानोंको पूरा
ंगे।"

मैंने कुछ ठहरकर कहा—"गर्मीमें आपके खेतोंपर पूरे ज़ोरके
थ काम होता है, उन्हीं दिनोंमें आप लोगोंको मकान
ानेके काममें मजदूरोंकी जरूरत होती है, और यह भी निश्चित
कि गर्मियोंमें आपके कारखाने भी चलते ही होंगे—सोनेके
ए न चले जाते होंगे। ऐसी दशामें अगर इस समय
ज़दूर कारखानोंमें लगा दिये गये हैं और गर्मियोंमें फिर
ा लिये जायेंगे, तो उन दिनोंमें या तो आपके कारखानोंमें
ज़दूरोंकी कमी हो जायगी, जिससे उनके काममें हर्ज होगा,
थवा वास्तवमें आप अपने कारखानोंमें तमाम मजदूरोंको
हीं लगा सकतीं।"

"नहीं, नहीं,"—उसने उत्तेजनासे कहा—"हमें मजदूरोंकी
ल्न ज़रूरत है। हमारे यहाँ काफ़ी मजदूर नहीं हैं।"

"बेशक, इस समय आपके देशको बहुत बड़ा काम करना

है। आप एक नये देशको जन्म दे रहो हैं। आप एक कृषि-प्रधान देशको औद्योगिक देश बना रहो हैं। आपको बेकार पड़ी हुई जमीनोंको खोदना है, खानें निकालना है, नये इंजन लगाना है, सड़कें और इमारतें बनानी हैं, इसलिए आप इतने मजदूरोंको काम दे सकती हैं; लेकिन एक दिन ऐसा आवेगा ही, जब यन्त्रोंके ये तमाम काम पूरे हो जायेंगे। नई तामीरें खत्म हो जायेंगी। उस समय अमेरिकाकी भाँति आपके मालकी उपज भी खपतसे ज्यादा बढ़ जायगी, तब आप क्या करेंगी? तब आप इतने मजदूरोंको, जो आजकल काममें लगे हुए हैं, किस काममें लगायेंगी? उस समय आपके देशमें भी बेकारीकी समस्या वैसी ही गम्भीर हो जायगी, जैसी आजकल पूँजीवादी देशोंमें है।"

उसने अपनी स्वाभाविक मुसकराहटसे जवाब दिया—"जी नहीं, हर्गिज नहीं। यह रूस है, अमेरिका नहीं। आजकल दुनियामें जो बेकारी है, वह पूँजीवादियोंके दोहन (exploitation) की बदौलत है। हमारे यहाँ दोहनकारियोंके लिए जगह ही नहीं है—यहाँ कोई शख्स दूसरेकी मेहनतका फ़ायदा उठानेके लिए उत्सुक नहीं है। जब हम देखेंगे कि हम लोग मज़दूरोंसे सात घंटा प्रतिदिनके हिसाबसे काम लेकर इतनी उपज करने लगे हैं, जो खपतसे ज्यादा है, तो हम लोग मजदूरोंको क[illegible] करनेके बजाय मजदूरीके घंटे घटा देंगे। बस, उपज अप[illegible] आप घट जायगी। बेकारी पैदा ही न होगी। पहले [illegible]

लोग मजदूरोंसे आठ घंटे रोज काम लेते थे। अभी ही हमने उसे घटाकर सात घंटे कर दिया है। जरूरत होनेपर हम उसे घटाकर छै, पाँच या चार घंटे कर देंगे।"

हम लोग एक तंग फाटकसे होकर निकले। उसने बताया कि यह फाटक प्राचीनकालके असली नगरका प्रधान द्वार था। इस फाटकके पास ही जारके समयमें धनी व्यापारी रहा करते थे। यहाँके लोग पूँजीवादी देशोंके मुकाबले मुझे गरीब जान पड़े। केवल इस नये देशको छोड़कर यूरोपके अन्य तमाम देशोंमें लोगोंके साफ-सुथरे कपड़ों, चुस्त-चालाक घोड़ों, चमकती गाड़ियों और सड़कोंपर शीशेकी खिड़कियोंवाली दूकानोंकी कतारें देखनेसे ही वहाँके लोगोंके रहन-सहनके स्टैन्डर्डका पता लग जाता है; मगर रूस इससे भिन्न जान पड़ा—बहुत भिन्न।

ट्राम गाड़ियाँ—दो-दो, तीन-तीन और कभी-कभी चार-चार गाड़ियाँ एक साथ नत्थी की हुई - सड़कोंपर दौड़ रही थीं। बहुतसे मुसाफिर फुट-बोर्डोंपर डंडा पकड़े हुए लटकते दिखाई देते थे। मोटरें भूले-भटके ही दीख पड़ती थीं। सड़कोंपर खूब सजी-बजी एक भी दूकान मुझे नजर न पड़ी। बर्फके जमकर कड़ी पड़ जानेके कारण सड़कें फिसलनी हो रही थीं।

हमारी मोटर भी आखिरकार मंजिले-मकसूद यानी 'अक्टूबर होटल'पर पहुँच गई। होटलकी शानदार महलों-जैसी इमारत है। उसमें नये ढंगका घूमनेवाला काँचका दरवाजा, बढ़िया सीढ़ियाँ और बड़े तथा सजे-सजाये कमरे हैं। मैं होटलके

सेक्रेटरीके पास ले जाया गया। वह एक पढ़ा-लिखा नौजवान था। एक सुशिक्षित रूसी नवयुवकसे बातचीत करनेका मौक़ा छोड़ना मैंने मुनासिब न समझा। मैंने उससे लोगोंकी तनख्वाहके बारेमें पूछा, तो मालूम हुआ कि हर शख्सको उसकी योग्यताके अनुसार गवर्नमेंटसे वेतन मिलता है। इंजीनियरकी तनख्वाह कारखानेके मामूली मज़दूरसे ज़्यादा है। होटलका मैनेजर होटलके खानसामाको बनिस्बत अधिक पाता है। इस प्रकार यह बात तो पूँजीवादी देशों और साम्यवादी रूसमें समान ही है; रूसमें फ़र्क़ इतना है कि यहाँ किसी व्यक्तिको अपना निजी व्यापार करने या अपनी निजी सम्पत्ति रखनेका अधिकार नहीं है। यह बात मेरी समझमें ठीक-ठीक न आई, इसलिए मैंने कहा—"साम्यवादी लोग समाजसे विभिन्न ऊँच-नीच श्रेणियाँ मिटा देनेकी बात कहते हैं; मगर जब आपके यहाँ विभिन्न लोगोंके वेतनोंमें अन्तर मौजूद है, तब आप समाजसे श्रेणियाँ कैसे मिटा सकते हैं? यह हो सकता है कि आपने ज़ारशाहीके ज़मानेकी श्रेणियोंको मिटा डाला हो; पर यह निश्चय है कि आप नई श्रेणियाँ पैदा कर रहे हैं।"

वह बोला—"आपका मतलब यह है कि कुछ लोगोंके पास अन्य लोगोंकी अपेक्षा अधिक पैसा होगा; लेकिन अधिक पैसा पानेसे श्रेणियाँ कैसे पैदा होंगी?"

[illegible] उसी तरह जैसे भूतकालमें होती रही हैं।"—मैंने

[illegible] धार्मिक भेद या जात-पाँत नहीं है, फिर भी

आप 'प्रोलेटेरियट' कहते हैं, जिनके पैवन्द लगे हुए मैले कपड़े हैं, जो भेड़की खालोंका ओवरकोट पहनते हैं, जिनके जूते फटे-चिथे हैं, जिनके चेहरे कुछ सांवले हैं और जिनकी मज़बूत कलाइयोंपर उभरी हुई नसें दीख पड़ती हैं।"

इसपर वह जोशमें आ गया और चिल्लाकर बोला—"हमीं लोग तो 'प्रोलेटेरियट' हैं।"

मैं हँस पड़ा। मैंने कहा—"मगर मैं तो नहीं मानता। मैं तो यही जानता हूं कि आप लोग उच्चश्रेणीके हैं, और आपके यहां भी श्रेणीभेद है।"

अब वह मान गया और बोला—"हां, लेकिन आप जानते हैं कि हम लोग अभी तक साम्यवादी (सोशलिस्ट) हैं, समष्टिवादी (कम्यूनिस्ट) नहीं। जब हमारे यहां समष्टिवाद होगा, तब नक़दीका देन-लेन उठा दिया जायगा, तब किसीको भी नक़द पैसा न मिलेगा। हरएकको काम करना पड़ेगा। हरएक समाजको जो कुछ प्रदान कर सकता होगा, करेगा। बदलेमें उसे जो कुछ ज़रूरत होगी, सरकार देगी; लेकिन उसे न तो ज़रूरतसे कम मिलेगा और न ज़्यादा। साम्यवाद तो समष्टिवादकी एक सीढ़ीमात्र है। यह हमारा साधन है, लक्ष्य नहीं। हमें लोगोंको समझाना है। उनके मस्तिष्कको शिक्षा देकर इस नये विचारको स्वीकृत कराना है, इसलिए हमारी तरक्क़ीकी रफ़्तारका धीमा होना स्वाभाविक ही है। उस ज़मानेमें हम लोगोंमें कोई श्रेणी न होगी।"

"वह ज़माना कब तक आयेगा?"

"पन्द्रह वर्ष, तीस वर्ष, या पचास वर्ष बाद—कब आयेगा, कोई नहीं कह सकता; लेकिन एक दिन आयेगा जरूर।"—यह कहते-कहते उसकी आँखें चमक उठीं और उसके चेहरेपर दृढ़ विश्वासकी रेखाएं अंकित हो गईं।

मैंने पूछा—"क्या आप समझते हैं कि हरएककी आवश्यकताओंको पूरा करना सम्भव है? मान लीजिए, मैं रोज शामको मोटरमें घूमना चाहता हूं। क्या सरकार इसकी इजाजत देगी?"

"बेशक, अगर सरकारके पास इतनी मोटरें होंगी, जिन्हें वह सबको दे सके—अथवा सरकार यह करेगी कि तीन-तीन चार-चार परिवारोंको एक-एक मोटर दे देगी, या बारी-बारीसे एक-एक दिन एक-एक व्यक्तिको मोटर दी जायगी। मतलब यह कि समाजके प्रत्येक सदस्यको प्रत्येक चीज समान रूपसे मिलेगी।"

"अच्छा, जब मैं यह देखूँगा कि मेरी सारी जरूरतें सरकार पूरी कर देती है, तब मैं मेहनत क्यों करने लगा?"—मैंने पूछा।"

'आपसे जबरदस्ती मेहनत कराई जायगी। जब तक आप काम न करेंगे, सरकार आपको कुछ न देगी। आपको भूखों मरना पड़ेगा।"—उसने कहा।

"अगर मुझसे जबरदस्ती काम कराया जायगा,"—मैंने कहा—"तो यह स्वाभाविक है कि मैं अपनी पूरी शक्ति और पूरा मन लगाकर काम न करूँगा। फल यह होगा कि काम खराब होगा।"

"जी हाँ, यह आपकी पूँजीवादी मनोवृत्तिका नतीजा है।
लोग एक नई पौध पैदा कर रहे हैं, जिसे परिश्रमसे प्रेम
ा, जो काहिल आदमीको देशद्रोही और समाजघाती समझेगी।
नई पौधको सिखाया जा रहा है कि समाजके लिए
नत करना ही उसका मजहब है।"

बीचमें ही मेरी पथ-प्रदर्शिकाने टोककर कहा—"मि० 'बैनर्जी'
रूसी इसी प्रकार 'बनर्जी' शब्दका उच्चारण करते थे) अब
आप भोजनालयमें चलिये और जल्दी तैयार हो जाइये, ताकि
ें आपको जितनी जल्दी हो, घूमनेके लिए ले चलूँ"।

सेक्रेटरीने मुझे भोजनके कई टिकट दिये, और कहा—
"इन्हें हिफाजतसे रखिये, अगर एक भी टिकट खो गया, तो
एक वक्तके खानेसे हाथ धोना पड़ेगा।"

मैं पथ-प्रदर्शिकाके साथ एक कमरेमें गया। वहाँ मेरी
ही तरहके कई यात्री और थे। वे उसी दिन लेनिनग्रेडसे
मास्को जा रहे थे। उनमें से तीन—जिनमें एक दुबली
नवयुवती भी थी—अमेरिकासे आये थे, और एक आस्ट्रेलियासे
आया था।

मैंने उनसे पूछा—"आपको रूस कैसा लगा?"

सबने एक साथ, एक सुरमें, जोशमें जवाब दिया—
"आश्चर्यजनक!"

आस्ट्रेलियावाले साहबने अपनी गंजी खोपड़ी मटकाकर और
अपनी लम्बी मरहूम मूँछें छूते हुए कहा—"आप देखते हैं,

मशीनपनमें नमकको भी चुनौती देता था। मैंने पूछा कि
या दूध मिल सकता है? उत्तर मिला—"नहीं।" यहाँ तक कि
चाइ'—रूसी चायको 'चाइ' कहते हैं—भी बिना दूधके ही मिलती
ै। भोजनका कमरा बहुत साफ था। खानसामोंकी पोशाकें
ाफ-सुथरी थीं। बाजेवाले भी मौजूद थे। भोजनालयमें कुछ
ढ़िया कपड़े पहने हुए लोग भी नजर आये। अन्दाजसे मुझे
े विदेशी नहीं जँचे। बादमें मालूम हुआ कि मेरा अन्दाज
ही था। इस प्रकार मैंने यह समझा कि अब भी रूसमें
कुछ लोग ऐसे हैं, जो बढ़िया पोशाक पहनकर, बाजेकी मधुर
ध्वनिके साथ, अच्छे होटलोंमें बैठकर भोजन कर सकते हैं,
जब कि दूसरे लोग बाहर बर्फमें भेड़की पटी खालें पहने
मेहनत करते हैं। उनके फटे जूतोंके मुँह ऐसे खुले होते हैं
मानो वे जो मिले, सो निगलनेके लिए तैयार हैं। फिर भी
ये लोग कहते हैं—"हमने रूससे श्रेणी-भेद उठा दिया।"

यह 'अक्टूबर होटल'* ज़ारके ज़मानेमें भी होटल था। यह
मास्को स्टेशनके सामने, डाकख़ानेके पास है। इसमें भापसे गरमी
पहुँचानेका प्रबन्ध है। हर कमरेमें एक पृथक् गुस्लख़ाना और
ढंगके सब आराम हैं।

मैं पथ-प्रदर्शकका इन्तज़ार कर रहा था, और इस बात

* ज़ारके पहले ... ज़ारके बाद रूसने बोल्शेविकी राज्यक्रान्ती ...
अक्टूबरके महीनेमें हुई थी, इसलिए मौजूदा राज्यक्रान्ती कहते हैं ... अक्टूबर ...
चिरस्मरणीय महीना है।

धोर हो रहा था कि वह देरी करके मेरा वक्त बरबाद कर रही
ह तीसरे पहर, कोई तीन बजे, आई। उसके साथ एक और
ी, जिसे मैंने अमेरिकन पार्टीके साथ देखा था। उसने आ
कहा—"अच्छा, मैं तो अब विदा होती हूं। मेरी यह [illegible]
आपको सब दिखायेंगी।"

रूस-जैसे देशमें एक सुन्दर पथ-प्रदर्शिकाका साथ छूटना, मुझे
ऐसा जान पड़ा, मानो मेरी गाँठसे कुछ गिर गया हो; मगर [illegible]
क्या, मजबूरी थी। उसका काम सिर्फ स्टेशनसे यात्रियों
होटल लाना था। बस, होटल पहुंचाकर ही उसके कर्तव्य
इतिश्री हो जाती है। मेरी नई पथ-प्रदर्शिका भी अंगरेजी
लेती थी। यह यद्यपि पहलेवालीकी तरह सुन्दरी नहीं थी, [illegible]
उसका चेहरा हँसता हुआ था और बुद्धि भी काफी तेज थी।
भी दो-चार मिनटमें ही मुझे मित्र-सा बना लिया, और मुझसे
कि मैं कौन-कौनसी चीजें देखना चाहता हूं। मैंने उत्तर [illegible]
"सभी चीजें—ग्राम और [illegible] आपका समाज, आपके [illegible]
आपकी [illegible], आपकी कलाएं।"

"अच्छा, तो आज चलिये, आपको ओपेरा (नाटक) [illegible]
क्योंकि और कुछ देखनेका अब समय ही नहीं है। [illegible]
[illegible] जायेंगे, इसलिए मैं
बड़ी [illegible] होगा।"

"लेकिन इसके लिए मुझे [illegible] देना है
[illegible] नाटक देखना तो [illegible] नहीं है?"—मैंने पूछा

खेल-तमाशोंको तिलांजलि दे दी थी। मुझे बताया गया कि उस समय नाचघर ज़बरदस्ती बन्द कर दिये गये थे। 'फॉक्स ट्राट' (एक विशेष नाच) तो ख़ास जुर्म बना दिया गया था। भोजनालय विशेषकर विदेशियोंके लिए ही रह गये थे। रूसी उनमें जाते हुए डरते थे कि कहीं G P U (सी० आई० डी० पुलिस) के भयंकर जासूस उनका नाम भी धनी लोगोंमें न शामिल कर लें। मगर अब रूसने सारी परिस्थिति काबूमें कर ली है। लोग अब अपनेको ख़तरेसे बाहर समझने लगे हैं। उन्होंने अपना खून बहाकर जो पाया है, उसे खोनेका डर बहुत कम रह गया है, इसलिए अब धीरे-धीरे खेल-तमाशे और मनोरंजनके अन्यान्य साधन बढ़ रहे हैं। आजकल यद्यपि नाचघरोंकी संख्या बहुत कम है, फिर भी रूसी उनमें मधुमक्खियोंकी तरह इकट्ठे होते हैं। थियेटर भरे रहते हैं, सिनेमामें तिल रखनेको जगह नहीं मिलती। आनंदवादियोंके देश रूसमें अब रात्रिका जीवन आसानीसे देखा जा सकता है। हालमें कागानोविचने, रूसमें जिसका प्रभाव स्टैलिनके बाद दूसरे नम्बरपर समझा जाता है, अपने व्याख्यानमें कहा था कि दूसरे पंचवर्षीय कार्यक्रममें नाचघर और मनोरंजनके अनेक भवन बनाये जायँगे।

मैं तमाशेका एक शब्द भी न समझ सका। चूँकि वह ओपेरा था, इसलिए उसमें गानोंकी संख्या बहुत थी। कुछ गायकोंके गले बड़े सुरीले थे। आरकेस्ट्राका ऐसा अच्छा बाजा मैंने पहले कभी नहीं सुना था। लगभग पचास आदमी विभिन्न

छोड़नेकी इजाजत नहीं दी जाती। सोवियट सरकारका दावा है कि इस एक वर्षके भीतर ही वह उनके रहन-सहन और मनोवृत्तिको एकदम बदल देती है। इस वर्षके भीतर भी वे उत्सवों और सभाओं आदिमें शामिल हो सकती हैं। वे सुधार-गृहमें क़ैद नहीं रखी जातीं, बल्कि उनका वास्तविक सुधार किया जाता है। वर्षकी समाप्तिपर उनके लिए कोई काम ढूंढ दिया जाता है और वे कामपर लगा दी जाती हैं। जिन स्त्रियोंकी स्वाभाविक मनोवृत्ति ही इस कर्मकी ओर होती है, और जो सुधार-गृह छोड़नेके बाद भी इस कार्यको करती हैं, उन्हें पुनः सुधार-गृहमें रखकर सुधारा जाता है। पहले वेश्यावृत्ति जायज़ समझी जाती थी। वेश्याओंको 'पीला टिकट' मिलता था, जिसकी सहायतासे वे—यहूदी वेश्याएँ तक—शहरोंमें रह सकती थीं। पंचवर्षीय कार्यक्रमके आरम्भमें केवल मास्को नगरके पाँच सुधार-गृहोंमें ४,००० वेश्याएँ थीं। अब उनकी संख्या कुल ६७६ ही रह गई है, इसीलिए अब केवल एक ही सुधार-गृह है। क्या दुराचारको उखाड़ फेंकनेका यह पक्का प्रमाण नहीं है? क्या वे देश, जिन्होंने वेश्या-वृत्तिको जायज़ बना रखा है या जो वेश्याओंको लाइसेंस देकर रखते हैं, रूसकी अपेक्षा अधिक सदाचारी होनेका दावा कर सकते हैं?

नाटककी समाप्तिपर नाटकघरके फाटकपर या इधर-उधर मुझे कोई भी स्त्री शिकारकी तलाशमें लोलुप दृष्टि डालती हुई नज़र नहीं पड़ी, जैसी लन्दन और पेरिसमें हमेशा नज़र पड़ती है।

यू० एस० एस ० ( यूनियन आफ सोवियट सोशलिस्ट

रिपब्लिक्स—रूसके सोवियट साम्यवादी प्रजातन्त्रोंका संघ) में वेश्यावृत्ति इतनी शीघ्रतासे घटी जा रही है, इसका कारण केवल वेश्याओंके सुधार-गृह ही नहीं हैं, वरन इसका कारण यह भी है कि सरकारने आर्थिक और राजनैतिक कामोंमें महिला-समाजको ठीक पुरुष-समाजके समान ही अधिकार दे रखे हैं। गरीब श्रेणीके लोगोंका रोटीका सवाल हल कर दिया गया है और विवाहके नियम ढीले कर दिये गये हैं, इसलिए पहले जो स्त्रियां पेटकी ज्वाला या समाजकी कठोरताके कारण इस पतनकारी मार्गका अनुसरण करती थीं, वे अब नहीं करतीं। केवल कामवासनाकी भूखी और उच्छृंखल जीवन बितानेवाली स्त्रियां ही अब इस राहकी ओर जाती हैं, सो उनके लिए सुधार-गृह बने हैं।

मेरी टैक्सी तैयार थी। मैंने उनसे आदरसे प्रस्थान किया और वापस शहर होकर होटल लौट आया।

# दूसरा अध्याय

सुबह, नौ बजे, मेरी आँख खुली। होटलके एक केन्द्रीय स्थानमें भाप बनाकर होटलके तमाम कमरोंमें गर्मी पहुंचाई जाती थी। इसीकी बदौलत मुझे रातमें अच्छी तरह नींद आई। यूरोपमें गर्मी पहुंचानेका यह वैज्ञानिक तरीक़ा बहुत आरामदे है, और 'सेन्ट्रल स्टीम हीटिंग' या 'सेन्ट्रल हीटिंग' ( केन्द्रीय उष्णता प्रचार ) कहलाता है, लेकिन यह तरीक़ा सभी जगह नहीं मिलता। मुझे याद है कि हैम्बर्गमें मैं एक होटलमें टिका था, जहाँ गर्मी पहुंचानेका यह तरीक़ा नहीं था। फल यह हुआ कि सम्पूरी रजाई लपेटे रहनेपर भी ऐसा जान पड़ता था कि सिरके भीतर दिमाग़का गूदा जमकर मलाईकी बर्फ़ बन गया है। समूचा कमरा बर्फ़ख़ाना और अपना शरीर बर्फ़में रखे हुए गोश्तका एक लोथड़ा-सा जान पड़ता था। इंग्लैण्डमें होटलों और विश्रामशालाओंमें भी मुझे यही अनुभव हुआ। एक तो इंग्लैण्डवाले ऐसे लकीरके फ़क़ीर हैं कि वे अपनी पुरानी गैसकी आगको छोड़ना पसन्द नहीं करते; दूसरे उनकी इमारतें इतनी छोटी हैं कि उनमें सेन्ट्रल हीटिंग प्रणाली द्वारा गर्मी पहुंचाना नहीं पुसा सकता; लेकिन इस होटलमें गर्मी पहुंचानेकी व्यवस्था बड़ी सुन्दर थी। गुसलख़ानेमें ठंडे और गर्म पानीके नल मौजूद थे।

नाश्ता करने गया; लेकिन वह बहुत बेस्वाद था। मैं केवल चाय और लाल रोटी ( Brown bread ) का एक टुकड़ा ही खा सका।

"गुड-मार्निंग, नींद तो अच्छी आई ?"—भोजनके कमरेमें नाश्ता करते समय मेरी पथ-प्रदर्शिकाने मुसकराते चेहरेसे पूछा।

"क्या आप अभी तक तैयार नहीं हुए ? आप भी क्या आलसी जीव हैं।"—पुनः उसने कहा।

चायका अन्तिम घूँट पीकर मैंने उत्तर दिया—' जी हाँ, मैं तैयार हूँ। मैं तो आपका इन्तज़ार ही कर रहा था।"

"तो चलिये, हमें आज और ज्यादा समय बरबाद न करना चाहिए।"

"एक मिनटके लिए माफ़ कीजिए। मैं अपने कमरेसे ओवरकोट लेता आऊँ।"—मैंने कहा।

लिफ्टपर चढ़कर मैं ऊपर कमरेमें पहुँचा। बाहर बरामदेमें कुछ बच्चे खेल रहे थे। वे इतने सुन्दर और भले दीख पड़ते थे कि मैं कुछ क्षणके लिए अपनेको उनके समीप ठहरनेसे रोक न सका। उनमें से लगभग सात वर्षकी एक लड़कीने साफ़ शुद्ध अंगरेज़ीमें मुझसे पूछा—"आप अंगरेज़ी बोलते हैं ?"

मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैंने सोचा कि मुझे इन सुन्दर बच्चोंसे बातचीतका कुछ मौक़ा मिल जायगा। इसलिए मैंने फ़ौरन उससे पूछा—"तुम रूसी हो ? तुम इतनी अच्छी अंगरेज़ी कैसे बोलती हो ?"

लड़कीने उत्तर दिया—"नहीं, मैं अमेरिकन हूँ। मेरे पिता यहाँपर इंजीनियर हैं।"

"तुम यहाँ कितने दिनोंसे हो ?"

"दस महीनेसे। लेकिन हम लोग यहाँ ज्यादा नहीं रहेंगे
रूसी बड़े खराब आदमी हैं।"

मुझे यह जाननेकी बड़ी उत्सुकता हुई कि यह छोटी ल
रूसियोंसे इतनी नाराज क्यों है। वह फिर बोली—"मेरे पि
दो वर्षका ठहराव ( कन्ट्रैक्ट ) है। लेकिन ये लोग हम
साथ बड़ा खराब व्यवहार कर रहे हैं। आप जानते हैं कि ये लोग
ऐसे खराब हैं कि जब तक इन्हें हम लोगोंकी जरूरत होती है, ये
लोग हमारी पूजा करते हैं; लेकिन जब ये स्वयं कामको समझ
लगते हैं, तभी ये हम लोगोंको ठुकराने लगते हैं; मगर चूँकि हम
लोगोंके साथ कन्ट्रैक्ट हो चुका है, इसलिए ये सीधे तौरसे तो बेद
कर नहीं सकते, इसीलिए ये हमारे साथ खराब व्यवहार करते हैं।"

यह स्पष्ट रूपसे जाहिर होता था कि अन्य दोनों लड़कियाँ इस
लड़कीकी बातको खाक-पत्थर भी नहीं समझ रही थीं। मैंने उन
पूछा—"तुम अंगरेजी नहीं बोल सकतीं ?" वे हँस पड़ीं,
उन्होंने कुछ कहा, जिसे मैं खाक-पत्थर न समझ सका।

अमेरिकन लड़की बोली—"ये अंगरेजी नहीं बोल सकतीं। ये
रूसी हैं; लेकिन मैं रूसी, जर्मन और फ्रेंच भी बोल सकती हूँ।"

मैंने उसकी परीक्षा लेनेकी गरजसे जर्मन-भाषामें पूछा—'तु
इतनी भाषाएं कैसे सीख लीं ?"

वह धाराप्रवाह जर्मनमें मेशीनकी तरह लगी बोलने—"मैं दो
तक जर्मनीमें रही हूँ। मेरे पिता वहाँ काम करते थे। एक
रही हूँ, मेरे पिता वहाँ भी काम करते थे।"

अब मुझे होश आया कि मेरी पथ-प्रदर्शिका नीचे मुझको इन्तजार करती होगी। लड़कियोंने प्रणामके ढंगपर घुटने झुकाकर सिर हिलाया। अमेरिकन लड़की बोली—"शायदको आप हमारे गानेमें आयेंगे ?" मैंने समय मिलनेपर आनेका वादा किया।

पथ-प्रदर्शिकाने सलाह दी कि यदि मैं टैक्सी किराये कर लूँ, तो शहर घूमनेमें सुविधा होगी, क्योंकि तब दिन-भरमें ज्यादा चीजें देखी जा सकेंगी। मैं इस प्रस्तावपर राजी हो गया। इसलिए हमें यात्रा-विभागके दफ्तरको टैक्सी ठीक करनेके लिए जाना पड़ा। दफ्तर बहुत दूर न था, ठंड भी पिछले दिनकी तरह भयंकर नहीं थी, इसलिए हम लोग पैदल ही चल दिये।

यूरोपके अन्य देशोंमें कलापूर्ण ढगसे सजी हुई जैसी दूकानें दीख पड़ती हैं, मुझे यहाँ वैसी एक भी दूकान नजर न आई। मोटर-बसें भी बहुत थोड़ी थीं; लेकिन रूसियोंको आशा है कि जब उनके निजी मोटरके कारखाने चलने लगेंगे, तब उनके यहाँ मोटर-बसोंकी कमी न रह जायगी। संसारके बाजारमें आजकल रूसकी कोई साख नहीं है, इसलिए उसे हर चीज सोना देकर या अपनी लकड़ी और अन्न बेचकर खरीदनी पड़ती है।

दस-पाँच घोड़ागाड़ियाँ जरूर दिखलाई दीं; लेकिन वे अधिकतर बोझा ढोनेके काममें आती हैं। कुछमें रबरके हवा भरनेवाले पहिये भी थे। ये अब तक व्यक्तियोंकी प्राइवेट सम्पत्ति हैं। अब रूसने प्राइवेट व्यापार करनेकी आज्ञा दे दी है, बशर्ते कि उससे किसीका दोहन या शोषण न हो। क़ानूनके अनुसार,

कुछ विशेष हालतोंको छोड़कर, कोई व्यापारी किसीको अपने यहाँ नौकर या मज़दूर नहीं रख सकता। यहाँ तक कि किसानोंको भी, बीमारी या ऐसी ही कोई बातको छोड़कर, मज़दूरोंसे काम लेनेकी आज्ञा नहीं है। अब क्रान्तिकारियोंने प्राइवेट रोज़गारोंके विषयमें अपने क़ानून बदल दिये हैं, लेकिन उनके उद्देशमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अब क़ानूनके अनुसार रूसमें सब तरहके प्राइवेट काम-काज हो सकते हैं। लेकिन सरकारकी उपेक्षा और भारी-भारी टैक्स और सुपरटैक्सकी मारसे यह प्रायः असम्भव है कि कोई भी प्राइवेट रोज़गार बड़े पैमानेपर चलाया जा सके। कुम्हार अपने बर्तन बनाकर उन्हें खुले बाज़ार बेच सकता है। इसी प्रकार जुलाहे, बढ़ई, लुहार तथा अन्य रोज़गारी और कारीगर अपना-अपना प्राइवेट रोज़गार कर सकते हैं, और अपने मालको सरेआम बेच सकते हैं, बशर्ते कि वे किसीको नौकर या मज़दूर न रखें, अर्थात् वे किसी अन्य व्यक्तिके परिश्रमका दोहन न कर सकें। लेकिन प्राइवेट रोज़गारियोंका वोट देनेका अधिकार छीन लिया जाता है; उन्हें भोजनके टिकट ( राशन कार्ड ), जिनसे वे सस्ते दाम भोजनकी सामग्री खरीद सकें, नहीं मिलते; उनपर भारी-भारी टैक्स लादे जाते हैं और वे सन्देहकी दृष्टिसे देखे जाते हैं। प्राइवेट रोज़गारीका मुक़दमा होनेपर जायदादकी ज़ब्तीकी सज़ा रूसी अदालतोंमें बहुत आम बात है।

स्कूल, क्लब, अस्पताल, फ़ौज आदिमें प्राइवेट रोज़गारियों ... सबसे अन्तमें मौक़ा दिया जाता है, और उन्हें शिक्ष

भोजन, कपड़े और मकान आदिके लिए साधारण मजदूरोंसे बहुत ज्यादा देना पड़ता है। सरकार हर तरफसे प्राइवेट रोजगारीसे जितना अधिक सम्भव हो सकता है, उतना वसूलती है। वह प्राइवेट रोजगारको अपना सबसे बड़ा शत्रु समझती है। उसका मुख्य उद्देश यह है कि प्राइवेट रोजगारको घातक चोट पहुंचाई जाय। लेनिनग्रेडमें कोई भी प्राइवेट दूकान, प्राइवेट मकान, या प्राइवेट टैक्सी नहीं है। कोई भी व्यक्ति किसी अचल सम्पत्तिका मालिक नहीं हो सकता। हर चीजकी मालिक सरकार है। अगर कोई व्यक्ति सरकारका कोपभाजन हो जाय, तो उसे भूखों मरनेकी नौबत आ जायगी, क्योंकि कोई उसे नौकर भी रख ही नहीं सकता, न कोई उसे कोई काम ही दे सकता है। अगर उसके पास कुछ पैसा भी हुआ, तो वह शीघ्र ही खत्म हो जायगा, क्योंकि जो शख्स मजदूर नहीं है, उसे हर चीजकी कीमत बहुत ज्यादा देनी पड़ेगी। इस देशमें अगर कोई बनियेका काम करे, यानी देहातोंसे अथवा कारीगरोंसे चीज खरीदे और उसे शहरोंमें ले जाकर, उसपर अपना मुनाफा रखकर बेचे, तो वह पकड़ा जाता है, और उसे बड़ी सजा दी जाती है।

रास्तेमें फुटपाथपर मैंने एक छोकड़ेको भीख माँगते देखा। मैंने पथ-प्रदर्शिकासे मजाकमें पूछा—"क्या यह सच है कि आपके देशमें न तो बेकार हैं, और न भिखमंगे?"

"जी हाँ, क्या आपको इस कथनमें कुछ सन्देह है?"

मैंने उस छोकड़ेकी तरफ इशारा करके कहा—"यह छोकड़ा ही आपके कथनका खंडन कर रहा है।"

यह सच भी है। मैंने देखा कि ट्रामोंकी ड्राइवर और कंडक्टर भी स्त्रियाँ ही हैं; लेकिन रूसी ट्राम भी कैसी चीज है। ट्रामका एक-एक इंच ठसाठस भरा रहता है। पाँच-सात यात्री बराबर फुटबोर्डपर लोहेका डंडा थामे रहते हैं। ठहरनेके स्थानोंपर वह केवल क्षणभरके लिए ठहरती है, और इस बातकी परवा नहीं करती कि चढ़-उतर लिये या नहीं। ट्राममें चढ़नेके लिए बीचसे किसी प्रकार रास्ता निकालना पड़ता है; लेकिन जरूरी है कि पहले फुटबोर्डपर एक पैर रखने और एक हाथसे थामने-भरकी जगह निकाल ली जाय। फिर धीरे धक्का देकर और धक्का खाकर ट्रामके भीतर पहुंचा जाता है। भीतर बैठनेके लिए सीटोंकी दो कतारें होती हैं, चौड़ाई एक आदमीके बैठने-भरकी होती है। खड़े होने-मतलबसे ट्रामें बनाई गई जान पड़ती हैं। खिड़कियोंके शीशों कठोर बर्फ जमी रहती है, जिसके बीचमें यात्री उँगलियों कुरेद-कुरेदकर एक छोटा छेद बना लेते हैं, ताकि वे अपने गन्तव्य स्थानोंको देख सकें। भीड़के मारे यह मजाल नहीं कि फर्शसे झुककर कोई चीज उठाई जा सके। मुझे इस सम्बन्धमें एक बड़ी मजेदार घटना याद है। एक मुसाफिरने गाड़ीसे उतरनेके पहले कहा—"अरे, मेरे एक दस्ताने ! वह अभी-अभी मेरे पैरसे खिसक गया है।" उसने झुककर देखा, लेकिन गाड़ी इतनी ठसाठस भरी

ई थी कि झुककर उसे कोई देख ही न सकता था। अन्तमें चारे मुसाफ़िरको एक ही जूता पहने हुए उतरना पड़ा! एक ातसे मुझे आश्चर्य हुआ। वह यह थी कि यद्यपि लोग इतने ग़रीब थे, फिर भी कोई कंडक्टरको धोखा देकर टिकटके पैसे ारना नहीं चाहता था; यद्यपि यह करना बहुत आसान था। सके विरुद्ध इस सिरेसे उस सिरे तक मुसाफ़िर अपने सहयात्रियोंको पैसे दे-देकर कंडक्टरसे टिकट मंगवा लेते थे। ान पड़ता था कि हर व्यक्ति टिकटका पैसा देना अपना र्तव्य समझता है, क्योंकि वह जानता है कि आखिर ट्राम भी तो उसीकी सम्पत्ति है। नैतिकताकी डींग हांकनेवाले देश हमके इन ग़रीबोंसे ईमानदारीका सबक़ सीख सकते हैं। यदि किसीको किसी जगह उतरना होता है, तो वह दो-एक ठहराव पहलेसे ही रास्ता निकालने लगता है, तब कहीं अपनी जगहपर उतर पाता है। जाड़ेमें यह भीड़-भाड़ और कशमकश तो ग़नीमत है; लेकिन ईश्वर जाने गर्मीमें क्या दशा होती होगी।

---

ेख-भाल की जाती है। बहुतसे लोग समझते हैं कि रूसमें
गृह-जीवन नष्ट हो गया है, क्योंकि बच्चोंकी देख-भाल सरकार करती
, इसलिए माताओंमें बच्चोंका प्रेम रह ही नहीं जाता, और चूँकि
हाँ विवाहके नियम कड़े हैं ही नहीं, इसलिए पिता बच्चोंकी परवा
यों करने लगा? ये सब इलजाम निश्चय ही निराधार हैं। इन
शिशुशालाओंने माताओंको बच्चोंको देख-भालके उत्तरदायित्वसे मुक्त कर
दिया है, जिससे वे राष्ट्रको अपने परिश्रमका पूरा अंश प्रदान करनेमें
समर्थ हो सकी हैं। इसी तरह रूसने सम्मिलित भोजनालय, धोबीखाने
और मकानोंका प्रबन्ध करके देशकी आधी शक्तिको अपव्यय होनेसे
बचा लिया है। पहले समयमें स्त्रियोंकी सारी शक्ति बच्चोंके पालने,
भोजन बनाने, कपड़े धोने, मकानकी सफ़ाई आदि घरेलू कामोंमें ही
ग जाती थी। अब परिवारकी छोटी इकाईको तोड़कर नगरोंमें
हुसंख्यक लोगोंको एक बृहत परिवारका रूप दिया जा रहा है।
। बृहत परिवार सरकारी मकानोंमें रहते हैं, एक ही बड़ी भोजनशाला
भोजन करते हैं, एक ही बड़े धोबीखानेमें उनके कपड़े साफ़ होते हैं,
एक ही क्लबमें वे एकत्रित होते हैं, और एक ही पुस्तकालयमें बैठकर
पढ़ते हैं। रहा माताका स्नेह, सो उसे एक रूसी क्रान्ति क्या,
ऐसी-ऐसी हजारों क्रान्तियाँ भी बहाकर दूर नहीं कर सकतीं। यह
तो एक स्वभावजनित कोमल प्रवृत्ति है, जो मनुष्यों क्या, पशु-पक्षियों
तकमें विद्यमान है। अतः गृह-जीवन कभी नष्ट नहीं हो सकता;
लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि अन्य देशोंमें जिस प्रकारका गृह-जीवन
प्रचलित है, रूसने उससे उसे एक बिलकुल भिन्न ही रूप दे

दिया है। यह मास्कोकी नई आर्थिक व्यवस्थाके कारण

दिन-भर बच्चा शिशुशालामें रहता है। बीचमें माताको बच्चेको दूध पिलानेके लिए आध घंटेकी छुट्टी दी जाती है। दिन-भरका काम करके माता बच्चेको छातीसे लगाती है, उसपर चुम्बनोंकी वर्षा करती है, और रुईकी गद्दियोंमें लपेटकर उसे घर ले जाती है, जहाँ वह पतिके साथ इस वात्सल्य-प्रेमका उपभोग करती है। मैंने इस शालामें अनेक नवयुवती और प्रौढ़ माताओंको अपने बच्चोंको छातीसे चिपटाते, चूमते और इस स्वर्गीय निधिके स्पर्शका आनन्द लेते देखा है। जहाँ परिवार ऐसी प्रेममयी माताओंके हाथमें हों, वहाँ पारिवारिक जीवन नष्ट कैसे हो सकता है? रूसमें मातृत्वकी धारणा उससे बिलकुल भिन्न है, जो यूरोप-अमेरिकन देशोंमें प्रचलित है। यूरोप-अमेरिकामें विवाह प्रायः भोग-विलासके लिए किया जाता है। वे बच्चे पैदा करना गुनाह समझते हैं। इसके विपरीत बच्चे उत्पन्न न करनेका विचार रखकर विवाह करना रूसी लड़कियाँ व्यभिचार समझती हैं। बच्चे राष्ट्रकी सम्पत्ति हैं, और प्रत्येक स्त्रीका कर्तव्य है कि वह राष्ट्रको स्वस्थ और योग्य बच्चे प्रदान करे। यद्यपि सरकारने गर्भपातको जायज़ कर दिया है, और वह अपने डाक्टरों द्वारा सन्तति-निरोधकी शिक्षा भी देती है; किन्तु यह केवल अवांछित बच्चोंको रोकने और माताके स्वास्थ्यके लिए ही किया गया है। यह तो जानी हुई बात है कि हरएक अच्छी चीज़का भी दुरुपयोग होता है; लेकिन इसका खयाल करना बेकार है। यदि सरकारी अस्पतालको छोड़कर

सी जगह गर्भपात कराया जाय, तो वह गैरकानूनी है, और इस पराधपर तीन वर्षकी कड़ी सज़ा हो सकती है। प्रथम गर्भमें तो र्भपात करानेका बहुत ज़ोरसे विरोध किया जाता है, और तीन ासका गर्भ हो चुकनेपर तो गर्भपात किया ही नहीं जाता। आजकल कानोंको कमी इस गर्भपातके लिए बहुत हद तक उत्तरदायी है, योंकि जब तक उनके पास कम-से-कम एक अलग कमरा न हो, तब क माताएँ बच्चे पैदा करना नहीं चाहतीं। सरकारकी ओरसे र्भपातकी अपेक्षा सन्तति-निरोधका ही अधिक प्रचार किया जाता है, योंकि गर्भपातका स्वास्थ्यपर बुरा असर पड़ता है। गर्भपातके स्पतालों, सिनेमा, रेडियो और अख़बारों द्वारा सन्तति-निरोधके विषयमें सर्वसाधारणको शिक्षा देनेके लिए ज़ोरोंका प्रोपेगैंडा किया जाता है। गर्भपातके आपरेशनके लिए स्त्रियोंको दस दिनकी छुट्टी दी जाती है। मास्कोके गर्भपातके अस्पतालमें २५,००० में केवल एक स्त्रीकी मृत्यु हुई थी। यूरोपके अन्य देशोंमें, जहाँ गर्भपात नाजायज़ है, प्रति १०० पीछे एक स्त्री मर जाती है। बालिग़ होनेके पहले रूसी बच्चोंसे कोई भारी काम नहीं लिया जाता, और वे अपने माता-पितासे जीवन-निर्वाहके व्ययके हक़दार होते हैं; इसलिए माता-पिता कैसे परिवार नहीं रख सकते ? लेकिन किसी रूसी परिवारमें यदि आप लड़कोंमें उस प्रकारकी पितृभक्ति देखना चाहें, जैसी हिन्दू या कैथोलिक परिवारोंमें मिलती है, तो आपको निराश होना पड़ेगा। रूसियोंमें भावुकताके लिए कोई स्थान नहीं है, वे सिरसे पैर तक भौतिकवादी हैं। हज़ारों उदाहरण ऐसे मिलेंगे, जिनमें बेटोंने अपने 'कुलक'

दिया है। यह सरकारकी नई आर्थिक व्यवस्थाके कारण
दिन-भर बच्चा शिशुशालामें रहता है। बीचमें माताको बच्चेको
पिलानेके लिए आध घंटेकी छुट्टी दी जाती है। दिन-भरका काम
करके माता बच्चेको छातीसे लगाती है, उसपर चुम्बनोंकी वर्षा
है, और रुईकी गद्दीमें लपेटकर उसे घर ले जाती है, जहाँ वह
पतिके साथ इस वात्सल्य-प्रेमका उपभोग करती है। मैंने
इस शालामें अनेक नवयुवती और प्रौढ़ माताओंको अपने
छातीसे चिपटाते, चूमते और इस स्वर्गीय निधिके स्वप्न
स्पर्शका आनन्द लेते देखा है। जहाँ परिवार ऐसी प्रेममयी माता
हाथमें हों, वहाँ पारिवारिक जीवन नष्ट कैसे हो सकता है?
रूसमें मातृत्वकी धारणा उससे बिलकुल भिन्न है, जो यूरोप
अमेरिकन देशोंमें प्रचलित है। यूरोप-अमेरिकामें विवाह प्रायः
विलासके लिए किया जाता है। वे बच्चे पैदा करना गुनाह सम
हैं। इसके विपरीत बच्चे उत्पन्न न करनेका विचार रखकर
करना रूसी लड़कियाँ व्यभिचार समझती हैं। बच्चे रा
सम्पत्ति हैं, और प्रत्येक स्त्रीका कर्तव्य है कि वह राष्ट्रको
और योग्य बच्चे प्रदान करे। यद्यपि सरकारने गर्भपातको
जायज़ कर दिया है, और वह अपने डाक्टरों द्वारा सन्तति-निरो
शिक्षा भी देती है; किन्तु यह केवल अवांछित बच्चोंकी रोक
माताके स्वास्थ्यके लिए गया है यह तो जानी हुई
है कि हरएक अच्छी है; लेकिन
ख़याल करना बेकार है को छोड़कर

किसी जगह गर्भपात कराया जाय, तो वह गैरकानूनी है, और इस अपराधपर तीन वर्षकी कड़ी सजा हो सकती है। प्रथम गर्भमें तो गर्भपात करानेका बहुत जोरसे विरोध किया जाता है, और तीन महीनेका गर्भ हो चुकनेपर तो गर्भपात किया ही नहीं जाता। आजकल मकानोंकी कमी इस गर्भपातके लिए बहुत हद तक उत्तरदायी है, क्योंकि जब तक उनके पास कम-से-कम एक अलग कमरा न हो, तब तक मातायें बच्चे पैदा करना नहीं चाहतीं। सरकारकी ओरसे गर्भपातकी अपेक्षा सन्तति-निरोधका ही अधिक प्रचार किया जाता है, क्योंकि गर्भपातका स्वास्थ्यपर बुरा असर पड़ता है। गर्भपातके अस्पतालों, सिनेमा, रेडियो और अखबारों द्वारा सन्तति-निरोधके विषयमें सर्वसाधारणको शिक्षा देनेके लिए जोरोंका प्रोपेगेंडा किया जाता है। गर्भपातके आपरेशनके लिए स्त्रियोंको दस दिनकी छुट्टी दी जाती है। मास्कोके गर्भपातके अस्पतालमें २५,००० में केवल एक स्त्रीकी मृत्यु हुई थी। यूरोपके अन्य देशोंमें, जहाँ गर्भपात नाजायज है, प्रति १०० पीछे एक स्त्री मर जाती है। बालिग होनेके पहले रूसी बच्चोंसे कोई भारी काम नहीं लिया जाता, और वे अपने माता-पितासे जीवन-निर्वाहके व्ययके हकदार होते हैं; इसलिए माता-पिता उन्हें बेदखल नहीं कर सकते। लेकिन किसी रूसी परिवारमें यदि आप बच्चोंमें उस प्रकारकी पितृभक्ति देखना चाहें, जैसी हिन्दू या कैथोलिक परिवारोंमें मिलती है, तो आपको निराश होना पड़ेगा। रूसियोंमें पितृभक्तिके लिए कोई स्थान नहीं है, वे सिरसे पैर तक भौतिकवादी हैं। इसके उदाहरण ऐसे मिलेंगे, जिनमें बच्चोंने अपने पुत्र

(बच्चे) जिनसे सिर्फ इतनी ही आशा रक्खी जाती है कि उन्हें मजदूरों और प्रोलेटेरियटके अधिकार प्राप्त हों।

बच्चोंके पालनेमें हर चीज़ क्रमसे होती है; हर चीज़ दूध-सी सफ़ेद चारों ओर पूर्ण अनुशासन दृष्टि पड़ता है। पहले हम एक कमरे में ले जाये गये, जहाँ नम्बर पड़ी आलमारियाँ रखी थीं। इन आलमारियोंमें बच्चोंके घरके मैले कपड़े रखे हुए थे। हरएक पर नम्बर पड़े रहते हैं। यहींसे बच्चे एक दूसरे कमरेमें ले जाये जाते हैं, जहाँ उनके पाखाने-पेशाबके बर्तन रखे रहते हैं। फिर वे नहलाये जाते हैं और उन्हें साफ़ कपड़े पहनाकर उनके नम्बरके बिस्तरेपर लिटा दिया जाता है। वे एक ही समय, एक ही साथ, खाते-पीते और खेलते हैं। मैंने पूछा—"बच्चे एक साथ ही सोते कैसे हैं! क्या उनमें से कुछ रोकर दूसरोंकी शान्ति भंग नहीं करते?" पथ-प्रदर्शिकाने दुभापिया बनकर नर्सके उत्तरका अर्थ दिया— "नहीं, अगर बचपनसे ही बच्चोंको हरएक बात एक ही साथ और एक ही समयमें करना सिखाया जाय, तो वे उसे करेंगे, और जीवन-भर करते रहेंगे।"

जिस शिशुशालाको देखनेके लिए मैं गया था, उसके तीसरे कमरेमें एक बड़ा पयानो रक्खा था। यहीं उम्रके बच्चे इसी पयानोपर नाचते हैं। यह नाच उनके लिए दैनिक व्यायामका काम देता है। उसमें नाना प्रकारके खिलौने—जैसे, हवाई-जहाज, पालने, घोड़े, पम्प, इंजन, सिपाही आदि रखे थे; लेकिन ये सब वास्तविक थे। कोई भी खिलौना काल्पनिक परी, या देव

। राक्षस आदिका न था। रूसी बच्चे हिन्दोस्तानी बच्चोंकी तरह : तो गुड्डा-गुड़ियाका ब्याह रचाते हैं, और न देवताओंके खिलौनोंकी [पू]जा करते हैं। हर बच्चेको जिस खिलौनेसे वह चाहे, खेलनेका [म]ौका दिया जाता है, और यह बात सावधानीसे देखी जाती है [कि] वह किस चीज़से खेलना अधिक पसन्द करता है। अगर [उ]से चित्रकारी अच्छी लगती है, तो भविष्यमें उसे चित्रकारीके अध्ययनके लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसी प्रकार उसकी [प्र]वृत्ति इंजीनियरिंग, फ़ौज, कृषि, कला आदि जिस चीज़की ओर देखी जाती है, उसे उसीके विकासके लिए सुविधा दी जाती है। [ब]चपनसे ही रूसी बच्चे इस प्रकारकी देखरेखमें रखे जाते हैं, और उनका पूरा रेकार्ड रखा जाता है। वे सब एक ही साँचेमें नहीं ढाले जाते। रूसके कर्ताधर्ता इस बातको जानते हैं कि भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न धातुओंके बने होते हैं इसलिए उन सबको एक ही साँचेमें ढालना महज़ हिमाकृत है।

उम्रके मुताबिक़ बच्चे अलग-अलग श्रेणीमें विभाजित किये जाते हैं, और उनकी देखरेख की जाती है। एक कमरेमें कोई तीस बच्चे सो रहे थे। उनकी परिचारिका नर्स उनका रोज़नामचा हाल लिख रही थी। नर्सको प्रतिदिन बच्चोंका टेम्परेचर, पाखाना, पेशाब, कितने बार बच्चा रोया आदि बातें लिखनी पड़ती हैं। हर बच्चेका अलग-अलग ध्यान रखा जाता है। हर एक बच्चा हाथ ऊपर उठाये – वैज्ञानिक ढंगसे—लेटा हुआ था। अगर किसी बच्चेको कुछ तकलीफ़ या रोग हो जाता है, तो उसे और बच्चोंसे

अलग करके डाक्टरके पास भेज दिया जाता है। उसकी मा उसे घर नहीं ले जा सकती। हाँ, अगर ज़रूरत हो तो वह बच्चेके पास रह सकती है। रूसी मज़दूरोंके बच्चोंकी जैसी सफ़ाईसे और वैज्ञानिक ढंगसे देखरेख की जाती है, उसे देखकर हमारे यहाँ धनी-से-धनी लोग भी ईर्ष्या करेंगे। जब मैं शिशुशाला निरीक्षण समाप्त कर चुका, तो मुझसे सम्मति-बहीपर अपनी सम्मति लिखनेको कहा गया। मैंने प्रसन्नतासे अपनी सम्मति लिख दी। इस क्रेशे ( शिशुशाला ) में ग़रीब मज़दूरोंके लिए पैसा नहीं लगता; लेकिन जिन्हें ज़्यादा तनख्वाह मिलती है, उन्हें अपनी अनुसार फीस देनी पड़ती है। इसी प्रकार गर्भपातके अस्पतालोंमें जो स्त्रियाँ डाक्टरकी सलाहके अनुसार नहीं, वरन केवल अपने व्यक्तिगत कारणोंसे गर्भपात कराती हैं, उन्हें आठसे तेरह रूबल तक फीस देनी पड़ती है।

यात्रा-विभागने एक टैक्सी भेज दी थी। हम लोग उसपर सवार होकर शहर देखनेके लिए चले।

हमारी गाड़ी शीघ्र ही नीवा नदीके तटपर आ पहुँची। नीवाकी नाचती हुई चपल तरंगें सरदीमें जमकर बर्फ़ बन गई थीं। जान पड़ता था कि किसी जादूगरने अपनी जादूकी लकड़ी छुआ कर तरंगोंको पत्थर बना दिया हो। दोनों किनारोंके बीच बर्फ़की लहरियादार सफेद चादर-सा बना हुआ था।

अनेक प्रधान-प्रधान इमारतें मिलीं। नीवाके तटपर पैलेस और दफ़्तर तथा मज़दूर-विभागका कार्यालय

था, जहाँ पहले राजनैतिक क़ैदियोंको बन्द करके उनपर अमानुषिक अत्याचार किये जाते थे। कम्यूनिस्ट दलकी केन्द्रीय कमेटीका प्रथम विश्रामस्थान देखा। इसमें पहले क्षेसिन्स्काया (Kshesinskayas) रहता था। इसी भवनकी एक खिड़कीपर खड़े होकर, विदेशसे लौटनेपर, लेनिनने अपने अनुगामियोंको सबसे पहला व्याख्यान दिया था। 'लाल फौजका तोरण' एक पीले रंगकी विशालकाय इमारत है, जिसे भवन-निर्माणकलाके प्रसिद्ध आचार्य रोसीने १८१९-२५ में बनाया था। यह इमारत लाल फौजका प्रधान केन्द्र थी, और अब भी है। यह ज़ारके सुप्रसिद्ध शरद-प्रासादके—जो अब क्रान्तिका म्यूज़ियम बना डाला गया है—सामने खड़ी है।

इस विशाल अलंकारमयी इमारतकी बग़लमें संसार-प्रसिद्ध 'हरमिटेज़' है। 'हरमिटेज़' ज़ारोंके समयकी प्रसिद्ध चित्रशाला है, जिसे सन् १६१७-१८ में जेनरल टरबोचने बनाया था, और जिसमें अब तक सुप्रसिद्ध फ्रेंच और इटेलियन कलाकारोंकी असली कृतियाँ सुरक्षित हैं। ज़ारके पुत्र-पुत्रियों और रिश्तेदारोंके महल देखने योग्य हैं। इस प्रकारकी एक इमारत, 'मार्बल पैलेस', के सामने एक खूबसूरत पार्क है। इसमें पार्कके तख़्तोंमें कम्यूनिस्टोंका चिह्न हँसिया और हथौड़ा बना है। यह पार्क ज़ारके महलसे अधिक दूर नहीं है। यहाँपर हज़ारों क्रान्तिकारी मारे गये थे, इसीलिए इसका नाम 'क्रान्तिके शहीदोंका पार्क' रखा गया है।

शहरकी प्रधान इमारतों और पार्कोंको देखकर हम लोगोंने शहरके बाहरी अंचलमें, जहाँ उसका मास्को-द्वार है, एक सुन्दर

चढ़ा लाया। ज़ारका यह निर्मित्रा ख़ूबसूरत महल वैसा ही खड़ा है, जैसा ज़ारके समयमें था। इसका सा और फर्नीचर भी ज्यों-का-त्यों रहने दिया गया है, जिससे यह मालूम हो कि बादशाह ग़रीब मज़दूरों और किसानोंके गाढ़ी कमाईपर कैसे ऐश और अलल्ले-तलल्ले उड़ाते थे।

दोपहरके भोजनका समय बीत चुका था, इसलिए पथ-प्रदर्शिकाके साथ होटल लौट आया।

---

# चौथा अध्याय

हम लोग 'जैग' यानी शादी और तलाककी रजिस्ट्रीका दफ्तर देखनेके लिए गये। एक बहुत बड़ी इमारतके दोमंजलेपर एक छोटे कमरेमें यह दफ्तर था। दफ्तरमें दो महिला क्लार्क थीं और चार-पाँच बेंचें पड़ी हुई थीं, जिनपर विवाहके लिए आये हुए वर-वधू बैठते हैं। हम लोग रजिस्ट्रारकी कुर्सीके पास बेंचपर बिठलाये गये। पथ-प्रदर्शिकाने रजिस्ट्रार द्वारा पूछे जानेवाले प्रश्नों और उनके उत्तरोंका व्याख्या करके मुझे समझाया।

जो स्त्री-पुरुष विवाहके इच्छुक होते हैं, उन्हें इस दफ्तरमें सुबह सिर्फ दो रूबल जमा करने पड़ते हैं, जिसके बदलेमें उन्हें एक नम्बरवाला टिकट मिलता है। रजिस्ट्री कराते वक्त रजिस्ट्रार—जो एक महिला थी—बारी-बारीसे इन नम्बरोंको पुकारती है। विवाहार्थी जोड़ा रजिस्ट्रारके सामने उपस्थित होकर अपना पासपोर्ट दिखाता है। नये रूसी नियमोंके अनुसार हर शख्सको स्थानीय पुलिससे अपनी शिनाख्तके लिए यह पासपोर्ट लेना पड़ता है। रजिस्ट्रार अपने रजिस्टरमें वर-वधूके नाम लिख लेती है, और उनसे दस्तखत करा लेती है। बस, इतनेमें ही सारा काम खत्म हो जाता है, और पुरुष-स्त्री शादीशुदा मियाँ-बीबी बन जाते हैं। उनसे केवल यही प्रश्न पूछा जाता है कि उनकी उम्र क्या है, और दोनोंमें से किसीकी यह शादी दूसरी शादी तो नहीं है? मेरे सामने एकके बाद एक करके अनेक

जोड़े आये और विवाह-सूत्रमें बँध-बँधकर चलते बने ; न पादरीकी जरूरत, न क़ाज़ीकी ; न बारात, न किसी क़िस्मकी कोई रस्म। रूसमें विवाह करनेमें कुल जमा पाँच मिनट लगते हैं, और तलाक़ देनेमें उससे भी कम ! पति-पत्नीमें से कोई भी यहाँ आकर सिर्फ़ इतना कह दे— "मैं तलाक़ देना चाहता हूं," बस, तलाक़ हो जाता है। तलाक़में यदि मियाँ-बीबी दोनों मौजूद हों, तो अच्छा है। अगर दोनों से सिर्फ़ एक ही आवे, तो दूसरेको एक कार्ड भेज दिया जाता है, जिसमें लिखा रहता है कि उसकी शादी मंसूख़ हो गई, उसके साथी ■ साथिनने उसे तलाक़ दे दिया। इसलिए वह इस बातको अपने पासपोर्टमें दर्ज करा ले। रजिस्ट्रार यह नहीं पूछती कि तलाक़ क्यों दिया जा रहा है, और न दुराचार साबित करनेके लिए किसी प्रमाणकी ही ज़रूरत होती है। हाँ, रजिस्ट्रार उनसे यह प्रार्थना कर सकती है कि मियाँ-बीबीका झगड़ा आपसमें तय कर लो, तो अच्छा है ; लेकिन क़ानूनके अनुसार उसकी भी ज़रूरत नहीं। मुझे वह किताबें भी दिखाई गईं, जिनमें शादी और तलाक़-सम्बन्धी नोट लिखे जाते हैं ; लेकिन मैं उसे कुछ न समझ सका। हाँ, दोनों किताबोंके पेज रँगे हुए थे। मैंने रजिस्ट्रारसे पूछा—"कितने फी सदी शादियोंमें तलाक़ होता है ?"

उसने उत्तर दिया—"लगभग ६० फी सदी।"

!"—मैंने आश्चर्यसे कहा।

[illegible] कको देखते हुए"—मेरी पथ-प्रदर्शिका बोली—

[illegible]

एक बहुत उत्सुक जोड़ा आया। उसने मुझसे कुछ पूछा, [illegible]समें मैं समझ न सका। मेरी पथ-प्रदर्शिकाने उसे जवाब दिया और मुसकराकर मुझसे कहने लगी—"ये पूछते हैं कि आप दोनोंका क्या नम्बर है?"

मैंने पूछा—"आपने इन्हें क्या जवाब दिया?"

वह बोली—"हम दोनों नम्बरहोल्डर हैं।"

एक बहुत कम उम्रका जोड़ा आकर रजिस्ट्रारके सामने उपस्थित हुआ। मियाँ-बीबी लगभग अठारह वर्षके उम्रके होंगे। रूसमें विवाहकी कम-से-कम उम्र यही है। उसके बाद दूसरा जोड़ा आया, जिसकी उम्र बहुत काफ़ी थी। उनमें मियाँ-बीबी दोनों दूसरी बार शादी कर रहे थे। इसलिए रजिस्ट्रारने उनसे पूछा कि उनके पहले विवाहकी कोई सन्तान है? उन्होंने नकारमें उत्तर दिया। यदि पहले विवाहकी कोई सन्तान होती है, तो माता-पिताको उसके भरण-पोषणका ज़िम्मेदार होना पड़ता है। लेकिन अन्य ईसाई देशोंकी भाँति यह ज़िम्मेदारी केवल बापके सिर ही नहीं डाली जाती। अगर बाप कुछ पैदा न करता हो, तो सन्तानकी ज़िम्मेदारी मा पर रहती है; भरण-पोषणके ख़र्चकी रक़म माता-पिताकी आमदनीपर मुनहसिर करती है। अगर मियाँ-बीबी दोनोंमेंसे कोई एक इस क़ाबिल न हो कि वह स्वयं अपनी जीविका उपार्जन कर सके, तो वह दूसरेकी आमदनीके एक तिहाई हिस्सेका दावा कर सकता है। मामूली तौरसे तलाक़के बाद बच्चे माके साथ रहते हैं। लेकिन अगर मा बच्चोंके साथ दुर्व्यवहार करती हो, या शराबिन अथवा पतित हो,

तो बाप बच्चोंको अपने पास रखनेका दावा कर सकता है। इन तौरसे बच्चों और उनके भरण-पोषणके सम्बन्धमें तलाक देनेके पति-पत्नी आपसमें ही समझौता कर लेते हैं। जब उनमें आपसमें समझौता नहीं होता, तभी वे अदालतकी शरण जाते हैं।

रूसमें क़ानूनन यह ज़रूरी नहीं है कि हरएक शादीकी रजिस्ट्री कराई जाय। यदि स्त्री पुरुष राजी हों, तो वे पति-पत्नीके रूपमें रह सकते हैं। इसपर न तो सरकारको ही आपत्ति होती है, और न समाज ही नाक-भौं चढ़ाता है। लेकिन जब कभी भरण-पोषणके झगड़े पैदा होते हैं, तब इस स्वतन्त्र विवाहमें बड़ी दिक़्क़त पेश आती है। इस दशामें मित्रों और रिश्तेदारोंकी गवाहीपर बच्चेके पिताका निर्णय होता है। यदि वे कहते हैं कि यह व्यक्ति इस स्त्रीके साथ पतिकी तरह रहता था और यह बच्चा शायद इसीका है, तो उसे बच्चेके भरण-पोषणका खर्च देना पड़ता है। रूसमें स्त्री-पुरुष-सम्बन्धी नियमोंमें इतनी अधिक ढिलाई होते हुए भी रूस दुराचारकी भूमि नहीं बना, इसके कारणोंमें शायद ऊपरका कारण भी एक है। जब लोग यह सुनते हैं कि रूसमें कोई भी स्त्री किसी भी पुरुषके साथ बिना रोक-टोकके रह सकती है, तब वे अकसर यही सोचते हैं कि तमाम रूसी स्त्रियां वेश्याओंकी भांति होंगी और तमाम रूसी पुरुष अत्यन्त पतित दुराचारी होंगे। लेकिन वास्तविक अवस्था ,इससे कोसों दूर है। मुझे तो यही अनुभव हुआ कि यूरोपके अन्य देशवालोंकी अपेक्षा रूसी कहीं अधिक सदाचारी और पवित्र हैं। यूरोपमें हमें क्या दीख पड़ता है ? यूरोपके सभी 'सभ्य' देशोंमें स्त्रियां

ऐसे कपड़े पहनती हैं, जिनसे उनकी ओर पुरुषोंका ध्यान आसानीसे खिंच सके। ऊँची सोसाइटीकी दावतों और नाचोंमें स्त्रियोंकी यही चेष्टा रहती है कि वे मर्दोंकी निगाहमें अच्छी जचें ; और मर्द इस कोशिशमें रहते हैं कि वे स्त्रियोंकी कृपादृष्टि प्राप्त कर सकें। रूसमें इस प्रकार स्त्री-पुरुषोंकी एक दूसरेको फँसानेकी चेष्टा—कुचेष्टा—बिलकुल नहीं दीख पड़ती। स्त्री-पुरुष साथ-साथ एक ही डब्बेमें—दिनको भी, रातको भी—यात्रा करते हैं। गर्मियोंमें वे नदियों या समुद्र-तटपर साथ-साथ, बहुत थोड़े कपड़े पहनकर, या बिलकुल दिगम्बर बनकर, नहाते और धूप खाते हैं; जुलूसोंमें साथ-साथ निकलते हैं; मगर उनमें रत्ती-भर भी काम-सम्बन्धी चेष्टा नहीं दिखाई पड़ती। उसमें स्त्री-पुरुषका बहकाना बड़ा जुर्म समझा जाता है। रूसियोंके अनुसार प्रेमके जीवनमें सच्चा और ईमानदार होना जरूरी है। कोई भी व्यक्ति इच्छानुसार जब चाहे अपनी पत्नी या पतिको तलाक़ दे सकता है, लेकिन यदि यह सिद्ध हो जाय कि नित नया विवाह करना और पुराने साथीको तलाक़ देना किसीका स्वभाव ही हो गया है, तो उसे क़ैदकी सज़ा दी जाती है। यूनिवर्सिटियोंमें युवतियाँ और युवक साथ-साथ एक ही छात्रालयमें रहते, उठते-बैठते, खाते-पीते और गाते हैं। अतः उनमें स्त्री-पुरुषका सम्बन्ध स्वभावतः ही अटिल होना चाहिए। वे एक दूसरेके कमरोंमें जा सकते हैं, एक दूसरेके प्रेममें बँध सकते हैं, पति-पत्नीके रूपमें रहकर बच्चे उत्पन्न कर सकते हैं। इसपर न तो अधिकारियोंको आपत्ति होगी और न उनके सहपाठियोंको। यदि कोई छात्र या छात्रा वैवाहिक जीवनमें—

रजिस्ट्री कराकर या बिना रजिस्ट्रीके—रहना चाहती है, तो उस इसकी अनुमति है। यदि उनके सन्तान उत्पन्न हो, तो माता बच्चेको यूनिवर्सिटीकी शिशुशालामें छोड़कर अपना अध्ययन जारी ■ सक है। लेकिन यदि यह मालूम हो जाय कि कोई छात्र या छात्र कभी-कभी किसीके साथ अपनी कामवासनाकी तृप्ति किया करती है आपसमें प्रेमका सम्बन्ध नहीं है, तो उसे सज़ा मिलती है। इस प्रेमको पूर्ण स्वाधीनता है, परन्तु कामासक्ति और फुसलाना दूषि और दंडनीय है। यदि कोई स्त्री या पुरुष अपने साथीको—च यह शादीशुदा पति-पत्नी ही क्यों न हो, किसी दुराचार-सम्ब बीमारीकी छूत लगा दे, तो उसे एक सालकी सख्त क़ैद होती है।

ऊपर कहा जा चुका है कि रजिस्ट्रारका काम एक महिला र रही थी। काम इतना अधिक था कि उससे अकेले न निपटता थ इसलिए उसकी सहायताके लिए एक वृद्धा और आई। मैं और मे युवती पथ-प्रदर्शिका रजिस्ट्रारके पास बैठे थे, और शायद विवाहार्थी जोड़ेकी भाँति दीख पड़ते होंगे। इस नई वृद्धाने दोनोंसे गम्भीरतासे पूछा—"आप लोगोंका नम्बर ?"

इसपर मेरी पथ-प्रदर्शिका ठहाका मारकर हँस पड़ी। उस उल्था करके वृद्धाका प्रश्न मुझे सुनाया। रजिस्ट्रार साहिबा हँसने लगीं। उन्होंने वृद्धाको समझाया कि हम लोग विवाह नहीं, केवल दर्शक हैं। वृद्धाने पथ-प्रदर्शिकासे मज़ाक़ करते कहा—"मैं जानती हूं कि तुम एक दिन किसी-न-किसी भाग्यव विदेशीकी स्थायी पथ-प्रदर्शिका बनोगी !"

एक 'पायनियर' छात्रा

उसके ग्रीष्म-आवासका पुराना बैठकखाना
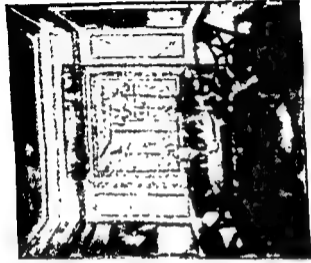
मेरी पथ-प्रदर्शिका बोली—"एक दिन क्यों ? आज ही बना
लए !"

मैंने आपत्ति करते हुए कहा—"लेकिन हम लोगोंके पास
प्रवाला टिकट तो है ही नहीं।"

वृद्धा बोली—"कुछ परवा नहीं। मैं अभी तुम्हें नम्बर देती हूं।
लो, तैयार हो ?"

मैंने कहा—"मैं पीले रंगका हिन्दुस्तानी हूं। आपकी
ाथिन ( पथ-प्रदर्शिका ) मेरे साथ शादीके लिए राज़ी न होंगी।"

मेरी पथ-प्रदर्शिकाने हँसकर कहा—"अगर मैं राज़ी हूं, तो
या आप तैयार हैं ?"

अब तो मैं जालमें फँस गया। रजिस्ट्रारने कहा—"पिछले साल
मैंने एक हिन्दुस्तानी युवकका ब्याह एक रूसी लड़कीसे कराया था।"

मैंने मिमियाते हुए कहा—"लेकिन मैं तो विवाहित हूं।"

मेरी पथ-प्रदर्शिका आश्चर्यमें डूब गई। उसने कहा—"क्या
सचमुच आप विवाहित हैं ?"

हम लोग दफ्तर सड़कपर चले आये; लेकिन मेरी
पथ-प्रदर्शिका मेरे विवाहके बारेमें मुझे आसानीसे छोड़नेवाली न
थी। उसने प्रश्नोंकी झड़ी लगा दी—"आपका विवाह हुए कितने
वर्ष हुए ? आपकी बीबीकी उम्र क्या है ? क्या वह सुन्दरी है ? आप
दोनोंको 'कोर्टशिप' कितने दिन चली थी ?"

जब मैंने यह बताया कि हमारे यहाँ विवाहसे पहले 'कोर्टशिप'
नहीं होती, तो वह आश्चर्यसे हक्का-बक्का-सी रह गई।

समें रहना है, उसका पासपोर्ट सरकारके कब्जेमें रहता है। शायद ह इसलिए किया जाता है कि विदेशियोंपर कड़ा नियन्त्रण रखा जा के। जब यात्री एक शहरसे दूसरे शहरको जाने लगता है, तब सका पासपोर्ट उसे दे दिया जाता है। कम-से-कम मेरे साथ तो ही हुआ। यात्रा-विभागके दफ्तरवालोंका काम बहुत दक्षतापूर्ण नहीं जान पड़ा। मामूली-सी बातमें भी वे लोग बड़ा समय लगा देते थे। जिस समय मैं यात्रा-विभागके दफ्तरसे निकल रहा था, उसी समय एक साँवले-से लम्बे व्यक्तिने मुझे रोका। मुझे यहाँ एक काले सज्जनको—जो स्पष्टरूपसे भारतीय जान पड़ते थे—देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने आगे बढ़कर मुझसे पूछा—"क्या आप भारतीय हैं?"

"जी हाँ, आप भी तो भारतीय हैं?"

"निश्चय, आप इतना भी नहीं पहचान सके? क्या मैं आपका शुभ नाम पूछ सकता हूँ?"

मैंने अपना नाम बतलाया। वे बोले—"मैं चटर्जी हूँ।"

मुझे इस सुदूर लेनिनग्रेडमें इन बंगाली सज्जनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। विशेष विवरण पूछनेपर ज्ञात हुआ कि वे स्वर्गीय अघोरनाथ चटर्जीके पुत्र और श्रीमती सरोजिनी नायडूके भाई श्री हरीन्द्र चटर्जी हैं, और आजकल लेनिनग्रेड-यूनिवर्सिटीमें प्रोफेसर हैं। दुर्भाग्यवश मुझे उसी दिन रातको लेनिनग्रेडसे रवाना होना था, इसलिए मि० चटर्जीसे फिर मिलनेका मौका नहीं मिला, वरना उनसे रूसकी वास्तविक दशाके बारेमें बहुत-सी बातें मालूम होतीं।

"तब फिर आप लोग विवाह कैसे करते हैं ?"

"हमारे माता-पिता हमारे लिए वधू चुन देते हैं..."

"और आप लोग विवाह कर लेते हैं ?"—आश्चर्यसे उसकी

निकल पड़ीं।

कुछ चुप रहकर वह बोली—"इसकी कल्पना भी भ

आप लोग ऐसा करते कैसे हैं ?"

"हमारे यहाँ यही तरीक़ा है।"

"लेकिन यह तरीक़ा तो बहुत ही रद्दी है। इसे आपक

चाहिए। क्यों ?"

हम लोग चायके लिए फिर होटल लौट आये।

फिर आर्ट-गैलरी देखनेके लिए निकले; लेकिन वहाँ

मुझे यात्रा-विभागके दफ़्तरमें मास्कोके लिए रेलका टिकट और

पासपोर्ट, जो यात्रा-विभागवालोंके पास था, लेनेके लिए

सोवियट सरकारका यह अच्छा फन्दा है। जैसे ही कोई

सीमामें क़दम रखता है, वैसे ही वे उसके

कोना-कोना छान मारते हैं।

तलाशी लेकर यात्रीके पास

विदेशी धन होता है,

रूससे लौटकर

वही गहने

सूचीमें

पोस्टरियोंकी तामीर हो रही है ; नये छापर बन रहे हैं ; कारखाने काम हो रहा है ; लाल-लाल जलती भट्टीके सामने कारीगर जुटे हैं ; काला धुआँ निकल रहा है। सामूहिक खेतों, सम्मिलित भोजनालय तथा सरकारके अन्य कार्यों और आदर्शोंके चित्र हैं। इनके अतिरिक्त फलों, फूलों, झोपड़ों और प्राकृतिक दृश्योंकी भी तसवीरें हैं लेकिन आपको किसी काल्पनिक अप्सरा, फरिश्ते, देवी-देवता या स्वर्ग-नरकके चित्र नहीं मिलेंगे। यहाँ तक कि ईसा तकको स्थान नहीं है। आजके रूसी हद दर्जेके वास्तववादी (realistic) हैं। उन्होंने अपने बच्चोंकी किताबोंसे परी आदिकी किस्से-कहानियाँ निकाल डाली हैं। अभी हालमें बच्चोंकी कहानियोंमें उन्होंने काल्पनिक कहानियाँ और आख्यायिकाएँ रखनेकी इजाजत दी मगर इन काल्पनिक कहानियोंमें भी भूतों, चुड़ैलों, या परियोंकी बात नहीं है, बल्कि रूसके नवीन समाज और नवीन आदर्शोंकी आदि सफलताकी बातें हैं।

क्रान्तिके बाद, बहुत थोड़े समयके भीतर ही, रूसी कलाकारोंने रेखांकन और रंग-व्यवस्थामें कई नई शैलियाँ—टेकनिक—ग्रहण कीं और त्याग भी दीं। इससे प्रकट होता है कि रूसी लोग प्रत्येक पुरानी बातसे कितने विद्रोही, कितने बेचैन हो रहे थे। यद्यपि आजकलकी कलाका ढंग पुराने ढंगसे बिलकुल निराला है, फिर भी मानना पड़ेगा कि यह परिवर्तन उन्नतिकी ओर नहीं था।

चित्र, उपन्यास, कहानी, नाटक—सभी चीजें एक ही उद्देशको लेकर ही रची जाती थीं, और वह उद्देश था क्रान्ति

प्रसार करना। उस समय "रैप" (Rapp) सर्वशक्तिमान थी। यह "रैप" श्रमजीवियों—प्रोलेटेरियट—की वह सभा थी, जो कलापर नियन्त्रण रखती थी। उसने कलाकी सारी चीज़ोंको ज़बरदस्ती वस्तुपर्मी (Objective) बना डाला था। प्रत्येक पुस्तक, प्रत्येक चित्र और प्रत्येक गीत कम्यूनिस्ट आदर्शोंके प्रचारके उद्देशसे रचा जाता था। कोई भी ऐसा नाटक नहीं खेला जा सकता था, जिसमें किसी 'बुर्जुआ' (धनी) पात्रके प्रति सहानुभूति दिखलाई गई हो। सारे नाटक एक ही साँचेमें ढाले जाते थे, यानी सभीमें यही दिखाया जाता था कि श्रमजीवी हमेशा बड़े शरीफ़ होते हैं, और कुलक (धनी) और पूँजीवादी हमेशा दुष्ट, बदमाश और समाजके लिए ख़तरनाक होते हैं। नाटकके सारे पात्र या तो एकदम शरीफ़ होते थे, या एकदम बदमाश। इसमें असली मानव-स्वभाव ग़ायब कर दिया जाता था। उपन्यासों, कहानियों, कविताओं तथा कलाके अन्य विभागोंमें भी यही सिद्धान्त लागू था। गीतिकाव्य (Lyric) लिखनेकी आज्ञा नहीं थी; जिप्सियोंके (एक बनजारा जाति) संगीतकी मनाही थी; यहाँ तक कि ईस्टर्न डान्सके चित्र भी वर्जित थे। रूसी कलाके लिए वह बड़ा भयंकर समय था। 'कला कलाके लिए' (Art for arts sake) नहीं थी; बल्कि उद्देशोंकी सहायताके लिए 'रैप' की आज्ञासे उसकी गति निर्देश की जाती थी। अनेक सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखकों और नाटककारोंको या तो लिखना बन्द कर देना पड़ा था, अथवा डिक्टेटरशिपकी सरकारके आगे अपनी मौलिकताको बलिदान कर देना पड़ा था। 'रैप' के इस निष्ठुर शासनकी बदौलत असली कला रूससे

विदा हो गई थी। सौभाग्यसे रूसियोंने कलाकी इस विपत्तिको अरद् महसूस कर लिया। २३ अप्रेल १९३२ को एक विशेष आज्ञा द्वारा "रेप" तोड़ दी गई। रूसी कम्यूनिस्ट पार्टीकी कमेटीने "रेप" को भंग करते हुए यह प्रस्ताव पास किया था:—

अखिल रूसी कम्यूनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय कमेटीका प्रस्ताव
२३ अप्रैल १९३२

केन्द्रीय कमेटीने यह निर्धारित किया है कि निर्माण-कार्यमें बहुत काफी सफलता प्राप्त होनेके परिणाम पिछले कुछ वर्षोंमें कला और साहित्यने भी काफी वृद्धि दिखलाई है परिमाणमें भी और क़िस्ममें भी।

कुछ वर्ष पूर्व साहित्य विदेशी उपादानोंके,—जो 'नेप' के आरम्भिक वर्षोंमें बहुत फल-फूल रहे थे,—प्रभावमें था, और तब तक प्रोलेटेरियन साहित्य अपेक्षाकृत कमज़ोर था। उस समय पार्टीने अपनी शक्तिभर प्रत्येक उपायके द्वारा कला और साहित्यके क्षेत्रोंमें प्रोलेटेरियन संगठन बनाये, ताकि प्रोलेटेरियन लेखकों और कलाकारोंकी स्थिति दृढ़ हो।

अब प्रोलेटेरियन साहित्यके छोटे-बड़े सभी साहित्य-सेवियोंके बढ़ने और अपनी स्थिति दृढ़ करनेका समय मिल चुका है। अब फैक्टरियों, मिलों, कारखानों और सामूहिक खेतियोंसे नये-नये कलाकार और लेखक निकलते आ रहे हैं, इसलिए मौजूदा साहित्यिक और सम्बन्धी संगठनों—जैसे, 'वोप', 'रेप', 'रैम्प' आदि—का दायरा हो गया है, और उनसे कलाके गम्भीर विकासमें अड़चन

और सिनेमाओंमें राजनैतिक शिक्षाके बजाय, कुछ मनोरंजनी
चीजें चाहते थे।

अनेक बड़े-बड़े लेखकों और आलोचकोंने खुल्लमखुल्ला और
जोरदार शब्दोंमें अपना असन्तोष प्रकट किया। १९२८
"समाजकी आज्ञा" ( Social Command ) के विषयपर एक वि
चला था, जिसमें कोगन, पिल्न्याक और ग्रिक सरीखे लेखकोंने भा
लिया था। इसी विवादपर व्याख्यान देते हुए रूसके एक प्र
आलोचक वी० पोलोन्स्की (Viatcheslav Polonsky)ने कहा था

"हमारा कर्तव्य है कि हम लोगोंकी उस धारणाको मिटा दें,
कलाकारको मालकी एक गाँठ समझती है। हमें उन आलोचकों
खत्म कर देना चाहिए, जो केवल बीचके दलाल हैं। हमें
परिस्थितिको उठा देना है, जिसमें कलाकार केवल एक
व्यक्तिमात्र रह जाता है, जिसे किसी विशेष सामाजिक व
आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए अपनी प्रतिभाकी दूकानदारी क
पड़ती हो—चाहे यह दूकानदारी "समाजकी आज्ञा" के सिद्धान्
गर्वशाली झंडेके नीचे ही क्यों न हो। हम चाहते हैं कि कला
समाज ( या वर्ग ) का एक सजीव अंग हो। हम उसे सामूहि
दिमागकी वह शिरा बनाना चाहते हैं, जो सामूहिक मनुष्य
कला-चेष्टा, मनोवृत्ति और भावनामयी तथा आदर्श
आवश्यकताओंको प्रकट करती है।"

"रैप"के तोड़ दिये जानेका परिणाम यह हुआ कि रूसी कला
। विभिन्न दिशाओंमें बह निकली। उसने अपना दलित म

कर लिया है। इसमें सन्देह नहीं कि अब भी कलापर कड़ी
शिप ( निगरानी ) है ; परन्तु सेंसर केवल तभी आपत्ति करता
र कोई बात सरकारके विरुद्ध होती है। समाचारपत्र सरकारी
और सरकारी प्रोग्रामोंकी आलोचना कर सकते हैं ; लेकिन
निर्माणात्मक दिशामें ( *on constructive lines* )—इसके
ीत नहीं। मैंने खुद 'मास्को डेली न्यूज़' में छपी हुई ऐसी
इयाँ पढ़ी हैं, जिनमें सरकारी कार्यक्रमकी बुरी तरह आलोचना
गई थी। इसके सिवा 'विपरीत योजना' (Counter planning)
होती है, अर्थात् मास्कोका सरकारी योजना-कमीशन
tate Planning Commission ) देशके लिए जो कार्यक्रम
ता है, लोग उसकी आलोचना करके उनमें संशोधन-परिवर्तन
ाते हैं। मास्कोसे अंगरेज़ीमें प्रकाशित होनेवाले द्विमासिक पत्र
ोक्स' ( Voks ) में मैंने सोवियटके कार्योंकी प्रशंसा और
ालोचना—दोनों देखी हैं। इस पत्रके एक अंकको विषय-सूचीसे—
ो नीचे दी जाती है—पाठकोंको कुछ आभास मिल सकेगा कि इसमें
से-कैसे विषयोंपर लेख रहते हैं :—

| | | |
|---|---|---|
| सोवियटोंके सचमें होकर | ... ... | एम० गोर्की |
| सुदूर-पूर्वके प्रान्तोंका आर्थिक और सांस्कृतिक विकास— | | ए० चर्नेनको |
| सोवियटकी तेलकी खानोंमें मजदूरोंकी अवस्था और व्यक्तियोंके चुनावकी समस्या | ... | के० मार्कोविच |
| एक सोवियट कारखानेमें | ... ... | एन० डिनोवस्की |

अब लेखक वास्तविक जीवनपर लिख सकते हैं। अब वे बन्धनसे

मुक्त हैं। वास्तवमें अब अधिकारीगण उस प्रस्तावपर अमल कर रहे हैं, जो रूसी कम्यूनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय कमेटीने सन् १९२५ में पास किया था। वह प्रस्ताव यह था—

"परिवर्तन-युगके आदर्शवादी आचारोंके सम्बन्धमें पार्टीको शान्तिसे काम लेना चाहिए।......हमारी पुरानी पैतृक संस्कृतिके प्रति तथा साहित्यके विशेषज्ञोंके प्रति यदि विचारशून्य और अपमानजनक व्यवहार हो, तो पार्टीको उसका बड़े ज़ोरोंसे विरोध करना चाहिए। इसी प्रकार श्रमजीवी-साहित्यकी निरी कृत्रिमता-भरी प्रवृत्तिको भी रोकना चाहिए।

"......कम्यूनिस्ट आलोचनामें साहित्यिक हुकूमतकी बू न होनी चाहिए।

"यह पार्टी साहित्यके उत्पादनपर किसी एक विशेष साहित्यिक दल या संस्थाका क़ानूनन एकाधिपत्य स्वीकार नहीं करती।...... पार्टी किसी दल-विशेषको यह अधिकार दे भी नहीं सकती—चाहे वह दल स्वयं प्रोलेटेरिएटका ही क्यों न हो।......पुराने महान् कलाकारोंकी कला-रचनाओंपर विचार करके उन्हींसे मिलता-जुलता ढंग—जिसे लाखों आदमी समझ सकें—निकालना चाहिए।"

अब फिर रूसमें नये चित्र प्रकट होने लगे हैं। रूसकी नवीनतम तसवीरें सुप्रसिद्ध इटेलियन और फ्रेंच तसवीरोंसे प्रतियोगिता करनेमें तेज़ीसे बढ़ती जान पड़ती हैं। प्रेम और रोमांसके उपन्यास, नाटक अब फिर लिखे जा सकते हैं। हेरॉल्ड लायडके फ़िल्म दिखाये जाने लगे हैं। रूसी अब अपना पागलपन समझ गये हैं।

न्हें अब यह अनुभव हो गया कि डिक्टेटरशिप कारखाने और खेत तैयार कर सकती है ; लेकिन कला नहीं तैयार कर सकती। फिर भी अब तक रूसी साहित्यमें बराबर क्रान्तिकी बू आती है। वह अभी तक नहीं छूट सकी है। छूटे भी कैसे ? आखिर उसके उत्पादक तो क्रान्तिकारी ही हैं। एक उपदलके कम्यूनिस्ट आलोचक जार्ज्यी गारवेचेवने सन् १६२६ तकको साहित्यिक रचनाओंका एक चिट्ठा ( बैलेंस-शीट ) तैयार किया था। उससे पाठकोंको यह स्पष्ट रूपसे समझमें आ जायगा कि क्रान्तिके बाद लेखकोंके कौन-कौनसे विभिन्न दल या श्रेणियाँ विकसित हुईं।

चिट्ठा

"सन् १६२६ के रूसी साहित्यका चित्र सन् १६२३ के चित्रसे, जब हमारे साहित्यमें पिलन्याक और इरेनबर्गका बोलबाला था, बिलकुल भिन्न है। विभिन्न लेखकोंकी रचनाओंमें सुस्पष्ट श्रेणी-भेद दिखाकर उन्हें विभिन्न दलोंमें विभाजित करना बड़ा कठिन काम है। फिर भी हम साहसके साथ अपने समकालीन साहित्यको श्रेणी दलोंमें बाँट सकते हैं।

"मान लीजिए कि हमारा समूचा साहित्य एक सरल रेखा है। इस रेखाके बायें सिरेपर ( चरम उग्रपंथी ) प्रोलेटेरियन साहित्य है। इस साहित्यके आदर्श और कलामें शीघ्रतासे प्रौढ़ता आती दीख पड़ती है। साथ ही यह मात्रामें भी बढ़ रहा है। यह अपने समकालीन समाजके एकदम यथार्थ विषयोंको ही लेता है, और एक स्वस्थ, सूक्ष्मदर्शी और क्रान्ति-भावनासे परिपूर्ण वास्तववादके मार्गपर चल

रहा है। इसका भविष्य सुनिश्चित है। अभीसे पाठक-जनताके उन लोगोंका, जो सामाजिक मामलोंमें अधिक क्रियाशील हैं, ध्यान अधिकाधिक इसकी ओर जा रहा है।

"इस प्रोलेटेरिएट साहित्यके बाद जिनका नम्बर आता है, उन्हें F Fellow Traveller Writers ( सहयात्री लेखक ) कह सकते हैं। ये लेखक किसानों और क्रान्तिकारी सुधीसमाज (intelligentsia) की मनोवृत्तिको प्रतिबिम्बित करते हैं। कलाकी दृष्टिसे यही दल अब तक सर्वोत्तम रचनाएँ उत्पन्न करता है। इस दलके लेखकोंके विषय उतने यथार्थ नहीं होते, जितने प्रोलेटेरियन साहित्यके। यह अधिक मात्रामें बीती हुई ( अभी हालकी बीती हुई ) बातोंका भक्त है। समस्याओंपर इसके निर्णय उतने साहसपूर्ण नहीं होते, जितने प्रोलेटेरियन साहित्यके; लेकिन ये लेखक धीरे-धीरे प्रोलेटेरिएट और उसके साहित्यके आदर्शोंका नेतृत्व स्वीकार कर रहे हैं, साथ ही बदलेमें वे अपनी उच्चकोटिकी कलाका प्रभाव प्रोलेटेरियन लेखकोंपर डाल रहे हैं।

"इसके बाद लेखकोंका वह दल है, जो सामाजिक व्यवस्थाके सम्बन्धमें निष्पक्ष रहनेकी कोशिश करता है, अथवा जिसने उन समस्याओंके सम्बन्धमें, जिन्हें क्रान्तिने उत्पन्न कर दिया है, अभी तक कुछ निर्णय ही नहीं कर पाया है। इस दलमें या तो वे बुद्धिवर्गीय लेखक हैं, जो अभी तक पुरानी रूढ़ियोंसे मुक्त नहीं हो सके हैं, वे हैं, जो उन किसानोंसे सम्बन्ध रखते हैं, जो अभी तक पड़े हैं। इस दलमें भी कुछ अच्छे कलाकार हैं।

प्रोलेटेरियन साहित्यका यह कर्तव्य है कि वह इस दलको अपने पक्षमें
ले आवे। यह दल हमारी साहित्य-रेखाके ठीक बीचोंबीचमें है।
यहींसे दाहनी दिशा (उन्नति-विरोधी, रूढ़िपन्थी और पश्चातगा-ी)
आरम्भ होती है। इसके भी दो भाग हैं। पहले भागमें या तो वे
लेखक हैं, जिनके आदर्श नवीन बूर्झ्वा ढंगके हैं,—जैसे इा इरेनबर्ग,
एलेक्सी टाल्सटाय, बल्गाकोव,—अथवा उन्नति-विरोधी भद्र-समाजके
लेखक हैं,—जैसे स्लोनिमस्की, ज़ोरोनचेनको,—अथवा वे बुद्धिवर्गीय
, जो पश्चातगामी आदर्शोंके जालमें उलझ गये हैं—जैसे पिल्न्याक।
ह दल 'बाज़ार' की माँगके अनुसार ऊपर चढ़ता अथवा नीचे गिरता
है। कुलक और 'नेप' ( NEP )की सहायतासे यह फिर ज़िन्दा हो
सकता है। उस समय इस दलमें बाईं और दाहनी, दोनों दिशाओंके
कुछ लेखक आकर मिल जायँगे। हमारी साहित्य-रेखाके अन्तिम
दाहने सिरेपर बहुत संकुचित सोवियट लेखक तथा पुराने धनी
भद्र-समाजके, ज़ारके पक्षवाले, लेखक हैं—जैसे एल्गानोव। यह
पश्चातगामी दल अब लिखता भी कम है, उसकी कृतियाँ भी
धिकाधिक निर्बल हो रही हैं, और अब उसका सारा वास्तविक
भाव जाता रहा है, यद्यपि वह अपनी संस्था 'लेखक-संघ' के द्वारा
ब तक गैर-प्रोलेटेरियन लेखकोंपर शक्तिशाली प्रभाव जमाये है।

"रूसके साहित्यिक संघर्षकी सीमाएँ स्पष्टरूपसे दीख पड़ती हैं।
स संघर्षमें एक ओर तो प्रोलेटेरियन लेखक हैं, जिनके पीछे-पीछे
ो सहयात्री लेखक आते हैं, और दूसरी ओर बूर्झ्वा, क्षुद्र
बूर्झ्वा और पश्चातगामी लेखक हैं। यह लड़ाई है पाठकोंके लिए,

समाजमें सम्मान-प्राप्तिके लिए और अनिश्चित लेखकोंको अपनी ओर खींचनेके लिए।

"इस प्रकार प्रजातन्त्रवादी किसान-मज़दूर-बुद्धिवर्गीय दल ऐसे संघर्षके प्रभावमें है, जिसमें प्रोलेटेरिएट दल बूर्जुआ, बूर्जुआ सुधारवर्ग और कुलकोंसे लड़ रहा है। यह प्रत्यक्ष दीख पड़ता है कि किसान-मज़दूर-दल जीत रहा है, और वह अपने दलके भीतर शक्तिशाली और दृढ़ बन रहा है।"

मैं यहाँ 'वोक्स' नामक अंगरेज़ी पत्रसे एक प्रसिद्ध रूसी कवि की कविता उद्धृत करता हूँ। इस कवितासे पाठकोंको आजके रूसी साहित्यकी भावनाका आभास मिलेगा :—

## COMRADES IT SHALL NOT BE ALLOWED

In voices shrill
from anguish,
In voices coarse and gruff,
Let all the world
today
Assert its will
And shout in unison :
"Enough" ! ! !
We decline !
we refuse !
It shall not be allowed !
Nations
have no enemy nations—
It's only a myth
invented by war friends
To fool the crowd.
Workers,
Fight no nations but classes.
Toilers
All over the world,
Arise in your masses !

Proletarian forces
in every country
Take arms but attack
All grasping, rapacious,
Imperialist pack,

Peace is Utopia,
an empty phrase
That snares and fools
So long as greedy
Capital rules
To-day. . . .
To-morrow . . .

We'll fight it out,
So let us brothers,
Proclaim and shout
Down with war
Of nation against nation !
We'll wage our class war—
A war against war,
A war for peace
and liberation !

—VALDIMIR MAYAKOVSKY
*Translated by Michael L. Korr.*

कविवर श्यामसुन्दर खत्रीने इस कविताका हिन्दी-अनुवाद इस प्रकार किया है :—

भ्रातृवृन्द ! अब यह नहीं होने देंगे हम

व्यथापूर्ण मर्मभेदी
तारस्वरमें पुकार,
कर्कश कठोर घोर
तीव्र नादसे हुँकार,
स्वेच्छा-प्रतिपादनको
विश्व आज हो सचेष्ट,
एकस्वर साथ चीखे—
"बस, हो चुका यथेष्ट" !!!

हमको स्वीकार नहीं !
हमें अंगीकार नहीं !
होने नहीं देंगे हम !
राष्ट्र-राष्ट्र की है कोई
आपसमें रार नहीं !
राष्ट्र-शत्रुता है भ्रम,
युद्धके हितैषियोंने जिसे किया आविष्कार
करनेको जनतामें घोर भ्रान्तिका प्रचार।
श्रमीवर्ग ! युद्ध करो
राष्ट्रोंसे नहीं, वरंच श्रेणियोंके यूथसे।
विश्वके श्रमिक-वृन्द !
कड़कके उठो निज सामूहिक रूपसे !
देश-देश व्यापी दीन-हीन श्रमिकोंकी महो
सम्मिलित शक्ति-पुञ्ज ! आओ, उठो, शस्त्र गहो ;
किन्तु ध्यान रहे, तव आक्रमणके हों लक्ष
लोलुप साम्राज्यवादी हिंस्र जन्तुदल-पक्ष।

'शान्ति कवि-कल्पना है'
—बात निरी जल्पना है,
रहेगी बिछाती यह पृथिवीमें चारों ओर
मूढ़ताका नाग-पाश—
जब तक लोभमति पूँजी-पतियोंके हाथ
राज-काजकी है रास।

आज नहीं, कल सही
होंगे वे निश्चय ही,
अतः बन्धुओं! जागो,
घोषित करें दिगन्त
शत्रु-शुल्क हो अन्त।
होगा झगड़ा अब
हाँ, विशुद्ध थोरी-युद्ध,
युद्ध, युद्धके विरुद्ध,
युद्ध, शान्ति - व्याप्ति - हेतु
युद्ध, मुक्ति - प्राप्ति - हेतु।

पहले कलाकार बहुत नीची नजरसे देखे जाते थे, क्योंकि लोग उन्हें पुराने पूँजीवादी बुद्धिवर्गीयोंका अवशेष समझते थे। तब यह समझा जाता था कि शासनमें उनका कोई अधिकार ही नहीं; लेकिन अब स्थिति भिन्न है—एकदम भिन्न। आजकल इंजीनियरों और टेक्निशियनोंकी भाँति कलाकारोंके साथ भी बहुत रियायतें की जाती हैं। सरकार उन्हें संरक्षण प्रदान करती है। जब मैं मास्कोसे लेनिनग्राड जा रहा था, तब इत्तिफाकसे ट्रेनमें एक लेखकसे भेंट हो गई, जो छोटी-मोटी [illegible] लिख लेता था। उसने मुझे बताया कि जब कोई लेखक कोई पुस्तक लिखकर तैयार करता है, तो वह उसे सरकारके पास भेजता है। यदि सरकार उसे प्रकाशित करने योग्य समझती है, तो लेखकको उसपर पारिश्रमिक मिलता है। इस पारिश्रमिकके रेट चालीस हजार शब्दोंकी एक हजारसे ऊपर होते हैं।

इनसे व्यौपार नहीं !
इनसे संगोदार नहीं !
होने नहीं देंगे हम !

राष्ट्र-राष्ट्र की है कोई
आपसमें रार नहीं।
राष्ट्र-शत्रुता है भ्रम,
युद्धके द्विपेपियोंने जिसे किया आविष्कार
करनेको जनतामें घोर भ्रान्तिका प्रचार।

श्रमीवर्ग ! युद्ध करो
राष्ट्रोंसे नहीं, वरंच श्रेणियोंके यूसे।
विश्वके श्रमिक-वृन्द !
कड़कके उठो निज सामूहिक रूपसे !
देश-देश व्यापी दीन-हीन श्रमिकोंकी महो
सम्मिलित शक्ति-पुञ्ज ! आओ, उठो, शस्त्र गहो ;
किन्तु ध्यान रहे, तव आक्रमणके हों लक्ष
लोलुप साम्राज्यवादी हिंस्र जन्तुदल-पक्ष।

'शान्ति कवि-कल्पना है'
—बात निरी जल्पना है,
रहेगी बिछाती यह पृथिवीमें चारों ओर
मृत्युका नाग-पाश—
जब तक लोभमति पूँजी-पतियोंके हाथ
राज-काजकी है रास।

नाटककारोंके जो नाटक खेले जाते हैं, उनपर, प्रत्येक लेख
'रायल्टी' मिलती है। शायद अब रूसमें लेखक सबसे सु
सरकार उनपर कृपा रखती है; जनता उनका सम्मान करती
अच्छी तरह रहते हैं; अच्छा खाते हैं; और उन्हें अपनी पु
बिक्रीकी चिन्ता नहीं करनी पड़ती। नई शिक्षा और नई
कारण रूसी लोग साहित्यके पीछे इतने दीवाने हो गए
पुस्तकोंका उत्पादन उनकी मांगको पूरा नहीं कर पाता। मुझे
गया कि इस समय मेक्सिम गोर्की रूसका सबसे धनी लेखक

---

# छठा अध्याय

अक्टूबर होटलके सामने ही मास्को स्टेशन है, जहांसे बोल्शेविकोंकी राजधानी मास्कोको गाड़ी जाती है। मैं पथ-प्रदर्शिकाके साथ पैदल ही स्टेशनपर पहुंचा। पथ-प्रदर्शिकाने मेरा 'रिजर्व्ड बर्थ' ढूँढ़ निकाला। रूसी रेलगाड़ियोंके तीसरे दर्जेमें भी—जिसे वहांवाले 'कड़ा दर्जा' कहते हैं—किरायेसे थोड़ा-सा अधिक देनेसे सोनेके लिए 'बर्थ' मिल जाते हैं। रिजर्व करानेकी फीसके अतिरिक्त कुछ पैसे और देनेसे रेलके अधिकारियोंसे गद्दा, तकिये और साफ चादरें भी मिल जाती हैं। शायद स्वीडनको छोड़कर समूचे यूरोपमें तीसरे दर्जेके मुसाफिरोंको यह सुविधा और कहीं नहीं मिलती। प्रत्येक छोटे कम्पार्टमेन्टमें चार-चार बर्थ होते हैं; परन्तु इनमें सभी रिजर्व नहीं थे; बल्कि दो-एकमें तो एक ही बर्थपर कई-कई मुसाफिर बैठे थे।

पथ-प्रदर्शिकाने मुझे आरामसे बिठाकर विदा ली। हाथ मिलाते हुए उसने कहा—"मैं यह कभी नहीं भूल सकती कि आपके देशमें माता-पिता ही वर-कन्याका चुनाव करें और…"

"हम लोग विवाह करें,"—मैंने उसका वाक्य पूरा करते हुए कहा—"लेकिन इस बातसे हम लोग रत्ती-भर भी दुःखी नहीं हैं। क्या आप सब अपनी विवाह-पद्धतिसे सन्तुष्ट हैं? आप लोग तो स्वयं अपना जीवन-संगी चुनती हैं, तो फिर आपके यहां इतने ज्यादा तलाक क्यों होते हैं?"

"यह तो जीवन है। जीवन सदा परिवर्तनशील है—परिवर्तन ही तो जीवनका चिह्न है।"—उसने कहा।

"लेकिन—" मुझे रुक जाना पड़ा, क्योंकि गार्डने सीटी बजा दी। मैंने हाथ हिलाते हुए कहा—"यदि मेरी किसी बातसे आपको कष्ट पहुंचा हो, तो उसे भूल जाइये और क्षमा कीजियेगा।"

"मैं सदा तुम्हें स्मरण रखूंगी।"

गाड़ी चल पड़ी। रूसी गाड़ियोंकी खिड़कियोंमें दो-दो कांच लगे रहते हैं, और डब्बोंमें भापसे गर्मी पहुंचानेका इन्तज़ाम होता है। डब्बा किसान और मज़दूरोंसे भरा हुआ था। उनके कपड़े कितने गन्दे थे! वे फर्शपर थूकते और अपने भारी बूटोंसे उसे रगड़ते थे। उनके कपड़े कह रहे थे कि उन्होंने अपने जीवनमें कभी धोबीकी शक्ल नहीं देखी है। पुरुष और स्त्रियां साथ-साथ बैठी थीं। वे एक दूसरेपर कोई विशेष ध्यान नहीं दे रहे थे। वे 'कामरेड' हैं। सरकारी निगाहमें स्त्री-पुरुष दोनोंको समान अधिकार है। उनका दावा है कि इस प्रकार खूब स्वच्छन्दतासे मिल-जुलकर वे लोगोंके दिमागसे स्त्री-पुरुषके भावको (Sex mentality) निकाल बाहर कर देना चाहते हैं; लेकिन मुझे उनकी इस बातमें सन्देह है। रक्त-मांसके बने हुए मनुष्यकी इन्द्रियपरायण प्रवृत्तियोंको पुरुष-स्त्रीका यह अबाध मिश्रण कैसे रोक सकता है? मेरी समझमें तो इसका प्रभाव उल्टा पड़ेगा। हां, इस मिश्रणसे यह ज़रूर होगा कि [illegible] पुरुषोंमें एक दूसरेको देखने और जाननेके लिए जो ज़रूरतसे [illegible] कौतूहल होता है, वह दूर हो जायगा, परन्तु स्त्री-पुरुषमें जो

# सातवाँ अध्याय

मास्कोमें मेरा अच्छा स्वागत हुआ। रेल्से उतरते ही एक खूबसूरत युवतीने आकर पूछा—"क्या आप ही मि० वेनर्ड हैं ?" मैंने सिर हिलाकर हुंकारी भरी। वह मुझे मोटरमें बिठलाकर होटल ले गई।

यह होटल 'मास्को' अथवा 'मास्कावा' नदीके किनारे, 'रेड स्कायर' और 'क्रेमलिन'के समीप स्थित है। यह होटल भी एकदम अप-टू-डेट है, और शायद लेनिनग्रेडके होटलसे बड़ा भी है।

मुझे भोजनके टिकट दे दिये गये, और मैं एक कमरेमें पहुंचाया गया, जिससे नदी और रेड स्कायर दीख पड़ते थे। पथ-प्रदर्शिकाने मुझसे कहा कि यदि मैं उसी दिन कुछ देखना चाहता हूं, तो खा-पीकर तैयार हो जाऊँ। मैं मुँह-हाथ धोकर भोजनके कमरेमें पहुंचा।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि वही आस्ट्रेलियन सज्जन, जिनसे पहले दिन लेनिनग्रेडमें भेंट हुई थी, यहां मौजूद थे। वे रंजीदा और निराश-से दीख पड़े। मैंने पूछा—"आपके मित्र कहां हैं ?"

"कौन मित्र ?"—उन्होंने गरजकर कहा।

"वही जो आपके साथ लेनिनग्रेडमें थे।"

"उनसे और मुझसे यहीं रूसमें मुलाक़ात हुई थी ; यहां आकर [illegible] हो गये। वे मेरे मित्र नहीं हैं।"—उन्होंने कहा।

लेकर ही चला आया ; लेकिन अब देखता हूं कि मैंने महा भयंकर भूल की है।"

"क्या आप यहांपर कहीं कामकी तलाशमें गये थे ?"—मैंने पूछा।

"हां। मैंने लेनिनग्रेडमें कोशिश की, तो कहा गया कि इसके लिए मास्को अच्छा क्षेत्र है, इसलिए मैं यहां आया, और यहां अधिकारियोंके पास गया। उन्होंने मुझे कुछ आशा भी दिलाई; लेकिन जब उन्हें मालूम हुआ कि मेरे पास यात्रियोंवाला 'विसा' है, तो उन्होंने कह दिया कि मेरे लिए कोई चांस नहीं है। अब मेरे पास वापस जाने तकको काफ़ी पैसा नहीं है। मैंने इंग्लैण्डमें कुछ मित्रोंको सहायताके लिए तार दिया है; परन्तु वे ऐसे ही मित्र हैं।"—वे चुप हो गए। उनका गला रुंध गया।

"आपका परिवार कहां है ?"—मैंने पूछा।

"आस्ट्रेलियामें। ओह, बेचारे! मेरे चार बच्चे हैं, शायद वे वहां अपनी माके साथ भूखों मर रहे होंगे।"—सहसा दांतसे काटी हुई रोटीको रकाबीमें फेंककर उन्होंने मुझसे पूछा—"क्या आप ईश्वरमें विश्वास रखते हैं ?"

मैं सोचने लगा कि इस समय इनके विचार किस धारामें आ रहे हैं; मगर वे मेरे उत्तरकी राह न देखकर चिल्लाकर बोले—"सब झूठ है। मैं कहता हूं कि ईश्वर है ही नहीं—कोई ईश्वर हो ही नहीं सकता। लोग कहते हैं कि ईश्वर सबका पिता है। वह सबको प्यार करता है; पर जब तथ्य कहते हैं कि वह ऐसा नहीं। इसलिए

चला जाता है, और प्रोलेटेरियट ( श्रमिकों ) के हिस्सेमें पड़ता है। पंजा ढाउ, और कभी वह भी नहीं।"

मैं खामोशीसे प्यालेसे चाय सुड़कने लगा। सहसा उन्होंने अपने मजबूत हाथोंसे वेटर (खानसामा ) की तरफ इशारा करते हुए कहा—"जरा इन प्रसन्न चेहरोंको देखिये। इनका रहनेका स्टैन्डर्ड भले ही अभी ऊँचा नहीं है; परन्तु इन्हें भूखों मरनेका सामना तो नहीं करना पड़ता। इनके परिवारवालोंके क्षुधापीड़ित पीले चेहरे तो इनकी ओर नहीं घूरते। रूसी जानते हैं कि वे कभी भूखों न मरेंगे, और यही क्रान्तिकी एक बड़ी भारी सफलता है। हमारे देशमें—अन्य सब पूँजीवादी देशोंकी भाँति—कोई चाहे कितनी ही अच्छी तनख्वाह क्यों न पैदा करता हो, फिर भी उसे सदा डर रहता है कि उसका पूँजीपति मालिक अपनी सनकमें उसे बरखास्त न कर दे, जिससे उसे भूखका सामना करना पड़े।"

"यहाँ भी बरखास्तगी और बहाली होती है, यहाँ भी आपको अपने उच्च अधिकारियोंको सन्तुष्ट करना पड़ता है, नहीं तो—"

"मि० थेनरई,"—मैंने घूमकर देखा, तो एक नवयुवतीके साथ अपनी पथ-प्रदर्शिकाको खड़ा पाया।

"आप तैयार हैं ?"—पथ-प्रदर्शिकाने पूछा।

"हाँ, क्या आप अभी किसी जगह चलेंगी ?"—मैंने कहा।

"यदि आप चाहें तो। यह आपकी नई पथ-प्रदर्शिका सब चीजें दिखलायेंगी। अब मैं विदा होती हूँ।"

निराशाजनक बात थी। सौभाग्यसे इस जगह

क्रेमलिनकी दीवारकी बग़लमें ही लेनिनका मक़बरा है। यह मक़बरा बढ़िया क़ीमती पत्थरोंका बना है; मगर उसकी निर्माणशैली किसी तरहकी तड़क-भड़क अथवा कलापूर्ण पेचीदगीसे सर्वथा मुक्त है। उसमें न तो कोई बड़ी मेहराब ही है और न महीन संगतराशीका काम ही। केवल बड़े-बड़े चिकने पत्थर, कुछ-कुछ सीढ़ियोंकी शक्लमें, एक दूसरेपर रखे हैं। छोटे-से प्रवेश-द्वारपर दो ऊँचे सन्तरी मूर्तिकी भाँति पहरेपर खड़े थे। इस मक़बरेको देखनेके लिए प्रतिदिन, नियत समयसे घंटों पहलेसे सैकड़ों आदमी, गिरती हुई बर्फ़में भी, लम्बी क़तार बनाकर खड़े होते हैं। दरवाज़ा खुलते ही वे अपने मुक्तिदाता और साम्यवादके पैग़म्बरकी समाधि देखनेके लिए झपटते हैं। बेग ( थैले ), छड़ियाँ, छाते, या और सब चीज़ें बाहर ही जमा कर देनी होती हैं। पहने हुए कपड़ोंके सिवा भीतर और कुछ ले जानेकी इजाज़त नहीं है।

मैं भी इसी भीड़के साथ भीतर घुसा। दरवाज़ा पार करके बाईं तरफ़ घूमकर हम लोग नीचे उतरे। वहाँ कुछ अँधेरा था। दो मोड़ और मुड़कर हम लोग निचले तल्लेपर पहुँचे, जहाँ लेनिनका शव काँचके केसमें सुरक्षित रखा हुआ था। पासमें खड़ा हुआ एक सैनिक दर्शकोंको केसके पास रुकने होनेसे रोकता था। हम लोग इस महान प्रतिभाशाली व्यक्तिके शवको उत्कंठासे देखते हुए धीरे-

। सभी लोगोंने अपनेको समाधिस्थलके गम्भीर वातावरणके
ल बना रखा था। मैंने लेनिनका चित्र देख रखा था, मगर
यह आशा न थी कि मैं अपने जीवनमें कभी उसे
रीर—अस्थि-मांसमें—देख सकूंगा, क्योंकि उसे मरे कई वर्ष बीत
; परन्तु लेनिनकी मृत्युके इतने वर्ष बाद भी मैंने उसके शरीरको
ोंका त्यों देखा। विज्ञानकी करामातने असम्भवको सम्भव बना
था। फ्रेंचकट दाढ़ी आज भी उसके चेहरेपर सुशोभित थी। उसका
गंजा और ललाट चौड़ा था। माथेपर अब तक शिकनें पड़ी थीं,
जो शायद अत्यधिक गम्भीर चिन्तनका परिणाम थीं। आँखें मुँदी
थीं। लेनिनके इसी मृतक शरीरको देखकर मि० जार्ज बर्नर्ड शाके
क मित्र कहा था—"देखिये, उसके हाथ तो अमीरों जैसे हैं।" इसपर
र्नर्ड शाने उत्तर दिया था—"हाँ, उन्होंने अधिक दिनों तक काम
हीं कर पाया!" ऐसा ज्ञान पड़ता था कि यह महान .सिद्ध अभी
सो रहा है, और थोड़ी ही देरमें उठकर रेड स्क्वायरकी किसी
मीटिंगमें, पतलूनकी जेबमें हाथ डाले, वह अपनी घनगरज आवाज़में
भाषण करने लगेगा; लेकिन अफसोस! केवल निर्जीव शरीर ही
यहाँ पड़ा है, प्राण न-जाने कहाँ चला गया है। यदि उस प्राणका
कहीं पता लग सके, या वह मिल सके, तो समूचा रूसी राष्ट्र उसे
■ करके पुनः इस अस्थि-मांसके पिंजड़े—जिसे उन्होंने राष्ट्रीय
िध समझकर इतने यत्नपूर्वक सुरक्षित कर रखा है—स्थापित
रनेमें कोई कसर उठा न रखेगा।

मैं एक-दर्शकने दरवाज़ेपर आकर अपना हृदयेग दरबानसे

क्रेमलिनकी दीवारकी बगलमें ही लेनिनका मक़बरा है। मक़बरा बढ़िया क़ीमती पत्थरोंका बना है; मगर उसकी निर्माण किसी तरहकी तड़क-भड़क अथवा कलापूर्ण पेचीदगीसे सर्वथा शून्य है। उसमें न तो कोई बड़ी मेहराब ही है और न महीन संगतराशीका काम ही। केवल बड़े-बड़े चिकने पत्थर, कुछ-कुछ सिलसिलेवार शक्लमें, एक दूसरेपर रखे हैं। छोटे-से प्रवेश-द्वारपर दो रक्षक सन्तरी मूर्तिकी भाँति पहरेपर खड़े थे। इस मक़बरेको देखनेके लिए प्रतिदिन, नियत समयसे घंटों पहलेसे सैकड़ों आदमी, गिरते हुए बर्फ़में भी, लम्बी क़तार बनाकर खड़े होते हैं। दरवाज़ा खुलते ही वे अपने मुक्तिदाता और साम्यवादके पैग़म्बरकी समाधि देखनेके लिए झपटते हैं। बेग (थैले), छड़ियाँ, छाते, या और सब चीज़ें बाहर ही जमा कर देनी होती हैं। पहने हुए कपड़ोंके सिवा और और कुछ ले जानेकी इजाज़त नहीं है।

मैं भी इसी भीड़के साथ भीतर घुसा। दरवाज़ा पार कर बाईं तरफ़ घूमकर हम लोग नीचे उतरे। वहाँ कुछ अंधेरा था। दो मोड़ और मुड़कर हम लोग निचले तल्लेपर पहुँचे, जहाँ लेनिनका शव काँचके केसमें सुरक्षित रखा हुआ था। पासमें खड़ा हुआ एक सैनिक दर्शकोंको केसके पास खड़े होनेसे रोकता था। [illegible] इस महान प्रतिभाशाली व्यक्तिके शवको उत्कंठासे देखते हुए [illegible] ...पूर्व और पीछेसे भीड़के दबावके कारण, मजबूर होकर [illegible] बाहर निकल गये। इतनी अधिक भीड़-भाड़के [illegible] तरहका शोरगुल, गुनगुनाहट, या अन्य कोई करह

। सभी लोगोंने अपनेको समाधिस्थलके गम्भीर वातावरणके
ूल बना रखा था। मैंने लेनिनका चित्र देख रखा था, मगर
यह आशा न थी कि मैं अपने जीवनमें कभी उसे
रीर—अस्थि-मांसमें—देख सकूंगा, क्योंकि उसे मरे कई वर्ष बीत
; परन्तु लेनिनकी मृत्युके इतने वर्ष बाद भी मैंने उसके शरीरको
ोंका त्यों देखा। विज्ञानकी क्षमताने असम्भवको सम्भव बना
या। फ्रेंचकट दाढ़ी आज भी उसके चेहरेपर सुशोभित थी। उसका
ुर गंजा और ललाट चौड़ा था। माथेपर अब तक शिकनें पड़ी थीं,
ो शायद अत्यधिक गम्भीर चिन्तनका परिणाम थीं। आँखें मुँदी
ुई थीं। लेनिनके इसी मृतक शरीरको देखकर मि० जार्ज बर्नार्ड शाके
मित्र कहा था—"देखिये, उसके हाथ तो अमीरों जैसे हैं।" इसपर
शाने उत्तर दिया था—"हाँ, उन्होंने अधिक दिनों तक काम
कर पाया!" ऐसा जान पड़ता था कि यह महान .विद् अभी
रहा है, और थोड़ी ही देरमें उठकर टेढ़ स्वभावकी किसी
ढंगमें, पतलूनकी जेबमें हाथ डाले, वह अपनी घनगरज आवाज़में
न करने लगेगा; लेकिन अफसोस! केवल निर्जीव शरीर ही
ी पड़ा है, प्राण न-जाने कहाँ चला गया है। यदि उस प्राणका
ी पता लग सके, या वह मिल सके, तो समूचा रूसी राष्ट्र उसे
न करके पुनः इस अस्थि-मांसके पिंजरमें—जिसे उन्होंने राष्ट्रीय
ोष समझकर इतने यत्नपूर्वक सुरक्षित कर रखा है—स्थापित
करनेमें कोई कस कसर न रखेगा।

ेरी एक-सहारिकाने दरवाज़ेपर आकर अपना हैंडबैग दरवानसे

वापस लिया, और हम दोनों एक मुक़दमा देखनेके लिए अदाल
ओर चले। वक्त बहुत कम था, इसलिए हम लोग तेज़ीसे चले;
इससे और भी ज़्यादा देर हुई। मैं सड़कपर जमी हुई कड़ी फिस
बर्फ़पर चलनेका आदी तो था नहीं, इसलिए तेज़ीसे च
फिसल पड़ा और लगा धर्ती चूमने। फिर क्या था, एक तमाशा
गया। मैं उठनेकी जितनी कोशिश करता था, उतना ही अधिक
जाता था, जिसे देखकर राहगीर हँसते थे। मेरी पथ-प्रदर्शि
मदद देकर मुझे उठाया, और अधिक तमाशा बननेसे बचाया।

# आठवाँ अध्याय

हम लोग अदालत पहुँचे। अदालतकी न तो इमारत शानदार थी, और न वहाँ अच्छी वर्दी पहने चपरासी ही नज़र आते थे। अदालतके एक कमरेमें हम लोग जा बैठे। वहाँ बड़े-बड़े घेरोंवाले चोगे-गाउन पहने वकील या एटार्नी भी नहीं थे। अदालतको देखकर किसी स्कूलके कमरे या सभा-भवनका भ्रम आसानीसे हो सकता था। प्रधान जज और उनके दो सहकारी — उनमें एक महिला थी—एक ऊँचे प्लेटफार्मपर बैठे थे। उनके सामने बिना मेज़पोशकी एक नंगी मेज़ पड़ी थी। मुद्दई-मुद्दाअले और जनसाधारण जजके सामने पड़ी हुई बेंचोंपर बैठते हैं। दोनोंके बीचमें एक लकड़ीका जंगला था। जजोंकी पोशाक बहुत सादी थी। उनकी सादी पोशाक, छोटे-छोटे बाल, धूपमें झुलसा हुआ चेहरा और मज़बूत हाथोंको देखकर उनमें और साधारण मज़दूरोंमें फेर करना कठिन था। जहाँ तक मुझे याद पड़ता है, महिला जज सिरपर रूमाल बाँधे थी।

एक स्त्री जंगलेपर झुकी हुई बड़ी बेचैनीसे कुछ कह रही थी। कभी इधर-उधर हाथ नचाती, कभी आँसू बहाती। कुछ देर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

मैंने एक-नागरिकसे पूछा कि मामला क्या है? उसने कुछ देर ठहर बताया कि—यह स्त्री अपने पतिके विरुद्ध अपने बच्चेके

भरण-पोषणका दावा किया है। शायद पुरुष इसके बच्चेका पिता होनेसे इनकार करता है।"

मामला मेरे लिए तो मज़ेदार था। इस प्रकारके मुकदमे बोल्शेविक समाजके नये सिद्धान्तोंके परिणाम हैं। विवाह-पद्धतिके एकदम उठा देने और पुरुष-स्त्री-सम्बन्धी पूर्ण-स्वतन्त्रता देनेके कारण इस प्रकारके विचित्र और जटिल मामले पैदा हो रहे हैं। पतिसे जवाब तलब किया गया था कि वह बच्चेके भरण-पोषणके खर्चका जिम्मेदार क्यों न बनाया जाय। उसने बच्चेका पिता होनेसे साफ़ इनकार कर दिया, और कहा कि स्त्री किसी और नवयुवकके साथ भी सम्बन्ध रखती थी, यह बच्चा किसी औरका है—उसका नहीं। सबूत पेश हुआ। जिस नवयुवकसे सम्बन्ध बताया जाता था, उसकी गवाही हुई; बयान लिखे गये और फिर दूसरा मुक़दमा पेश हुआ। मुझे बताया गया कि फ़ैसला बादमें—परामर्शके उपरान्त—दिया जायगा।

दूसरे मामलेमें भी मुद्दई एक स्त्री ही थी। उसका कथन था कि जब उसे तलाक़ मिला था, तब उसे अपने पतिकी आमदनीका एक तिहाईकी डिग्री मिली थी। अब उसके पतिकी तनख्वाह बढ़ गई है; मगर पतिदेव उसे अपनी पुरानी तनख्वाहकी एक तिहाई ही दे रहे हैं, अतः उसकी दरख्वास्त थी कि उसे पतिकी मौजूदा [illegible] एक तिहाई हिस्सा दिलाया जाय। इस मामलेमें [illegible] मिनट लगे। उसके बाद अदालत परामर्शके लिए

एक जजने मेरी पथ-प्रदर्शिकाको बुलाकर कहा कि वह मुझे [illegible]वाले कमरेमें, जो अदालतके कमरेकी बग़लमें था, ले आवे। [illegible]तर गया ; यह कमरा छोटा था। उसमें मेज़पर मिसलें और [illegible]यें रखे हुए एक महिला सेक्रटरी बैठी थी। जजोंने [illegible]-प्रदर्शिका द्वारा मुझसे पूछा कि उनकी अदालतके सम्बन्धमें मेरे [illegible] विचार हैं, और क्या मैं कोई प्रश्न करना चाहता हूं। मैंने [illegible]—"आप लोग फ़ीस किस हिसाबसे लेते हैं ?"

"हमारे यहां कोर्ट-फ़ी है ही नहीं ;"—पथ-प्रदर्शिकाने उत्तर [illegible]या—"अदालत सरकारकी ओरसे न्याय करनेके लिए स्थापित है। [illegible]ग़रीब-से-ग़रीब आदमीको अदालतसे न्याय पानेकी सुविधा होनी [illegible]चाहिए। फिर हम कोर्ट-फ़ी लगाकर ग़रीबोंको इन्साफ़ पानेसे [illegible]क्यों रोकें ?"

[illegible]सकी यह दलील विश्वासोत्पादक और उचित थी। मैंने [illegible]फिर पूछा—"क्या फ़ौजदारीके लिए कोई पृथक अदालत है ?"

"नहीं, सभी मुक़दमे एक ही अदालतमें होते हैं।"

"मैं समझता हूं कि लोग आपके फ़ैसलोंके विरुद्ध अपील कर सकते हैं ?"

"निश्चय। वे ऊपरकी अदालतमें जा सकते हैं।"

"क्या मैं आपके न्याय-विभागका विधान जान सकता हूं ?"—मैंने पूछा। इस पर पथ-प्रदर्शिकाने कुछ ज़्यादा देर तक जजोंसे [illegible] बातचीत किया, फिर बोली—"सबसे नीचेकी अदालत जनताकी अदालत (People's Court) है। इसके अधिकार ज़्यादा होते हुए भी

परिमित हैं। इन अदालतोंके फैसलोंकी अपील प्रान्तीय अदालतोंमें होती है। अपीलें सुननेके अतिरिक्त प्रान्तीय अदालतोंका काम अपने प्रान्त-भरकी अदालतोंकी देख-रेख करना है। वे अपनी जनरल मीटिंगमें क़ानूनकी उन पेचीदगियोंका फैसला करती हैं, जिन्हें जनताकी अदालतोंके जज उनके पास निर्णयके लिए भेजते हैं।" यह बड़े मज़ेकी बात थी। मैंने पूछा—"क्या आपके यहाँ पुराने मामलोंकी नज़ीरें नहीं होती? जनताकी अदालतें पेचीदा बातोंको प्रान्तीय अदालतोंमें क्यों भेजती हैं?"

"नहीं"—उसने दृढ़तासे कहा—"हमारे यहाँ नज़ीरका क़ानून नहीं है। हमने उसे उठा दिया है, क्योंकि उससे जजोंकी सद्‌बुद्धिमें बड़ी रुकावटें पड़ती थीं।"

"अच्छा, आगेका विधान सुनाइये।"—मैंने कहा।

"प्रान्तीय अदालतोंके ऊपर आर० एस० एफ० एस० आर०* के अथवा जिन प्रजातंत्रोंके अधिकारमें वे प्रान्त हैं, उनके 'सुप्रीम कोर्ट' (सर्वोच्च अदालतें) हैं।"

"क्या सारे प्रजातन्त्र एक दूसरेसे एकदम स्वतंत्र हैं?"

"हाँ, कुल सातों प्रजातन्त्र अदालती और शासन-सम्बन्धी बातोंमें एकदम स्वतंत्र हैं। केवल कुछ विषयोंमें वे एक केन्द्रीय शासनाधिकारमें हैं—जैसे यू० एस० एस० आर०† के सुप्रीम कोर्ट अथवा फौजी अदालत, अथवा 'गेपायू'—"

---

* आर० एस० एफ० एस० आर०=रशियन सोशलिस्ट फेडरेटेड सोवियट रिपब्लिक (साम्यवादी सोवियट प्रजातन्त्रोंका संघ)। † यू० एस० एस० आर०=यूनियन [illegible] सोवियट रिपब्लिक्स (साम्यवादी सोवियट प्रजातन्त्रोंका संघ)।

"ओह! गेपायू? वह भयंकर जी० पी० यू० (खुफिया पुलिस), उसके सम्बन्धमें हम लोगोंने इतनी बातें सुन रखी हैं!"—मैंने आश्चर्यसे कहा।

उसने मुसकराते हुए कहा—"आप यह कैसे जानते हैं कि जी० पी० यू० भयंकर है?

"भयंकर तो है ही। मैंने उनके बारेमें अनेक पुस्तकोंमें पढ़ा है। क्या आप उन्हें भयंकर नहीं समझतीं?"—मैंने पूछा।

"हाँ, वे भयंकर हैं; लेकिन तभी, जब आप सरकारी नीतिके विरुद्ध हों; वरना नहीं।"—वह बोली।

'तो यह सच ही है कि आप लोग प्रत्येक उपायसे जनमतका गला घोंट रहे हैं—"

"कैसे?"—उसने पूछा—"हम तो केवल साम्यवाद-विरोधियोंको सरकारके विरुद्ध आन्दोलन और षड्यन्त्र करनेकी अनुमति नहीं देते। आप जानते हैं कि यू० एस० एस० आर० के भीतर और बाहर बहुतसे लोग ऐसे हैं, जो हमेशा इस प्रोलेटेरियट राज्यको मिटा देनेकी कोशिश करते रहते हैं।"

"तब आप यह कैसे कह सकती हैं कि जारका शासन क्रान्तिकारियोंपर जुल्म करनेका अपराधी था? तब जारशाही और सोवियटशाही शासनोंमें अन्तर ही क्या हुआ? दोनों ही आलोचना करनेवाले जनमतको कुचलते हैं, ऐसी दशामें आप व्यक्तिगत स्वतंत्रताकी बात ही कैसे कह सकती हैं?"

मेरे इस आक्रमणसे वह प्रत्यक्षतः उत्तेजित हो उठी। उसने

सुन्दर गुलाबी गाल लाल हो गये, आँखें बड़ी होकर चमकने
वह बोली—"लेकिन आजकल प्रोलेटेरियटको अपनी
इजाजत है, केवल प्रोलेटेरियटके दुश्मन, बूर्ज्वा लोगों
रोकी जाती है, जिससे कुछ आता-जाता नहीं। वे
चुके—अब उन्हें अपना मुंह बन्द करना चाहिए।"

"शायद हम लोग आपका बहुमूल्य समय बरबाद
आइये, पहले अपनी बात खतम कर लें। हाँ, तो
प्रजातन्त्रों और यू० एस० एस० आर० के गुप्त

ख़िलाफ़ मामला सुना जाता है। इसका तीसरा काम क़ानूनी और शास्त्रकी उलझनोंपर अन्तिम निर्णय देना है। यह तो हुआ प्रजातन्त्रोंके सुप्रीम कोर्टोंका विषय। यू० एस० एस० आर० के सुप्रीम कोर्टके भी यही काम हैं। वह सातों प्रजातन्त्रोंके सुप्रीम कोर्टोंके फैसलोंको रद्दोबदल कर सकता है; यदि दो प्रजातन्त्रोंमें किसी बातपर विवाद हो, तो वह उसका फैसला करता है, और बहुत ऊँचे ओहदोंके लोगोंपर मुक़द्दमा चला सकता है। अपनी साधारण सभामें उसे प्रजातन्त्रोंकी केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटियों (Central Executive Committees) के हुक्मों तथा निर्णयोंपर भी कुछ अधिकार है। फौजी अदालतोंमें लाल फौजके मामले होते हैं।"—इस लम्बे कथनके बाद वह साँस लेनेको रुकी।

मैंने उसे सुस्तानेके लिए कुछ मिनटका समय देकर पूछा—"यह केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटियाँ क्या हैं?"

"ओह! यही तो वह कमेटी है, जिसे सरकारके क़ानून-क़ायदे बनाने और शासन करनेका पूरा अधिकार है।"

"जजोंकी तनख्वाह क्या है? क्या उन्हें मज़दूरोंसे अधिक वेतन मिलता है?"—मैंने पूछा।

प्रधान जजकी ओर इशारा करके वह बोली—"वह ख़ुद प्रोलेटेरियट है। वह एक कारख़ानेमें काम करता था; चूँकि उसने काफी सहज बुद्धिका परिचय दिया, इसलिए उसे जजोंकी शिक्षा दी गई, क़ानून पढ़ाया गया और वह जज बना दिया गया। और ये दोनों (सहकारी जजोंकी ओर उँगली उठाकर) अब तक ए

रेशमके कारखानेमें मज़दूर हैं। वर्षमें छे दिनके लिए ये गये हैं ; छे दिन बाद ये फिर अपने कारखानेको लौट जायँ ये फैसलोंमें काफ़ी बुद्धिमत्ताका परिचय देंगे, तो इन्हें भी शिक्षा दी जायगी। इन्हें वही तनख्वाह मिलती है, जो कारीगरों (Skilled Labourers) को मिलती है। अदाल जज होनेके कारण साधारण मज़दूरोंमें और इनमें कोई भेद ये बराबरीसे मज़दूरोंसे मिलते-जुलते हैं। यदि ये न यदि ये बूज़ुआ दिमाग़का परिचय दें, तो ये फिर कारख खेतोंपर भेज दिये जायँगे।"

"आपके यहाँ कोई क़ानूनकी किताबें भी हैं, या इन सहजबुद्धिपर ही सारा दार-मदार है ?"—मैंने प्रश्न किया।

पथ-प्रदर्शिकाने जजसे सलाह की और उत्तर दिया- इनके पास क़ानूनकी किताबें हैं।" उसने मेज़पर रखी हुई दिखाईं और कहा—"हर बातका निर्णय सहजबुद्धिसे होता सज़ा क़ानूनके अनुसार दी जाती है।"

"क्या आपकी महिला जज उतनी ही सुदक्ष सिद्ध हुई हैं पुरुष जज ?"—मैंने पूछा।

पथ-प्रदर्शिकाने इस बार जजोंसे पूछे बिना ही उत्तर दिया- नहीं ? क्या उनके दिमाग़ नहीं है कि उनके अक़्ल नहीं है, उनमें सहजबुद्धिकी कमी है ?" उसने यह बात कही तो मुस : लेकिन उस मुसकराहटके पीछे में उसके आहत आत्माभिम

फिर मैंने पूछा—"अदालतमें मैंने किसी वकील या एडवोकेटको नहीं देखा। क्या आपके यहाँ वकील नहीं होते?"

जजसे पूछकर पथ-प्रदर्शिकाने उत्तर दिया—"हाँ, हमारे यहाँ एडवोकेट होते हैं; लेकिन आमतौरसे मामूली मामलेमें वे नहीं बुलाये जाते। हमारे क़ानूनमें वकीलका होना अनिवार्य नहीं है। हम लोग स्वयं जिरह कर सकते हैं, मिसलें देख सकते हैं, उनकी नक़लें ले सकते हैं, और मुक़दमेके सम्बन्धमें, जब चाहे तब, जो चाहें सो कह सकते हैं। इसलिए वकील बुलाकर पैसा बरबाद करनेसे फ़ायदा?"

मैंने आश्चर्यसे पूछा—"पैसा बरबाद करना? क्या आपके वकीलोंको फीस मिलती है?"

"हाँ, वे फीस पाते हैं,—अपनी-अपनी योग्यताके अनुसार।"

मैं मुसकरा दिया। वह काफ़ी होशियार थी; मेरी मुसकराहटका मतलब फौरन समझ गई। बोली—"यह न समझिये कि इन वकीलोंकी फीसमें एक दूसरेसे कोई बहुत बड़ा अन्तर है। किसी वकील-विशेषकी कोई निश्चित फीस भी नहीं। मुक़दमेवालोंको अपनी आमदनीके अनुसार ही फीस देनी पड़ती है। यह सारी फीस "Collegium" अर्थात् वकीलोंकी समितिके पास जाती है। इसी समितिसे हरएक वकीलको उसकी योग्यताके अनुसार मासिक वेतन मिलता है।"

"इसलिए सबसे ग़रीब मज़दूर तो वकीलकी सहायता ले न सकते होंगे?"

"क्यों नहीं?"—उसने पूछा।

"मान लीजिये कि कोई व्यक्ति मुश्किलसे इतना कमाता है, जिससे सूखी रोटी चल सके, तो उस बेचारेके पास वकीलको फीस देनेके लिए पैसा कहाँसे आयेगा?"

"उसे सिर्फ 'कन्सल्टेशन ब्यूरो' (परामर्शदात्री समिति) को दरख्वास्त देनी पड़ती है। यदि यह देखा जायगा कि वह फीस नहीं दे सकता, तो उसे मुफ्त ही क़ानूनी सलाह दी जाती है।"

"मालूम पड़ता है कि आपका न्याय-विभाग शासन-विभागसे जुड़ा हुआ है।"

"हाँ; लेकिन इसमें क्या हर्ज है?"

"कृपा करके अपने जजोंसे पूछिये कि इस पद्धतिमें कुछ हर्ज है या नहीं।"—मैंने उत्तर दिया।

उसने जजोंसे पूछा। जज हँसने लगे। उन्होंने फिर हिसाब कुछ कहा। पथ-प्रदर्शकने अनुवाद किया—"ये देश भी जो शासन-विभाग और न्याय-विभागको अलग करनेका दम भरते हैं, वास्तव ठीक उतना अलग नहीं कर पाते हैं। सिद्धान्तरूपसे इन दोनों विभागों अलग रखनेका स्वप्न देखना बड़ा भला लगता है; मगर व्यावहारि रूपसे ऐसा होता नहीं। अन्य देशोंके जज हैं, इसलिए वे अस असलियतको स्वीकार नहीं करते; लेकिन यदि आप संसारके किसी देशमें कोई भी राजनैतिक मुकदमा देखें, तो आपको मालूम हो जा जज लोग स्वतन्त्र नहीं हैं।"

मैं उनसे जूरी-प्रथाके विषयमें कुछ पूछ रहा था। परामर्शके बाद

बाहर बेचारे आसामी और फरियादी फैसलेके इन्तज़ारमें चिन्तित थे। केवल अपने कौतूहलको शान्त करनेके लिए जजोंका और बाकि समय नष्ट करना अन्याय था, इसलिए मैंने उन्हें हार्दिक धन्यवाद दिया, और उनसे हाथ मिलाकर बाहर निकल आया।

कुछ मिनट बाद जज भी बाहर आये, और स्थायी जजने फैसला सुनाया। पहले मुक़द्दमेमें जजने फैसला दिया कि बच्चेके भरण-पोषणका भार वे दोनों पुरुष मिलकर वहन करें, जिनका सम्बन्ध उस स्त्रीसे था, क्योंकि यह निश्चय करना असम्भव था कि वास्तवमें उस बच्चेका पिता कौन है। दूसरे मुक़द्दमेमें फरियादी पत्नीको अपने पतिकी वर्तमान आमदनीका तिहाई भाग दिलाया गया।

मैं रूसी अदालतकी यह सादगी देखकर आश्चर्यमें डूब गया। मुजरिम भी कितने स्वतन्त्र थे! ज़मानतें बड़ी आसानीसे हो जाती हैं। जिन जुर्मोंमें एक वर्षसे कमकी सज़ा होती है, उन जुर्मोंके मुजरिम हाजतमें नहीं रखे जा सकते। यह आशा रहती है कि मुक़द्दमा हमेशा न्यायोचित ढंगसे होगा, क्योंकि हरएक बिना खर्चके ऊँची अदालतमें जा सकता है। इसके अतिरिक्त जज लोग सर्वसाधारणमें से ही चुने जाते हैं; इसलिए वे मुजरिमोंकी, परिस्थिति, मनोवृत्ति, रीति-रिवाज, चिन्ताओं और मुसीबतोंसे परिचित होते हैं। इसलिए बहुत अधिक सम्भावना यही है कि रूसमें मुजरिमके अन्य देशोंकी अपेक्षा कहीं अधिक, सहानुभूतिपूर्ण न्याय होता,

अन्य देशोंमें जज और न्यायाधीश समाजके एक ऐसे विशिष्ट जिसे रूसी Privileged Class 'सुविधा-प्राप्त श्रेणी' कहते हैं)

हैं, जो सर्वसाधारणकी स्थिति और जीवनसे प्रायः अनभिज्ञ
है, इसलिए वे अक्सर उनके जीवन और सम्पत्तिपर अन्धे होकर
आघात करते हैं। इसके अलावा अन्य देशोंके जज अपनेको हर
ते मामूली लोगोंसे अलग रखते हैं। उनकी शान-शौकत, गम्भीरता
स्थितिसे मुक़द्दमेवाज़ उन्हें अपनेसे उच्चकोटिका समझते हैं, और
लिए अक्सर उनके सामने उन्हें खुलकर स्वतन्त्रतासे अपनी बात
नेकी हिम्मत नहीं पड़ती। रूसी अदालतोंकी सादगीसे न्यायकी
ग जानेवाली जनताको निश्चय ही बहुत बड़ी सुविधा मिलती है।

चायका वक्त हो चुका था, इसलिए हम लोग होटलको वापस
ये। तीसरे पहर सर्दी बहुत बढ़ गई। चारों तरफ़ अविराम
तेसे बर्फ़ गिर रही थी। हम लोग बर्फ़पर ही चल रहे थे।
लोगोंपर ऊपर-नीचे, इधर-उधर, हर तरफ़से बर्फ़ हमला कर रही
। मोज़े और जूतेके भीतर तक सर्दी घुसी आ रही थी। बर्फ़ीली
वा साँसके साथ भीतर जाकर दिलको जमाकर उसकी गतिको
न्द करती जान पड़ती थी। लेकिन मैं नहीं समझता कि रूसी
लोग इस बातमें हम लोगोंसे ज्यादा मज़बूत होते हैं, यद्यपि वे जन्मसे
ही इस भयंकर सर्दीमें पलते हैं। यह तो उनकी गर्म समूरी पोशाक
ही है, जिसकी बदौलत वे इस ठंडी आब-हवाका सामना करते हैं।
मैंने लेनिनग्रेडके 'क्रेशे' में देखा था कि बच्चे कैसी सावधानीसे रज़ाई
और समूरमें लपेटे जाते थे। उनका एक ही कपड़ा हमारे देशके
दर्जनोंका दम घोटनेके लिए काफ़ी है। वयस्क आदमी भी जो कपड़े
पहनते हैं, वे यद्यपि भद्दे और गन्दे होते हैं, फिर भी होते

काफ़ी गर्म है। गरीब आदमी भेड़की खालें पहनते हैं और कारीगर, जिन्हें आजकल यहांका धनी या सुविधा-प्राप्त वर्ग समझना चाहिए, गर्म समूरी कोट और ऊनी जैकेट पहनते हैं। मैं समझता हूं कि रूसियोंकी पोशाक और उनकी अत्यन्त गर्म टोपी पहनकर भारत-जैसे उष्ण देशोंका कोई भी निवासी रूसी सर्दीका सामना कर सकता है। केवल खुले हुए चेहरेपर बर्फ़ीली हवाका कटु अनुभव होगा।

मेरी पथ-प्रदर्शिका यह कहकर चली गई कि शामको आकर वह मुझे एक 'कृषक-भवन' दिखानेको ले चलेगी। उसने मुझे बताया कि यहां (मास्कोमें) इस कृषक-भवनके अतिरिक्त 'कृषक-क्लब,' 'संस्कृति-भवन,' 'मनोरंजन उद्यान,' 'संस्कृति और विश्रामका उद्यान' आदि संस्थायें हैं, जिनमें किसान और मज़दूर एकत्रित होकर, पुस्तकें पढ़ते हैं, लेक्चर सुनते हैं, नाटक खेलते हैं या सिनेमा देखते हैं; और इस प्रकार संध्याके खाली समयका सदुपयोग करते हैं। उसने यह भी बताया कि अत्यधिक सर्दीके कारण 'संस्कृति-उद्यान' तथा अन्य संस्थाएं, जहां लोग खुली जगहमें एकत्रित होते हैं, बन्द कर दी गई हैं, इसलिए मैंने 'कृषक भवन' ही देखनेका निश्चय किया।

चाय और भोजन दोनों ही लेनिनग्रेडकी तरह खराब थे। चीज़ोंके दाम इतने अधिक थे कि होटलके नियत भोजनके अतिरिक्त और चीज़ लेना विदेशियोंके लिए असम्भव है। मुझे याद है एक दिन एक सेबके लिए मुझे दस शिलिंग (६॥) रु० के ) देने पड़े थे; दूसरी चार मुर्गोंके भुने हुए गोश्तका एक

तश्तरीके लिए पूरा एक पौंड ( १३।-) रु० ) देना पड़ा था ! इसपर मैंने सोचा कि अपने ग़रीब पेटको इतने क़ीमती सेब और तुरंजे नेकी बनिस्बत थोड़ा उपवास करना अच्छा है। एक बार मैंने [-प्रदर्शिकासे कहा भी—"किसी प्रोलेटेरियटके लिए आपका देश यनेके लिए आना असम्भव है।"

वह बोली—"हम उनसे यहाँ आनेकी प्रार्थना थोड़े ही करते हैं। [आ]प जानते हैं कि इस समय हमें विदेशी धन—पौंड या डालर—की [अ]त्यन्त जरूरत है; इसलिए हमें, जहाँ तक सम्भव हो, उसे विदेशियोंसे [व]सूलना चाहिए, और हम लोग यह भी भलीभाँति जानते हैं कि विदेशी यात्री पैसा दे भी सकते हैं।"

बात बिलकुल खरी थी। उसने मेरी आँखें खोल दीं। सोवियट रूसने क़ानून बना रखा है कि रूस आनेवाला कोई व्यक्ति यदि अपने देशके सिक्कोंको रूसी रूबलमें बदला ले, तो रूससे जाते वक़्त वह उन्हें फिर अपने देशके सिक्कोंमें नहीं बदला सकता। मजबूरन उसे उन्हें रूसमें ही ख़र्च करना पड़ता है। पथ-प्रदर्शिकाके उपरोक्त कथनसे मालूम हो गया कि रूसने यह क़ानून क्यों बनाया है। बादमें मुझे मालूम हुआ कि विदेशियोंके लिए एक स्टोर है,—जिसका नाम 'टार्गसिन' है,—जहाँ चीज़ें किसी क़दर सस्ती मिलती हैं। उसका वर्णन आगे आयेगा।

शामको जब पथ-प्रदर्शिका आई, तब अन्धेरा हो चुका था। हम लोगोंने मास्कावा नदी पार की, और क्रेमलिनकी दीवारके पास ट्रामके इन्तज़ारमें जा खड़े हुए। ट्रामपर ट्राम निकलती आती थी

पर हमारी ट्रामका कहीं निशान भी न दीख पड़ता था। मोटर, अथवा किरायेकी अन्य सवारियाँ हैं ही नहीं। हाल ही में ज़ भीतर बिजलीकी गाड़ियाँ चलानेकी योजनापर काम शुरू हुआ सर्दीके मारे बुरा हाल था, इसलिए हम लोग चहलकदमी गरमानेकी कोशिश करते रहे। खैर, राम-राम करके ट्राम हम लोग भी कूदकर भीड़में सवार हो गये। भीड़में गर्मी मिली; मगर लोगोंके पसीने और गन्दे कपड़ोंसे दु आ रही थी।

---

## नवाँ अध्याय

मेरी पथ-प्रदर्शिका रह-रहकर सामने यात्रियोंसे—जो आगेके खिड़कीके पास बैठे थे—पूछती जाती थी कि हम लोग कहाँ तक पहुँचे, क्योंकि एक तो ट्रामकी खिड़कियोंपर पाला-भीतर दोनों ओरसे बर्फ जम रही थी, दूसरे सामनेकी ओर भीड़के कारण कुछ दीख भी न पड़ता था। रूसी ट्रामोंमें यात्री पीछेके दरवाजेसे चढ़ते हैं, केवल बूढ़े यात्री या गोदमें बच्चे लिए हुए स्त्रियाँ आगे ड्राइवरके पासके दरवाजेसे सवार हो सकती हैं। आमतौरसे आगेका दरवाजा केवल उतरनेके लिए होता है।

हम लोग 'कृषक-भवन' के सामने जाकर उतर पड़े। भवनकी इमारत काफी बड़ी है। जान पड़ता है कि पथ-प्रदर्शिका भी पहले इस इमारतसे परिचित न थी। वह पहले मुझे किसानोंके भोजनके कमरेमें ले गई। वहाँ कई किसान सब अपने बोरिये-बसनेके साथ पड़े। वे उसी समय गाँवोंसे आये थे। उन लोगोंने हमें सुपरिन्टेन्डेन्टके दफ्तरका रास्ता बताया। खैर, हम लोगोंने उसे ढूँढ निकाला।

सुपरिन्टेन्डेन्ट एक बकील था। वह अंगरेजी नहीं जानता था, इसलिए पथ-प्रदर्शिकाने ही दुभाषिया बनकर हम दोनोंका परिचय कराया। मैंने पथ-प्रदर्शिकासे कहा—"कृपा करके इन सज्जनसे पूछिये कि क्या मैं इनसे प्रश्न कर सकता हूं।"

पर हमारी ट्रामका कहीं निशान भी न दीख पड़ता था। मोटर, बस अथवा किरायेकी अन्य सवारियाँ हैं ही नहीं। हाल ही में शहरके भीतर त्रिमलोकी गाड़ियाँ चलानेकी योजनापर काम शुरू हुआ है। सर्दीके मारे बुरा हाल था, इसलिए हम लोग चहलकदमी करके गरमानेकी कोशिश करते रहे। खैर, राम-राम करके ट्राम आई। हम लोग भी कूदकर भीड़में सवार हो गये। भीड़में कुछ गर्मी मिली; मगर लोगोंके पसीने और गन्दे कपड़ोंसे बुरी आ रही थी।

---

…धिक मेहनतके लिए उनके हिस्सेमें कोई विशेषता नहीं होती।"

"इस प्रकार अब किसानोंको मुनाफ़ा मिलता है, तो यदि वे चाहें तो, निश्चय ही धन जोड़ सकते हैं?"—मैंने पूछा।

"तुम बड़े शरारती हो।"—पथ-प्रदर्शिकाने कहा—"बार-बार घुमा-फिराकर इसी बातपर चोट करते हो।"

"इसलिए कि इसी मौलिक अन्तरपर ही तो आप संसारसे भिन्न होनेका दावा करती हैं। आपके इन्हीं साम्यवादी सिद्धान्तों ही के कारण सारे संसारके लोगोंकी दृष्टि रूसपर है। हमें मालूम तो होना चाहिए कि आपके यहाँ धनके वितरणका क्या ढंग है।"—मैंने कहा।

"बात यह है कि"—उसने कहा—"पहले सरकार अपने साम्यवादी आदर्शोंके अनुसार किसानोंको केवल गुज़ारा-भर देकर बाक़ी सारी उपज स्वयं लेने लगी। इसपर किसान बहुत बिगड़े, क्योंकि जिन अफ़सरोंके सुपुर्द किसानोंका गुज़ारा निश्चित करनेका काम था, उन्होंने बहुतेरे किसानोंके खाने-पीनेका व्यय कम निर्धारित किया, जिससे किसानोंको कभी-कभी भूखों मरना पड़ा। उन दिनों किसान सरकारसे बिगड़ गये, और उन्होंने सरकारको सबक़ सिखानेके लिए खेतोंमें, जहाँ तक मुमकिन हुआ, कम-से-कम फसल पैदा की; साथ ही उन्होंने अपने तमाम मवेशियोंको मारकर साफ़ कर दिया। इस देशव्यापी मूक विद्रोहसे देश-भरमें अकाल पड़ गया। लेनिनने इसे रोकनेके लिए NEP ( New Economic Policy ) अर्थात् 'नवीन आर्थिक प्रणाली' निकाली, जिसका हाल शायद आपने पढ़ा होगा। लेकिन पंचवर्षीय कार्यक्रमके शुरू होनेपर वह प्रणाली भी बदल दी गई।

"निश्चय ही आप प्रश्न कर सकते हैं।"—वह मुसकराकर बोली—"लेकिन कृपा करके संक्षेपमें ही प्रश्न कीजिये, नहीं तो हम लोगोंके लौटनेमें बड़ी देर हो जायगी। ओह, आप भी कैसे खोद-खोदकर सवाल करनेवाले हैं!"

"देखिये, बात यह है कि इतने थोड़े समयमें किसी विदेशी यात्रीको रूस देख लेना सम्भव नहीं—महीनोंमें भी नहीं। अतः रूसके बारेमें कुछ जाननेके लिए सिर्फ़ यही तरीक़ा है कि आपके यहाँके विभिन्न विभागोंके प्रधान अधिकारियोंसे सवाल किये जायँ, फिर जहाँ तक सम्भव हो, आँखसे देखकर उनके जवाबोंकी जाँच की जाय।"—मैंने उत्तर दिया।

"अच्छा, शुरू कीजिये।"—वह बोली।

"यह बताइये कि आपके 'कोल्होज़ेज़' ( Colbozes ) और 'सोव्होज़ेज़' ( Sovhozes ) क्या हैं? कुछ विदेशी पुस्तकोंमें ये दोनों एक ही अर्थमें व्यवहार किये गये हैं।"

"नहीं, वे एक चीज़ नहीं हैं। कोल्होज़ेज़ बड़े-बड़े सामूहिक खेत हैं, जिन्हें किसानोंने आपसमें सहयोग करके सामूहिक रूप दिया है, और सोव्होज़ेज़ वे बड़े-बड़े खेत हैं, जिनकी मालिक सरकार है।"—उसने उत्तर दिया।

"इन खेतोंके प्रबन्ध और कामका क्या तरीक़ा है?"

'कोल्होज़ेज़में किसान लोग सम्मिलित होकर अपनी ज़मीनें, औज़ार, मेहनत और मवेशी देकर सामूहिक खेती करते हैं और [illegible]को आपसमें बराबर-बराबर बाँट लेते हैं—अधिक भूमि देने या

अब सरकार यह कोशिश कर रही है कि तमाम छोटे-छोटे किसान मिलकर कोल्होज़ेज़—विशाल सामूहिक खेतियाँ—बनाकर खेती करें। सरकार उन्हें ट्रैक्टर ( मोटर-हल ), 'कम्बाइन' की मेशीनें, चुने हुए बीज, बढ़िया खाद आदि ज़रूरी चीज़ें उधार देकर सहायता पहुंचाती है।"

"व्यक्तिगत खेतीको उखाड़ फेंकनेके लिए सरकार क्या-क्या उपाय कर रही है ?"—मैंने पूछा।

"तुम भी कैसे चालाक हो। बराबर हमारी सरकारके दोषोंको ही खोजनेकी कोशिश करते हो।"—मेरी पथ-प्रदर्शिका बोली।

मैं उस समय उसके चेहरेकी भाव-भंगी देखकर हंस पड़ा। मैंने कहा—"नहीं, नहीं, आप मेरे सवालोंको उस रोशनीमें न लें। मैं सच्चे दिलसे पूछ रहा हूं।"

"जी, मैं खूब जानती हूं।"—उसने सिर मटकाते हुए कहा।

"सरकार व्यक्तिगत खेतीको मिटानेके लिए कोई दमन या अत्याचार नहीं करती, केवल सामूहिक खेतीकी सुविधाओं और अच्छी उपजका प्रोपेगेण्डा करती है। अब सामूहिक खेतीका क्रम बढ़ रहा है।"—सुपरिन्टेन्डेन्टने कहा।

"कोल्होज़ेज़में कौन-कौन-सी विशेष सुविधाएं मिलती हैं ?"—मैंने पूछा।

"कोल्होज़ेज़में सरकार ट्रैक्टर तथा खेतीके अन्य यन्त्रोंसे कम भाड़ेपर देती है। चुने हुए बीज कोल्होज़ेज़को और लोगोंकी बनिस्बत पहले तक़सीम किये जाते हैं। कोल्होज़ेज़के किसानोंको

सम्मिलित भोजनालय, क्लब, रेडियो, स्कूल, पुस्तकालय, स्नानागार
स्पताल आदि सारी सुविधायें ठीक उसी तरह मिलती हैं, जिस तर
रोंके कारखानोंमें मजदूरोंको। अपनी सारी शक्तियोंको एकत्रित
देनेसे किसानोंको लाभ भी अधिक होता है।"

"लेकिन जिन किसानोंके पास बड़े-बड़े रकबोंकी खेतियाँ हैं—
मतलब उनसे है, जिनके पास अपनी निजी बड़ी-बड़ी जमीनें
किन जो स्वयं उनपर काम नहीं करते—वे तो इन सामूहिक खेतियों
ामिल होनेके लिए राजी न होते होंगे, क्योंकि ऐसा करनेसे उन
ामदनी कम होगी, साथ ही जमीनपर से उनका अधिकार जा
ेगा, और वे जमींदारसे घटकर मामूली मजदूर रह जायगे।"

"ओह! आपका मतलब 'कुलक' ( Kulaks ) से है।
ोग उनकी परवा नहीं करते। वे तो 'बूर्जुआ' ( पूँजीवादी )
म उन्हें पीस डालना चाहते हैं।"

कुछ रुककर वह बोली—"मुझे भय है कि लोग 'उठ'
हे हैं; भवनके बन्द होनेका समय हो रहा है, इसलिए अब चलिये

हम दोनों उठ खड़े हुए और भवनके म्यूजियम-हालमें गये
वहाँ बड़े-बड़े नक्शों और चार्टों द्वारा सामूहिक खेतोंको
विभिन्न फसलोंको उपजानेवाला रकबा, उपज, आदमीका पनत्व
नाना प्रकारकी अन्यान्य बातें दिखाई गई थीं। उनके ढंग
नवेरीखानों, खादके ढेरों, किसानोंके घरों, बीज सुरक्षित रखने
सरोइयें तथा इसी तरहकी अन्य चीजोंके छोटे-छोटे नमूनोंसे हाल भ
हुआ था। कोषके केसोंमें तरह-तरहके धान, चाय, कपास, गेहूँ, सूर्यमु

भी इसकी फैक्टरी खुली है, जिसका उत्पादन भी इतना ही होगा। लेनिनग्रेडका पूटीलोव कारखाना भी जनवरी १९३२ तक ४०,००० ट्रैक्टर बना चुका है। इनके सिवा और भी कई कारखाने तैयार हो रहे थे, जो शायद अब चालू हो गये होंगे।*

यह 'कृषक-भवन' बहुत प्रभावोत्पादक था। यहांका प्रदर्शन, ट्रैक्टर-उत्पादनके सरकारी आंकड़े, और कोल्होसेजकी बढ़ती हुई संख्या विदेशियोंसे पुकार-पुकार कर कह रही है कि रूसने कृषि उन्नति कर रहो है और तेज़ोसे औद्योगिक रूप धारण कर रही है। लेकिन किसी विदेशीके लिए वहांकी वास्तविक अवस्थाकी जांच करना कठिन है। रहन-सहनके स्टेन्डर्डकी निचाई और भोजनकी कमीसे तो यही जान पड़ता है कि यद्यपि रूस कृषि-प्रधान देश है, फिर भी उसे कृषि-सम्बन्धी उपजकी अभी और जरूरत है। लेकिन मुझसे यह भी बताया गया कि रूसको विदेशियोंके हाथ अपना खाद्य-द्रव्य बेचकर, उनसे खेतोकी मेशीनें खरीदनी पड़ती हैं, इसीलिए अभी तक वह समूचे राष्ट्रको पूरा भोजन पहुंचानेमें असमर्थ है।

---

* रूसी खेतीके सम्बन्धमें अधिक जाननेके लिए लेखककी लिखी हुई अन्य पुस्तक "Modern Agriculture"—Chakravarty Chatterjee & Co. College Street, Calcutta देखिये।

# दसवाँ अध्याय

मैं रातको नौ बजे लौटकर होटल पहुंचा। रूसी जाड़ेमें रातको नौ बजना काफ़ी देर समझी जाती है। मैं सीधा भोजनके कमरेमें पहुंचा। वहां देखा कि वही आस्ट्रेलियन भोजन करने बैठा है। मैं बगलकी कुर्सीपर बैठ गया, और मैंने उससे पूछा—"आपके मित्रोंने कोई तार या रुपया भेजा ?"

"नहीं"—उसने कहा—"मुझे लेनिनग्रेडमें सहायता मिलनेकी आशा है। मैंने उन्हें लेनिनग्रेडका ही पता दिया है, क्योंकि कल सवेरे ही मैं यहांसे लेनिनग्रेड जा रहा हूं।"

"वहां आप ठहरेंगे कहां ? बिना पैसेके होटलवाले तो आपको ठहरायेंगे नहीं ?"

उसने कुछ देर सोचा और जवाब दिया—"मैं उस पथ-प्रदर्शिकासे सहायता लूंगा। मेरे पास उसका पता है। वह बड़ी भली है।"

"हां, और बड़ी दिल्लगीबाज़ भी है।"—मैंने कहा। साथ ही मैंने उसे शादीके दफ़्तरका क़िस्सा कह सुनाया, जहां वह हंसी हंसीमें मेरे साथ शादी करनेको तैयार हो गई थी।

इसपर वह हज़रत उचक-से पड़े;—"क्या ऐसा हुआ ? मैं सीधा उसके पास जाऊंगा। वह मेरे साथ शादी न करेगी ?"

मैं यह प्रस्ताव सुनकर आश्चर्य-चकित रह गया। मैं सोचने

लगा कि क्या यह शख्स मुसीबतके मारे दीवाना हो रहा है; या शायद अत्यधिक निराशाने इंजीनियरीकी सारी अक्ल और सहजबुद्धि हिरन करके इसके मनमें ऐसी लड़कपनकी बात पैदा की है।"

मैंने कुछ पशोपेशके साथ कहा—"लेकिन आप विवाहित हैं।"*

"धर्मके उन सब नियमोंको रद्दीकी टोकरीमें झोंकिये। ऐसे धर्ममें विश्वास नहीं करता, जो मेरा पेट न भर सके। दिनों तक मैं धर्मसे चिपका रहा; लेकिन उसने मेरे लिए क्या किया मैं अपने लिए और अपने परिवारके लिए भोजन तक नहीं जुटा सकता। अगर वह मेरे साथ शादी करले तो मुझे यहीं कोई-न-कोई नौकरी जरूर मिल जायगी। तब मैं अपनी तनख्वाहसे कुछ पत्नीको भेज दिया करूँगा। मैं उसे (पत्नीको) और प्यार करता हूं—" उसकी आँखें चमक उठीं, पर उसने हुए आँसुओंको दबा लिया।

खानसामा मुझसे भोजनका टिकट मांगने आया। उससे कहा—"क्या तुम कृपा करके मुझे इस भुने गोश्तके कुछ रोटी दे सकते हो?"

'क्यों हुजूर?"—खानसामा उसकी ओर आँखें फाड़कर देखने लगा, क्योंकि बढ़िया भुने हुए गोश्तके बदले रद्दी रोटी वेतुकी बात थी।

---

* धर्मने एक बीवी रहते दूसरा विवाह करना नैतिक पाप, और है।

आस्ट्रेलियनने मेरी ओर घूमकर कहा—"मैं,—आप जानते
—कलके भोजनके लिए रोटी चाहता हूं। मैं जानता हूं कि इस वक्त
ना हुआ गोश्त मेरे लिए बढ़िया चीज़ है, लेकिन इस हालतमें कल
के उपवास करना पड़ेगा। मैं कलके लिए रोटी चाहता हूं।"

मुझे यह देखकर सचमुच आश्चर्य हुआ कि भूखके होएके
ामने आदमी किस भांति अपना आत्म-सम्मान और आत्म-संयम
ो बैठता है। खानसामाको उसको मुफ़लिसी समझानेकी कोई
रूरत न थी। उसे अधिकार था कि वह गोश्तके बदले रोटी
े सके।

खानसामा गोश्त ले गया और बदलेमें काली रोटीके केवल दो
ुकड़े दे गया। उसने उन टुकड़ोंको बड़ा हिफ़ाज़तसे कागज़में
पेटकर जेबमें रख लिया।

उस बेचारेकी मुसीबत देखकर मैं मुश्किलसे अपने मुंहमें ग्रास
[illegible] सका। किसी मुसीबतके मारे भूखे आदमीके सामने भोजनका
स्वाद लेना मुझे बड़ा भारी पाप-सा जान पड़ा। मैंने हिचकिचाते
हुए उससे प्रार्थना की—"क्या मैं आपको अपनी रोटी दे सकता हूं?
मुझे यह बिलकुल अच्छी नहीं लगती।"

"आपकी रोटी? नहीं, दिनभरकी घूमघामके बाद आप भूखे
हो रहे होंगे।"

"नहीं, मैं बिलकुल भूखा नहीं हूं; इसके अलावा मुझे यह रोटियां
बिलकुल नहीं भातीं।"—बिना और कुछ कहे-सुने मैंने अपनी रोटियां
उसके हाथमें धर दीं।

लगा कि क्या यह शख्स मुसीबतके मारे दीवाना हो गया है; या शायद अत्यधिक निराशाने इंजीनियरोंकी सारी अक्ल और समझ हिरन करके इसके मनमें ऐसी लड़कपनकी बात पैदा की है।"

मैंने कुछ पशोपेशके साथ कहा—"लेकिन आप तो विवाहित हैं।"*

"धर्मके उन सब नियमोंको रद्दीकी टोकरीमें फेंकिये। मैं ऐसे धर्ममें विश्वास नहीं करता, जो मेरा पेट न भर सके। इतने दिनों तक मैं धर्मसे चिपका रहा; लेकिन उसने मेरे लिए क्या किया! मैं अपने लिए और अपने परिवारके लिए भोजन तक नहीं जुटा सकता। अगर यह मेरे साथ शादी करले तो मुझे यहाँ कोई-न-कोई नौकरी जरूर मिल जायगी। तब मैं अपनी तनख्वाहसे कुछ अपनी पत्नीको भेज दिया करूँगा। मैं उसे (पत्नीको) और बच्चोंको प्यार करता हूँ—" उसकी आँखें चमक उठीं, पर उसने उमड़ते हुए आँसुओंको दबा लिया।

आस्ट्रेलियनने मेरी ओर घूमकर कहा—"मैं,—आप जानते हैं—कलके भोजनके लिए रोटी चाहता हूं। मैं जानता हूं कि इस वक्त भुना हुआ गोश्त मेरे लिए बढ़िया चीज है, लेकिन इस हालतमें कल मुझे उपवास करना पड़ेगा। मैं कलके लिए रोटी चाहता हूं।"

मुझे यह देखकर सचमुच आश्चर्य हुआ कि भूखके होएके सामने आदमी किस भांति अपना आत्म-सम्मान और आत्म-संयम खो बैठता है। खानसामाको उसकी मुफ़लिसी समझानेकी कोई जरूरत न थी। उसे अधिकार था कि वह गोश्तके बदले रोटी ले सके।

खानसामा गोश्त ले गया और बदलेमें काली रोटीके केवल दो टुकड़े दे गया। उसने उन टुकड़ोंको बड़ा हिफ़ाज़तसे कागज़में लपेटकर जेबमें रख लिया।

उस बेचारेकी मुसीबत देखकर मैं मुश्किलसे अपने मुंहमें ग्रास रख सका। किसी मुसीबतके मारे भूखे आदमीके सामने भोजनका स्वाद लेना मुझे बड़ा भारी पाप-सा जान पड़ा। मैंने हिचकिचाते हुए उससे प्रार्थना की—"क्या मैं आपको अपनी रोटी दे सकता हूं? मुझे यह बिलकुल अच्छी नहीं लगती।"

"आपकी रोटी? नहीं, दिनभरकी धूमधामके बाद आप भूखे हो रहे होंगे।"

"नहीं, मैं बिलकुल भूखा नहीं हूं; इसके अलावा मुझे यह रोटियां बिलकुल नहीं भाती।"—बिना और कुछ कहे-सुने मैंने अपनी रोटियां उसके हाथमें धर दी।

"धन्यवाद"—उसका गला रुँध गया।

उस रातको यद्यपि मैंने एक प्याला चायके सिवा
नहीं खाया, फिर भी अपने मनमें मुझे इतना सुख, इतना
रहा था, जितना संसारका सबसे स्वादिष्ट भोजन भी नहीं

---

धर्म-विरोधी भावोंके तेशमें आकर रूसी किसानोंने आइकनों (मूर्तियों) और सलीबोंको जला डाला, बाइबिलोंके पन्नोंने फाड़-फाड़कर सिगरेट बनाकर फूंक डाले, यहां तक कि कब्रोंके पत्थर तक उख [illegible] ढ़ियोंमें लगा दिये।

[illegible] समझता हूं कि बोल्शेविक लोग हिन्दू-धर्मके दर्शन और तर्कोंको नहीं पछाड़ सकते, फिर भी यह मानना पड़ेगा कि उन्होंने ईसाई धर्मके विरुद्ध प्रमाण और तर्क इकट्ठा करनेमें बहुत सफलता पाई है, और यह कोई छोटी बात नहीं है। उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि पवित्र बाइबिलमें,—जो ईसाई धर्मका आधार है—जो अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं, वे बिलकुल गलत हैं। उदाहरणके लिए उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि बाइबिलका यह सिद्धान्त कि सूर्य पृथिवीके चारों ओर घूमता है गलत है, उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि बाइबिलमें सृष्टिकी जो उत्पत्ति बताई गई है वह उससे बिलकुल भिन्न है, जो विज्ञान प्रमाणित करता है। बाइबिलका कथन है कि ईश्वरने ही मनुष्योंमें विभिन्न श्रेणियां पैदा की हैं। बोल्शेविक लोग बाइबिलके इस कथनसे यह सिद्ध करते हैं कि उच्च श्रेणीके लोगोंने समाजके कुछ वर्गोंको हमेशा अपनी गुलामीमें रखनेके लिए ही धर्मकी रचना की थी। यहांपर बाइबिलके विचारों और सिद्धान्तोंकी तसवीरें बनाकर टांगी गई हैं, और उन्हीं तसवीरोंकी बगलमें दूसरी तसवीरें हैं, जिनमें यह दिखाया गया है कि उन्हीं सिद्धान्तों और विचारोंपर विज्ञान क्या प्रमाणित करता है। उन्होंने यहांपर अनेक असली चिट्ठियां और प्रमाण ऐसे एकत्रित कर रखे हैं,

९

जनसाधारणसे वास्तविक सम्बन्ध था। इसलिए पादरियोंके विरुद्ध जो आन्दोलन हुआ, उसका इस शाखापर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। सरकार भी बल-प्रयोग करके इस शाखाका गला घोटनेकी हिम्मत न कर सकी। इसके विपरीत क्रान्तिके प्रारम्भिक वर्षोंमें प्रोटेस्टेन्ट धर्म अधिक फूला-फला, क्योंकि साम्यवाद जिन सामाजिक कर्तव्योंका प्रचार करता था, वे सब इस धर्मके कामोंसे मेल खाते थे। प्रोटेस्टेन्ट धर्म केवल एक सर्वशक्तिमान ईश्वरको सर्वोपरि महत्ताको मानता है। उसकी यह बात रूसी किसानोंको भी रुचिकर थी, क्योंकि जन्मसे ही वे धर्मके प्रभावमें पले थे, इसलिए धर्मको एकदम गोली मार देना उनके लिए कुछ कठिन था। बोल्शेविक लोग प्रोटेस्टेन्ट धर्मकी इस लोकप्रियताको देखकर घबरा उठे, इसलिए उन्होंने अप्रिल १९२९ में एक क़ानून बनाकर किसी धर्मके समर्थनमें व्याख्यान देना बन्द कर दिया, किसी धार्मिक संस्थाका किसी दातव्य कार्यसे कोई सम्बन्ध रखनेकी मनाही कर दी, और धार्मिक संस्थाओंके कार्योंको केवल अपने ही क्षेत्रमें रहनेका कड़ा बन्धन लगा दिया। क़ानूनके अनुसार अब किसी सार्वजनिक संस्थाको अठारह वर्षसे कम आयुके व्यक्तियोंको धार्मिक-शिक्षा देनेकी मनाही है। हाँ, इससे अधिक आयुके व्यक्ति किसी भी धर्मकी पुस्तक पढ़ सकते हैं, अथवा उनपर विश्वास रख सकते हैं; सरकारको इसमें कोई आपत्ति नहीं।

विदेशी कहते हैं कि रूसके तमाम गिरजे ढा दिये गये हैं; धार्मिक व्यक्तियोंको रूसी अधिकारी अपना शत्रु समझते हैं; और जी० पी

धारणसे वास्तविक सम्बन्ध था। इसलिए पादरियोंके विरुद्ध
आन्दोलन हुआ, उसका इस शाखापर कोई विशेष प्रभाव नहीं
सरकार भी बल-प्रयोग करके इस शाखाका गला घोटनेको
न न कर सकी। इसके विपरीत क्रान्तिके प्रारम्भिक वर्षोंमें
टेन्ट धर्म अधिक फूला-फला, क्योंकि साम्यवाद जिन सामाजिक
ोंका प्रचार करता था, वे सब इस धर्मके कामोंसे मेल खाते थे।
टेन्ट धर्म केवल एक सर्वशक्तिमान ईश्वरकी सर्वोपरि महत्ताको
ा है। उसकी यह बात रूसी किसानोंको भी रुचिकर थी,
कि जन्मसे ही वे धर्मके प्रभावमें पले थे, इसलिए धर्मको एकदम
ी मार देना उनके लिए कुछ कठिन था। बोल्शेविक लोग
स्टेन्ट धर्मकी इस लोकप्रियताको देखकर घबरा उठे, इसलिए
ोंने अप्रिल १९२९ में एक क़ानून बनाकर किसी धर्मके समर्थनमें
व्यान देना बन्द कर दिया, किसी धार्मिक संस्थाका किसी दातव्य
ोंसे कोई सम्बन्ध रखनेकी मनाही कर दी, और धार्मिक
थाओंके कार्योंको केवल अपने ही क्षेत्रमें रहनेका कड़ा बन्धन
ा दिया। क़ानूनके अनुसार अब किसी सार्वजनिक संस्थाको
ठारह वर्षसे कम आयुके व्यक्तियोंको धार्मिक-शिक्षा देनेकी मनाही
। हाँ, इससे अधिक आयुके व्यक्ति किसी भी धर्मकी पुस्तकें
सकते हैं, अथवा उनपर विश्वास रख सकते हैं; सरकारको इसमें
ई आपत्ति नहीं। ...[१]

विरोधी कहते हैं कि रूसके तमाम गिरजे ढा दिये गये हैं; धार्मिक
दरियोंको रूसी अधिकारी अपना शत्रु समझते हैं; और जी० पी०

यू० की खुफिया पुलिस हमेशा छायाकी भांति, उनका पीछा किया करती है। मगर मैं इस कथनसे सहमत नहीं हूं; यह तो साम्यवादके विरोधियोंकी विद्वेष-भरी मनगढ़न्त है। मास्कोके रेडस्क्वायरमें, क्रेमलिनके ठीक सामने और सेंट बेसिलके गिरजेकी—जिसमें अब धर्म-विरोधी म्यूज़ियम है—बगलमें मैंने एक छोटा-सा गिरजा देखा है। इस गिरजेमें मैंने स्वयं अपनी आंखोंसे देखा कि कई बुढ़ियां और बूढ़े अत्यन्त श्रद्धासे घुटने टेके भगवानसे प्रार्थना कर रहे थे; शायद वे विनती करते होंगे कि ईश्वर बोल्शेविकोंको सुमति प्रदान करे! हां, आजकल गिरजोंको सरकारसे कोई विशेष सुविधा नहीं मिलती, जैसी कि ज़ारके समयमें मिलती थी। आजकल वे कियायेसे बरी नहीं हैं; उन्हें किराया देना पड़ता है। उनपर करारा टैक्स लगता है। फिर भी, कोई गिरजा अपने क्षेत्रके निवासियोंकी रज़ामन्दीके बिना तोड़ा नहीं जाता। किसी गिरजेको तोड़ने अथवा उसे किसी अन्य प्रकारकी संस्थामें परिवर्तित करनेके पहले वोट लिये जाते हैं, और वोटोंके बहुमतके अनुसार ही काम किया जाता है। यद्यपि यह सच है कि सरकार धर्मको अत्यन्त उपेक्षासे देखती है, फिर भी वह धर्म छोड़ देनेके लिए लोगोंपर प्रत्यक्ष रूपसे कोई दबाव नहीं डालती। वह अपने तमाम साधनोंके द्वारा,—जैसे अखबार, साहित्य, रेडियो, सिनेमा आदि—धर्मके विरुद्ध प्रोपेगेंडा करती है। म्यूज़ियममें चारों तरफ दीवारोंपर पोस्टर और प्लेकार्ड चिपके हुए थे, जिनमें पादरियोंको सरकारके शत्रु रूपमें अंकित किया गया था। उदाहरणके लिए एक पोस्टरमें साम्यवादी सरकार एक जहाज़के रूपमें दिखाई गई थी,

चुम्बन करते, और उन्हें ईश्वर तक पहुंचनेका माध्यम समझते थे। क्रान्तिके बाद जब वे ताबूत-तहखानोंसे बाहर निकाले गये, तो देखा गया कि उनमें अधिकांशमें शव थे ही नहीं। उनकी जगह मसालेके बने हुए नक़ली शरीर रखे थे! क्या आपने म्यूज़ियममें इस तरहकी जाली लाशका नमूना नहीं देखा?"

"हाँ, मैंने देखा है। लेकिन आपकी यह सारी शिकायतें पादरियोंके ख़िलाफ़ हुईं, स्वयं धर्मके विरुद्ध आपके अभियोग कहाँ हैं?"

मेरी इस दलीलको सुनकर वह चकित हो गई। उसकी समझमें पादरीका क़सूर ही धर्मका क़सूर था। मैंने फिर कहा—"धर्म कहता है कि आप अपने पड़ोसियोंके साथ भलाई करें, उनपर दया दिखायें; धर्म कहता है कि आप पाप न करें—"

बीच ही में वह मुझे टोककर बोल उठी—"पाप है क्या? धर्मके अनुसार गिरजेमें शादी किये बिना मियाँ-बीबीकी तरह रहना पाप है; इसके विपरीत दूसरोंका दोहन करना पाप नहीं है, क्योंकि धर्मके अनुसार ईश्वर की ऐसी मंशा है।"

यह सवाल बेढब था। यह कहना कि पाप कहाँपर आरम्भ होता है, सचमुच टेढ़ी खीर है। हिन्दूके लिए जो बात पाप है, मुसलमान या ईसाईके लिए वह पाप नहीं है। यहूदीके लिए जो सत्कर्म है, कैथोलिककी नज़रमें वही दुष्कर्म है।

मैंने कहा - "हरएक धर्ममें कुछ विशेष आचार और रीतियाँ होती हैं। जब धर्म पुराना पड़ जाता है, तो समय और रिवाजके

साथ-साथ उसमें बहुत-सी रूढ़ियाँ और बाह्याचार घुस आते
इसलिए समय-समयपर यह ज़रूरी होता है कि काल और
अनुसार उसमें सुधार किये जायं; लेकिन इसके लिए आपको
मौलिक सिद्धान्तोंको ही दोषी न ठहराना चाहिए।"

"जिन्हें आप धर्मके मौलिक सिद्धान्त कहते हैं, वे क्या हैं
उसने पूछा; लेकिन रुके बिना खुद ही कहती चली गई—'
पड़ोसीसे प्रेम करना, उसे सहायता देना, दूसरोंपर दया कर
आपका मतलब इन्हींसे तो है?"

मैंने सिर हिलाकर स्वीकार किया।

वह उत्साहसे चिल्ला उठी—"तब तो हम रूसी लोग
पृथिवीमें सबसे अधिक धार्मिक जाति हैं। आपका धर्म
सद्वृत्तियोंका अपील करके आपको प्रेरणा देता है कि आप प
मदद करें, अपने मित्रके सुख-दुखमें भाग लें, समाजके अपा
दया दिखायें, और इसीके लिए आप स्कूल, अस्पता
अनाथालय बनाते हैं, कुएँ और तालाब खुदाते हैं, ताकि प
आपके पुण्य-खातेका रकम बढ़े। लेकिन हमारा मज़हब
काम करनेके लिए हमसे केवल अपील ही नहीं करता, ब
मजबूर भी करता है। आप गरीबोंको मदद करते हैं, ह
अपने देशमें किसीको गरीब रहने ही नहीं देते, हम
सब-के-सब बराबरीके दर्जेपर, समान रूपसे, सुखोंका उपभ
हैं। हमारे समाजमें कोई भी अपनेको अपमानित करके भ
माँगता, और न कोई बड़ा बनकर किसीको नीची निगाहसे

उसके आत्म-सम्मानको धक्का पहुंचाता है। हम सब बराबर हैं। अब ग़रीब लोग भी शहरोंमें रह सकते हैं, कोई भी उनसे रत्तीभर घृणा नहीं करता। वे जिससे चाहें शादी कर सकते हैं—चाहे वह कट्टर धर्मका हो या प्रोटेस्टेन्ट। समझे आप?"

मुझे मानना पड़ा कि उनका यह धर्म वास्तवमें महान धर्म है। फिर भी अपनी नवयुवती साथिनको चिढ़ानेकी गरज़से मैंने पूछा—"इस प्रकार आप भी किसी तरहके मज़हबको मानती ही हैं, तब आप यह कैसे कह सकती हैं कि आप लामज़हब हैं?"

उसने तेज़ होकर कहा—"नहीं, हम लोग किसी भी मज़हबको नहीं मानते। हमें तो चाहिए कि अपने कोशसे इस शब्दको ही उड़ा दें। हम लोग कम्यूनिस्ट हैं।"

"तो कम्यूनिज़्म ही आपका मज़हब हुआ। नहीं हुआ?"—मैंने फिर चिढ़ाया।

"हां, आप यह कह सकते हैं।"—वह मुसकरा दी।

ताज़ी गिरी हुई बर्फ़को कुचलते हुए, जो दबकर शक्करकी तरह चिपक जाती थी, हम लोग मोटरपर मज़दूरोंका 'स्टेडियम' देखनेके लिए चले। अब हम शहर छोड़कर, उसके बाहरी भागमें पहुंचे। यहां शहरकी भांति सड़कोंपर गिरी हुई ताज़ी बर्फ़ हटाई नहीं जाती, इसलिए यह जानना भी मुश्किल है कि कौन सड़क है, कौन खेत। मोटर ऊपर-नीचे उचकती हुई, धीमी, चालसे जा रही थी। मिनट-मिनटपर उसके ज़ोरसे फिसल जानेका डर लग रहा था। यह डर बेबुनियाद भी नहीं था, क्योंकि देखा कि रास्तेमें इसी तरह फिसलकर

एक दूसरी मोटर, सड़कके किनारे खड़े हुए, एक नंगे दरख्तसे जा टकराई थी। वह बुरी तरह टूट गई थी, लेकिन सौभाग्यसे सवारियाँ बच गई थीं। चूँकि सड़कपर लोग-बाग चलते-फिरते थे, इसलिए उसपर पड़ी हुई बर्फमें एक बहुत हल्का कत्थई-सा रंग आ गया था। सड़क और आस-पासके मैदानमें भेद करनेवाली, बस, यही एक पहचान थी।

---

[illegible]

[illegible] ( [illegible] ) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आ पड़े।

'[illegible]' नामक और बहुत बड़ा है। यहाँ मज़दूर [illegible] अपने और [illegible] लिए आते हैं। जिस तरह सरकारने मज़दूरोंकी मानसिक और सांस्कृतिक उन्नतिके लिए पुस्तकालयों, क्लबों, थियेटरों, सिनेमा घरों, विज्ञान और संस्कृतिके भवन आदिका प्रबन्ध किया है, उसी तरह उसने लोगोंकी शारीरिक उन्नतिके लिए भी इन्तज़ाम किया है। अतः हरएक क्लब और कारखानेमें एक-एक 'जिमनास्टियम' ( व्यायामशाला ) है। मुझे बताया गया कि गाँवों और कस्बोंके सिवाय शहरके हरएक पब्लिक पार्कमें कसरतके खेल होते रहते हैं। सोवियट सरकारकी इच्छा है कि सारे-के-सारे मज़दूर और किसान मानसिक और शारीरिक—दोनों प्रकारसे स्वस्थ और सुखी रहें, जिससे वे देशके अच्छे नागरिक और लड़ाईके ज़मानेमें अच्छे सिपाही सिद्ध हों। हाल ही में रूसने ख़बर दी थी कि अब रूसके सभी कारख़ाने रायफलें बना रहे हैं और हर शख़्सको उन्हें चलानेकी तालीम दी जा रही है। रूस जानता

है कि वह पूंजीवादी देशोंके बीचमें है—एक ओर जापान है, तो दूसरी ओर जर्मनी, इंग्लैण्ड, आस्ट्रिया आदि अनेक छोटे-बड़े देश हैं,—और ये सबके सब उसके कट्टर दुश्मन हैं। अभी हालमें अमेरिकाने रूसकी सरकारको स्वीकार किया है, और कुछ दूसरे पूंजीवादी देशोंने भी उसके साथ संधियाँ और सुलहनामे किये हैं; लेकिन इनके होते हुए भी रूसको पूंजीवादियोंके हमलोंका डर मिटा नहीं है। रूसियोंने अगणित बार खुले शब्दोंमें घोषणा की है कि वे किसीपर हमलावर होना नहीं चाहते, किसीपर आक्रमण करना नहीं चाहते, फिर भी उन्हें विदेशियोंके हमलोंका, जिनका उन्हें प्रतिक्षण खटका रहता है, सामना करनेके लिए बराबर तैयार रहना चाहिए। हालमें रूसके पूर्वीय सीमान्त—मंचूरिया—में जापानियोंने जो चालें चली हैं, वे रूसको जापानके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर देनेके लिए काफ़ी थीं; लेकिन रूसके मौजूदा डिक्टेटर बहुत ज़्यादा सतर्क हैं। वे केवल अपनी शान और धाक (Prestige) रखनेके लिए लड़ाइयोंमें कोई काम नहीं कर डालना चाहते। लेकिन वे जापानकी इन सब धृष्टतापूर्ण कार्रवाइयोंको हमेशा भी बर्दाश्त नहीं कर सकते; इसलिए वे अपनी पूर्वीय सीमाको बड़ी तेज़ी और बड़े ज़ोरोंसे मज़बूत बना रहे हैं। रूसका पूर्वीय सीमान्त अभी तक बहुत कि[illegible] पड़ा है। अख़बारोंसे मालूम हुआ कि आजकल यू० एस० एस० आर अपने पूर्वीय सीमान्तपर आकर बसनेवाले किसानों और सिपाहियों[illegible] दान दिलवा रहा है। वहाँकी स्थितिको दृढ़ करनेके लिए [illegible] नये-नये कारख़ाने और नई-नई रेलें खोली जा रही हैं। [illegible]

तैयारियोंके लिए रूसको शरीरके स्वस्थ और दिलके मजबूत आदमियोंकी ज़रूरत है—अगर वे सीखे हुए कारीगर और सुसंस्कृत हों, तो और भी अच्छा है। इसलिए साधारण मज़दूर और किसान-श्रेणीके लोगोंकी स्थितिमें उन्नति करनेका विचार कोरमकोर उदारता या परोपकारका ही विचार नहीं है, बल्कि रूसी सरकारके भावी अस्तित्वके लिए भी वह ज़रूरी है।

चूँकि जाड़ेके दिन थे, इसलिए 'स्टेडियम' खाली पड़ा था। उसमें उस समय इमारतके सिवा देखनेके लिए और कुछ था ही नहीं। इमारत नये ढंगकी और सादी है; लेकिन है बहुत बड़ी—हाहाहूती। उसमें हज़ारों दर्शकोंके बैठनेका स्थान है।

---

ाया वसूला जाता है। हाँ, बड़े परिवारवालोंके लिए कुछ
ही जाती है। हरएक आदमी—चाहे वह कम्यूनिस्ट पार्टीका
, या न हो ; चाहे वह कारखानेका मज़दूर हो, या आफ़िसका
मरोंकी जितनी जगह घेरता है, उसके लिए उसे प्रति वर्ग
हिसाबसे भाड़ा देना पड़ता है। लेकिन मुझे बताया गया कि
फ़र्म और एक ही जगहके लिए अलग-अलग लोगोंसे, उन
नीके मुताबिक़, अलग-अलग भाड़ा लिया जाता है। किरायेपर
की स्थितिका भी प्रभाव पड़ता है। कुछ 'को-आपरेटिव'
ं भी हैं, जो 'को-आपरेटिव' प्रणालीपर, सरकारी 'को-आपरेटिव'
या 'म्यूनिसिपल हाउस-फण्ड' से कर्ज़ लेकर बनाई गई हैं। आम
से इन 'को-आपरेटिव' मकानोंका भाड़ा नहीं लगता। 'को-आपरेटिव'
मेम्बरोंसे सिर्फ़ उतना ही लिया जाता है, जिससे इमारतको ठीक
खने तथा कर्ज़ चुकानेका काम चल जाय।
"लेकिन छै वर्ग मीटर या नौ वर्ग मीटर जगह एक आदमीके
आरामसे रहनेके लिए काफ़ी नहीं है।"—मैंने कहा।
"हाँ, हम लोग मानते हैं कि इतनी जगह काफ़ी नहीं है, इसीलिए
तो सरकार यह जानते हुए भी कि अनाड़ी मज़दूरोंसे और जल्दीमें
काम अच्छा नहीं बनता, इतने ज़्यादा मकान बनवा रही है।"
—वह बोली।
"लेकिन यह तो ग़लत सिद्धान्त है। कमज़ोर मकान बनवाकर
आप लोग सिर्फ़ अपना पैसा बरबाद कर रहे हैं। फिर इलाक़े
र जब मज़दूर एक ठिकानेसे दूसरे ठिकाने भेजे जाते हैं, उन

ने लेनिनग्रेडमें देखा था, तो माल-मसाला भी बहुत-कुछ बरबाद
ना होगा। इससे सरकारको नुकसान उठाना पड़ता होगा।"

"हाँ,"—उसने कहा—"लेकिन हमारे मजदूरोंके रहनेके लिए जगह
हाँसे आवे, यही हमारी सबसे पहली समस्या है। फिर आजकल
मजदूर लोग शहरोंमें गाँवोंसे धारा-प्रवाह रूपमें चले आ रहे हैं। आप
जानते हैं कि सन् १९२६ में मास्कोकी आबादी बीस लाख थी; लेकिन
सन् १९३१ में यह बढ़कर साढ़े सत्ताईस लाख आ पहुँची है। इन्हीं
वर्षोंमें लेनिनग्रेडकी आबादीमें भी ३८·१ प्रति सैकड़ेकी वृद्धि हुई है।
हमें इस बढ़ती हुई आबादीके रहनेके लिए जगह देनी ही पड़ेगी।"—
उसने बताया।

"गाँवोंसे शहरोंकी ओर लोग जो इतने जोरोंसे आ रहे हैं, इसका
कारण क्या है?"—मैंने पूछा।

"शायद इसका कारण शहरकी जीवनका आकर्षण है।"

"लेकिन यह आकर्षण तो जारके जमानेमें भी था। उस समय
शहरी जीवनका आनन्द लेनेके लिए लोग इतनी तादादमें क्यों नहीं
आते थे?"—मैंने पूछा।

"उस समय उन्हें इस जीवनका पूरा आनन्द उपभोग करनेकी
इतनी सुविधा नहीं थी, जितनी अब है।"—उसने कहा।

"आप कहिये, मैं समझता हूँ कि इसमें कुछ और कारण
भी है।"—मैंने कहा—"आपकी सरकार कारखानोंके मजदूरोंकी
[illegible]
[illegible]

कार्यक्रमके पहले सरकार मजदूरोंके लिए किसानोंसे जबर्दस्ती अन्न वसूल करती थी, और उन जिलोंपर ज्यादा ध्यान देती थी, जिनमें कारखाने अधिक हैं।"

"हम रूसको औद्योगिक देश बनाना चाहते हैं, इसलिए कारखानोंपर अधिक ध्यान दिये बिना कोई और चारा ही नहीं है।"—उसने कहा।

"लेकिन मुझे डर है कि आप लोगोंने कारखानोंके मजदूरोंकी भलाईके जोशमें बेचारे किसानोंको भुला ही दिया, इसीलिए वे लोग अच्छे रहन-सहन और सरकारकी कृपा प्राप्त करनेकी लालचमें देहातोंको छोड़-छोड़कर शहरोंमें आकर बस रहे हैं।"—मैंने कहा।

"हाँ, कुछ हद तक यह ठीक है; "—उसने स्वीकार किया—"लेकिन अब सरकार किसानोंकी ओर आवश्यक ध्यान दे रही है।"

शायद उसका कथन सच भी था।

होटल वापस आते वक्त उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं 'कामरेड कोर्ट' देखूँगा।

"यह क्या होता है?"—मैंने पूछा।

"सभी कारखानों अथवा अन्य सामूहिक संस्थाओंमें मजदूर लोग अपनी अदालतें बनाकर, अपने किसी 'कामरेड' (सहकर्मी) के दोषोंकी जाँच करते हैं।"

"मैं समझता हूं कि यह एक तरहकी पंचायत होगी; लेकिन अगर कोई इस पंचायतके फैसलेको न माने, तो पंचायत अपना फैसला मनवानेके लिए क्या कार्रवाई करती है?"—मैंने पूछा।

"ओह, वे पंचायतके फैसलेको माननेसे इनकार नहीं कर सकते। वे जानते हैं कि उसके फैसलेके पीछे उनकी इकाईकी समूची सामूहिक शक्ति है।"

"इकाईसे आपका मतलब क्या कम्यूनिस्ट पार्टीकी मीटिंगोंसे है, जिनके बारेमें मैंने विदेशी पुस्तकोंमें बहुत-कुछ पढ़ रखा है ?"

"नहीं, नहीं। वे बिलकुल जुदा हैं। 'कामरेड कोर्ट' में केवल एक ही 'इकाई' के सदस्योंके मामले होते हैं; लेकिन पार्टी-मीटिंगोंमें पार्टीके सारे सदस्य मिलकर महत्त्वपूर्ण बातोंपर वाद-विवाद करते हैं, अथवा पार्टीके सदस्योंके दोषोंकी जाँच करते हैं। उनमें कोई भी व्यक्ति—चाहे वह कम्यूनिस्ट हो, या न हो—किसी भी पार्टीवालेके विरुद्ध कोई भी सारपूर्ण शिकायत पेश कर सकता है। शिकायत पेश होनेपर अभियुक्त सदस्यको अपना सारा दोष स्वीकार करना पड़ता है; वह कोई भी बात छिपाकर नहीं रख सकता। पार्टीकी मीटिंग तो केवल पार्टीवालोंपर नियन्त्रण रखनेके लिए है।"—उसने बताया।

"मैं समझता हूं कि यह दोष स्वीकार करना भी ईसाइयोंके पाप-स्वीकारके सिद्धान्त (Theory of Confession) की भाँति ही होगा।"

"नहीं, हर्गिज़ नहीं। ईसाई तो केवल धर्म-पिता (पादरी) के सामने ही अपने पाप स्वीकार करते हैं, और वह उनके ईश्वरसे क्षमा दिलानेके लिए काफ़ी होता है; मगर हमारे यहां ऐसी बात नहीं। हमारे यहां तो आपको सारी बातें स्वीकार करनी पड़ती हैं, कोई भी

बात छिपा नहीं सकते। यदि आप किसी बातको छिपायें, तो दूसरा उसका भेद खोल सकता है। फिर हमारे यहाँ अपराध स्वीकार करनेके यह मानी नहीं है कि पार्टी हमेशा अपराधोंको माफ़ ही कर दे। अपराधकी गम्भीरताके अनुसार पार्टी चाहे तो उसे पार्टीसे निकाल दे सकती है, या किसी निश्चित कालके लिए उसे पार्टीसे मुअत्तिल कर सकती है। अपराधोंकी यह स्वीकृति दिमाग़ और सहजबुद्धि रखनेवाले आदमियोंके सामने होती है, गूंगे-बहरे बुद्धू या दूसरेकी कमाईपर जीनेवाले मक्कार पादरीके सामने नहीं होती।"—उसने बिगड़कर कहा।

कुछ ठहरकर मैंने कहा—"मैं कुछ और चीज़ देखना पसन्द करूँगा—कोई और संस्था जो आपके 'कामरेड कोर्ट'से अधिक महत्वपूर्ण हो।"

"अच्छी बात है। आज रातमें हम लोग 'नाइट सेनाटोरियम' देखने चलेंगे।"

"यह बेहतर होगा।"—मैंने कहा। इस तरह यह तै हो गया कि हम लोग रातमें वहाँ जायँगे।

दोपहरके भोजनके बाद मैंने विश्राम किया। मेरी खिड़कीके सामने मास्कावा नदी, रेड स्क्वायर और अजीब आकारका सेंट बेसिलका गिरजा दीख पड़ता था। शहरकी दीन-हीन शक्ल यह बताती थी अनेक वर्षोंके प्रयत्नके बाद जाकर यह शायद बर्लिन या पेरिसकी—यहाँ तक कि कलकत्ते तककी—बराबरी करने योग्य हो सकेगा। शहरमें भीड़-भाड़ नहीं थी ; पत्थर-जड़ी सड़कोंपर ज़्यादा

आमद-रफ्त भी नहीं थी। घोड़ा-गाड़ियां और ट्रामें बहुत ढीली-ढाली दीख पड़ती थीं। लोग प्रत्यक्ष रूपसे दरिद्र और गन्दे दिखाई देते थे। फिर भी गरीबों यानी प्रोलेटेरिएटको यहां जितनी अधिक सुविधायें प्राप्त हैं, उतनी दुनियाके किसी और मुल्कमें नहीं हैं। यह सच है, और रूसी भी इसे मानते हैं, कि उनके रहन-सहनका स्टैन्डर्ड अभी तक बहुत नीचा है; परन्तु उन्हें यह सच्ची आशा है कि दूसरा पंचवर्षीय कार्यक्रम उनके स्टैन्डर्डको ऊंचा कर देगा। फिर भी आजकल यहांके मज़दूरोंका जीवन पहलेकी बनिस्बत बहुत अच्छा है। अब वे कीड़े-मकोड़े-भरे, टूटे-फूटे झोपड़ोंके बजाय साफ़-सुथरी आधुनिक इमारतोंमें रहते हैं। उनके बच्चोंको पालने और तालीम देनेके लिए 'क्रेशे' और किंडरगार्टन स्कूल हैं। अब उन्हें कोई भी सरकारी ओहदा प्राप्त करनेका अधिकार है। उनके लिए मुफ़्ती अस्पताल, पुस्तकालय और क्लब खुले हैं। भूखका हौआ अब उनकी आंखोंके सामने नहीं नाचता; क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें निश्चित भोजन सस्ते दामोंमें मिलेगा ही। जिन कारखानोंमें वे मेहनत करते हैं, उनके इन्तज़ाममें उनका हाथ और उनकी आवाज़ है। काममें वे इंजीनियर या मैनेजरकी बनिस्बत भले ही कम होशियार हों, लेकिन हैसियतमें वे उनसे हर्गिज़ नीचे नहीं समझे जाते। वे जब चाहें तब मैनेजर या इंजीनियरसे मुलाक़ात कर सकते हैं। वे अपने ऊंचे अफ़सरोंकी आलोचना कर सकते हैं—चुपके-चुपके दबी आवाज़से नहीं, बल्कि खुल्लमखुल्ला और ज़ोरके साथ खुली मीटिंगोंमें, कारखानोंके 'दीवारी अख़बारों' में और आर० के० आई० (Peoples' Commis-ariate

बात छिपा नहीं सकते। यदि आप किसी बातको छिपायें, तो दू
उसका भेद खोल सकता है। फिर हमारे यहाँ अपराध स्वी
करनेके यह मानी नहीं हैं कि पार्टी हमेशा अपराधीको माफ़ ही
दे। अपराधकी गम्भीरताके अनुसार पार्टी चाहे तो उसे पार्
निकाल दे सकती है, या किसी निश्चित कालके लिए उसे पार्
मुअत्तिल कर सकती है। अपराधोंकी यह स्वीकृति दिमाग
सहजबुद्धि रखनेवाले आदमियोंके सामने होती है, गूँगे-बहरे बुद्
दूसरेकी कमाईपर जीनेवाले मक्कार पादरीके सामने नहीं होती।"—
उसने बिगड़कर कहा।

कुछ ठहरकर मैंने कहा—"मैं कुछ और चीज़ देखना पसन्
करूँगा—कोई और संस्था जो आपके 'कामरेड कोर्ट' से अधिक महत्
पूर्ण हो।"

"अच्छी बात है। आज रातमें हम लोग 'नाइट सेनाटोरियम'
देखने चलेंगे।"

"यह बेहतर होगा।"—मैंने कहा। इस तरह यह तै हो गया
कि हम लोग रातमें वहाँ जायेंगे।

भोजनके बाद मैंने विश्राम किया। मेरी खिड़कीसे
नदी, रेड स्क्वायर और अजीब आकार
दीख पड़ता था। शहरकी तीन-तीन रङ
वर्षोंके प्रयत्नके बाद जाकर यह शायद बर्लिन
तक कि कलकत्ते तकको—बराबरी करने योग्य हो
भीड़-भाड़ नहीं थी; पत्थर-जड़ी सड़कोंपर स्वच्छ

आमद्-रफ़्त भी नहीं थी। घोड़ा-गाड़ियां और ट्रामें बहुत ढीली-ढाली दीख पड़ती थीं। लोग प्रत्यक्ष रूपसे दरिद्र और गन्दे दिखाई देते थे। फिर भी ग़रीबों यानी प्रोलेटेरिएटको यहां जितनी अधिक सुविधायें प्राप्त हैं, उतनी दुनियाके किसी और मुल्कमें नहीं हैं। यह सच है, और रूसी भी इसे मानते हैं, कि उनके रहन-सहनका स्टैन्डर्ड अभी तक बहुत नीचा है; परन्तु उन्हें यह सच्ची आशा है कि दूसरा पंचवर्षीय कार्यक्रम उनके स्टैन्डर्डको ऊंचा कर देगा। फिर भी आजकल यहांके मज़दूरोंका जीवन पहलेकी बनिस्बत बहुत अच्छा है। अब वे कीड़े-मकोड़े-भरे, टूटे-फूटे झोपड़ोंके बजाय साफ़-सुथरी आधुनिक इमारतोंमें रहते हैं। उनके बच्चोंको पालने और तालीम देनेके लिए 'क्रेश' और किंडरगार्टन स्कूल हैं। अब उन्हें कोई भी सरकारी ओहदा प्राप्त करनेका अधिकार है। उनके लिए मुफ़्ती अस्पताल, पुस्तकालय और क्लब खुले हैं। भूखका हौआ अब उनकी आंखोंके सामने नहीं नाचता; क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें निश्चित भोजन सस्ते दामोंमें मिलेगा ही। जिन कारखानोंमें वे मेहनत करते हैं, उनके इन्तज़ाममें उनका हाथ और उनकी आवाज़ है। काममें वे इंजीनियर या मैनेजरकी बनिस्बत भले ही कम होशियार हों, लेकिन हैसियतमें वे उनसे हर्गिज़ नीचे नहीं समझे जाते। वे जब चाहें तब मैनेजर या इंजीनियरसे मुलाक़ात कर सकते हैं। वे अपने ऊंचे अफ़सरोंकी आलोचना कर सकते हैं—चुपके-चुपके दबी आवाज़में नहीं, बल्कि खुल्लमखुल्ला और ज़ोरके साथ खुली मीटिंगोंमें, कारखानोंके 'दीवारी अख़बारों' में और आर० के० आई० (Peoples' Commissariate

for Workers' & Peasants' Inspection)के सामने। यह आर० के० आई० रूसमें एक बड़ी शक्तिशाली संस्था है, जिसे तमाम कारखानोंके काम-काज और मज़दूरोंका मुआयना करनेका सर्वोपरि अधिकार है। हर मज़दूरको ट्रेड-यूनियनका मेम्बर होना पड़ता है। दुनियाके और सब देशोंमें ट्रेड-यूनियनोंका काम कारखानोंके मालिकोंसे ( Employers ) लड़ना-भिड़ना है; मगर यहाँ न तो कोई मालिक ही है, और न कोई मज़दूरोंकी भाजी मारनेवाला ही, अतः यहाँ लड़ाई-भिड़ाईकी बात ही नहीं रह जाती। मज़दूरोंको कामपर लगानेका काम कार्यदात्री संस्थाओं (Employing bodies) के सुपुर्द है। इसलिए रूसी ट्रेड-यूनियन केवल मज़दूरोंके हितोंकी रक्षा करने और कार्यदात्री संस्थाओंको सहायता पहुंचानेके लिए ही हैं। भिन्न-भिन्न बड़े-बड़े उद्योगोंके लिए अलग-अलग ट्रेड-यूनियन हैं, और मज़दूरोंको अपने-अपने उद्योगोंकी ट्रेड-यूनियनका सदस्य होना पड़ता है। कार्यदात्री संस्थाएँ इन्हीं ट्रेड-यूनियनोंके साथ कामके ठेके या ठहराव कर लेती हैं। यदि किसी मज़दूरकी शिकायत कारखानेके प्रबन्धकर्ता दूर नहीं करते, तो वह 'फैबकम' (Fabckom) या 'ज़ैवकम' (Zavcom) अर्थात् 'कारखाना-कमेटी' के पास फरियाद कर सकता है। इस 'कारखाना-कमेटी' के पीछे सारे मज़दूरोंकी सम्मिलित शक्ति है, इसलिए वह रूसमें वास्तवमें एक ज़बरदस्त ताक़त रखनेवाली इकाई है।

कारखानोंमें काम करनेकी दशामें भी बहुत सुधार हुआ है। सभी कारखानोंमें रोगियोंके लिए अस्पताल और मज़दूर-माताओंके चार

वर्षसे कम उम्रके बच्चोंके लिए 'क्रेशे' या शिशुशालाएँ हैं। कुछ कारखानोंने ऐसी शिक्षाका प्रबन्ध भी कर रखा है, जिसके द्वारा कारखानेका मामूली मज़दूर भी अध्ययन करके कारीगर, मिस्त्री (Technician), इंजीनियर, वकील, रसायनज्ञ या अध्यापक बन सकता है। रूसने सात दिनका हफ़्ता उड़ा दिया है। सभी काम करनेवालोंको —चाहे वे कारखानेमें काम करते हों, या आफ़िस तथा स्कूलमें—पाँच दिन काम करना पड़ता है, और छठे दिन ही उनका 'इतवार' यानी छुट्टीका दिन आ जाता है। लेकिन सभी संस्थाओं या मज़दूरोंकी छुट्टीका दिन एक ही नहीं होता। इससे, मेरी समझमें, बड़ी परेशानी होती होगी—कम-से-कम उन लोगोंको जिन्होंने हाल ही में शादी की होगी या जिनका प्रेम-सम्बन्ध बड़े जोशसे चल रहा होगा। अक्सर ऐसा हो जाता होगा कि जिस दिन मियाँको छुट्टी होगी, उस दिन बीवी बेचारी कारखानेमें जुटी होगी। फिर मज़दूरोंको अलग-अलग टोलियोंमें बारी-बारीसे दिन और रातमें काम करना पड़ता है, इसलिए यह भी सम्भव है कि पतिदेव दिनमें कामपर जाते हों और रातमें छुट्टी पाते हों, तो बीवीको दिनमें छुट्टी और रातमें काम करना पड़ता हो। ऐसी दशामें पति-पत्नीको एक दूसरेसे मिलनेका मौक़ा भी मुश्किलसे मिलता होगा। यह बात पारिवारिक जीवनके लिए बहुत हानिकर है; लेकिन मैं समझता हूं कि ऐसी नौबत बहुत कम—शायद ही कभी—आती होगी। साल-भरमें केवल पाँच राष्ट्रीय त्यौहार होते हैं। हल्के उद्योग-धन्धोंमें मज़दूरोंको साल में दो हफ़्तेकी, और भारी उद्योगोंमें चार हफ़्तेकी पूरी तनख्वाह समेत

छुट्टी मिलती है। लेकिन यह याद रहे कि ये हफ़्ते रूसी हफ़्ते—
दिनवाले—होते हैं। बीमारीमें और मज़दूर-माताओंको गर्भावस्था
वेतन-सहित विशेष छुट्टी मिला करती है। बीमारीमें कार्यदा
संस्था मज़दूरको पूरी तनख़्वाह दे देती है; लेकिन वह इस तनख़्वाह
रक़मको 'सामाजिक बीमा-विभाग'से वसूल लेती है। यह बीमा-विभाग
मज़दूरोंसे कोई 'प्रीमियम' आदि नहीं लेता—बिल्कुल मुफ़्त है।
इसके विपरीत कार्यदात्री संस्थाएं मज़दूरोंको तनख़्वाहकी जितनी
रक़म देती हैं, उसका १४ प्रति सैकड़ा उन्हें इस बीमा-विभागको देना
पड़ता है; उसीसे बीमा-विभागका काम चलता है। यह बीमा-
विभाग मज़दूर माताओंको प्रसवकालकी छुट्टीके समय पूरी तनख़्वाहके
अलावा १० रूबलसे १२ रूबल तक भत्ता भी देता है। जो मज़दूर
कारख़ानेमें काम करते वक़्त चोट-चपेट खाकर अपाहिज और बेकार
हो जाते हैं, उन्हें, और ६० वर्षकी उम्रसे ऊपरके सभी मज़दूरोंको
ज़िन्दगी-भर इस बीमा-विभागसे गुज़ारा मिलता है, और यही विभाग
मज़दूरोंके लिए स्वास्थ्यशालाएँ, विश्रामशालाएं और शिशुशालाएं
आदि चलाता है।

जहां तक मुझे मालूम हुआ है, रूसमें मामूली अनाड़ी (Unskilled)
मज़दूरको ७० रूबलसे १०० रूबल तक, कारीगर (Skilled)
१५० रूबलसे २५० रूबल तक, और रूसी इन्जीनियरको
१,००० रूबल तक तनख़्वाह मिलती है। विदेशी अनुभवि-
योंको इससे भी अधिक मिलता है। जैसा कि मैं पहले
हूं, कुछ कलाकार और लेखक इससे कहीं ज़्यादा कमाते हैं।

लेकिन यह न समझिये कि तनख़्वाहोंमें इतना फ़र्क़ होनेसे लोगोंके रहन-सहनके स्टेन्डर्डमें भी इतना ही फ़र्क़ होगा। यों समझिये कि अगर एक इञ्जीनियर ८०० रूबल कमाता है, और एक मामूली मज़दूर सिर्फ़ १०० रूबल कमाता है, तो इसका यह मतलब नहीं कि इञ्जीनियर साहब मज़दूरकी बनिस्बत आठगुना आराम पा सकें। हर्गिज़ नहीं। यहाँ हर चीज़के दाम आमदनीके मुताबिक़ देने पड़ते हैं। मान लीजिये कि १०० रूबल कमानेवाला मज़दूर एक कमरेका किराया १० रूबल देता है, तो ८०० रूबल कमानेवालेसे वैसे ही कमरेका किराया ८० रूबल लिया जायगा। मामूली दर्जेकी और बहुत ज़रूरी खाने-पीनेकी चीज़ोंकी एक फ़ेहरिस्त बनी हुई है, और उन चीज़ोंके दाम भी मुक़र्रर हैं। लेकिन उन चीज़ोंके अलावा अगर आप कुछ ख़रीदना चाहें, तो अतिरिक्त चीज़के दाम आपकी आमदनीके मुताबिक़ बड़े ज़ोरोंसे बढ़ते जाते हैं। इस तरह सरकार दाहने हाथसे जो देती है, पानेवालेके जीतेजी, बायें हाथसे जहाँ तक मुमकिन होता है, खींच लेती है और मरनेके बाद तो क़रीब-क़रीब सभी सरकारका हो जाता है। सोवियट वालोंकी यही कैंची तो बन और ज़्यादा ख़र्च पानेवाली मछलियोंको बराबर रखती है।

पुरसतमें एक-अफ़सरसे बातचीत करते हुए मैंने कहा—"मैं समझता हूं कि आपकी सरकार कम्यूनिस्टोंको हर बातमें सबसे बढ़ के तरजीह देती है, और इस तरह अप्रत्यक्ष रूपसे जनसाधारणको मजबूर करती है कि वे कम्यूनिस्ट पार्टीमें शामिल हों।"

"ठीक। यह स्वाभाविक ही है कि जिन्होंने ज़ारके ज़मानेमें

जनसाधारणकी हालत सुधारनेके लिए कम्यूनिस्ट रहकर मौकों सही और खतरे उठाये, उन्हें अब सबसे पहले चांस मिले। फिर भी कारखानोंमें बहुतसे ऐसे लोग भी हैं, जो पार्टीमें शामिल नहीं हैं। उनमें से कुछ तो ज़िम्मेवार सरकारी ओहदोंपर भी प्रतिष्ठित हैं।"

मैंने फिर पूछा—"अच्छा, यह बताइये कि 'पायनियर' (Pioneer), 'कामसोमोल' ( Komsomal ), और 'शॉक ब्रिगेड' ( Shock Brigade ) क्या हैं ? मैंने उनके बारेमें सुना तो बहुत कुछ है, मगर ठीकसे जानता नहीं कि वे हैं क्या ?"

"ये सब अलग-अलग उम्रके मेम्बरोंके लिए अलग-अलग कम्यूनिस्ट संस्थाएँ हैं। सबसे कम उम्रके कम्यूनिस्ट बच्चे 'अक्टूबरी बच्चे' ( October Children ) कहलाते हैं। आप जानते हैं कि क्रान्ति अक्टूबरके महीनेमें हुई थी। उनसे बड़ी उम्रके लड़के-लड़कियाँ 'पायनियर' ( Pioneer ) कहलाती हैं ; चौबीस वर्ष तककी उम्रके नौजवान युवक-युवतियाँ 'नौजवान कम्यूनिस्ट लीग' की मेम्बर होती हैं, जिन्हें आमतौरपर 'कामसोमोल' कहते हैं। इस संस्थाके सदस्य जब कोई महत्त्वपूर्ण काम करके अपनेको योग्य सिद्ध कर देते हैं, तब वे कम्यूनिस्ट पार्टीमें भर्ती किये जाते हैं। कम्यूनिस्टको पार्टीकी इच्छानुसार अपने सारे व्यक्तिगत सुखोंका बलिदान कर देना पड़ता है। यही तो कठिन काम है।"

"आप भी कम्यूनिस्ट हैं ?"—मैंने पूछा।

"निश्चय ही—नौजवान कम्यूनिस्ट।"—उसने कहा। गर्वसे ..की आँखें चमक उठीं।

रूसी 'तूफानी दल' (Shock Brigade) का एक मजदूर

जनसाधारणकी हालत सुधारनेके लिए कम्यूनिस्ट रहकर मौंकी सही और खतरे उठाये, उन्हें अब सबसे पहले पास मिले। फिर भी कारखानोंमें बहुतसे ऐसे लोग भी हैं, जो पार्टीमें शामिल नहीं हैं। उनमें से कुछ तो ज़िम्मेवार सरकारी ओहदोंपर भी प्रतिष्ठित हैं।"

मैंने फिर पूछा—"अच्छा, यह बताइये कि 'पायनियर' (Pioneer), 'कामसोमोल' ( Kamsomal ), और 'शॉक ब्रिगेड' ( Shock Brigade ) क्या हैं? मैंने उनके बारेमें सुना तो बहुत कुछ है, मगर ठीकसे जानता नहीं कि वे हैं क्या?"

"ये सब अलग-अलग उम्रके मेम्बरोंके लिए अलग-अलग कम्यूनिस्ट संस्थाएँ हैं। सबसे कम उम्रके कम्यूनिस्ट बच्चे 'अक्टूबरी बच्चे' ( October Children ) कहलाते हैं। आप जानते हैं कि क्रान्ति अक्टूबरके महीनेमें हुई थी। उनसे बड़ी उम्रके लड़के-लड़कियाँ 'पायनियर' ( Pioneer ) कहलाती हैं; चौबीस वर्ष तककी उम्रके नौजवान युवक-युवतियाँ 'नौजवान कम्यूनिस्ट लीग' की मेम्बर होती हैं, जिन्हें आमतौरपर 'कामसोमोल' कहते हैं। इस संस्थाके सदस्य जब कोई महत्त्वपूर्ण काम करके अपनेको योग्य सिद्ध कर देते हैं, तब वे कम्यूनिस्ट पार्टीमें भर्ती किये जाते हैं। कम्यूनिस्टको पार्टीकी इच्छानुसार अपने सारे व्यक्तिगत सुखोंका बलिदान कर देना पड़ता है। यही तो कठिन काम है।"

"आप भी कम्यूनिस्ट हैं?"—मैंने पूछा।

य हाँ—नौजवान कम्यूनिस्ट।"—उसने कहा। गर्वसे खें चमक उठीं।

रूसी 'तूफानी दस्ते' (Stock Brigade) का एक मजदूर

"यह 'शाक ब्रिगेड' (तूफ़ानी दस्ता) क्या है ?"—मैंने पू

"पार्टीके सदस्योंके किसी दलको एक सुनिश्चित योजना
जाती है, और जब वे उस योजनाको पूरा कर दिखाते हैं,
'शाक ब्रिगेड' के नामसे उनका सम्मान किया जाता है, य
'विजयका झंडा' दिया जाता है।"—उसने बताया।

---

# चौदहवाँ अध्याय

ट्रामकी सड़कसे कुछ गलियां पार करके, जिनमें रोशनीका इन्तज़ाम ठीक नहीं था, हम लोग चन्द मिनटमें ही 'नाइट सेनाटोरियम' (रात्रि स्वास्थ्यशाला) में पहुंच गये। हम पहले जिस कमरेमें दाखिल हुए, वह भोजनका हाल था। सभी कमरोंमें 'सेन्ट्रल हीटिंग' प्रणालीसे गर्मी पहुंचानेका इन्तज़ाम था। पथ-प्रदर्शिकाने संस्थाकी इन-चार्जको बुलाया। उसने शीघ्र ही आकर हमें सारी संस्था दिखलाई। सीढ़ियोंके ऊपर चढ़ते वक्त उसने, शायद कोई कमरा दिखलानेके लिए, दाहनी तरफ़के कमरेका दरवाज़ा खटखटाकर उसे खोला। लेकिन दरवाज़ा खोलते ही भीतरसे किसी स्त्रीकी चीख सुनाई पड़ी। उसने फ़ौरन ही कुछ बड़बड़ाकर दरवाज़ा बन्द कर दिया; ख़ैर, हम लोग ऊपर चढ़े। पहली मंज़िलपर, ज़ीनेकी दाहनी ओरको, मुझे एक छोटा कमरा दिखलाया गया। इस कमरेमें हररोज़ सेनाटोरियममें रहनेवालोंकी परीक्षा की जाती है। उनका टेम्परेचर, नब्ज़ और वज़न आदि बातें बाक़ायदा लिखी जाती हैं। इन-चार्ज स्वयं यह सब हिसाब रखती है। इसके बाद हम लोग बैठकख़ानेमें पहुंचे। वहां रेडियोके सेट और समाचारपत्र रखे हुए थे। चूंकि रातमें आठ बज चुके थे, इसलिए बैठकख़ाना ख़ाली पड़ा था, सभी सदस्य अपने-अपने बिस्तरोंपर थे। इन-चार्जने सोनेवाले कमरोंके दरवाज़े खटखटाये और उन्हें खोला। पुरुष और स्त्रियां अलग-अलग कमरोंमें थीं। सबके

साफ़-सुथरे बिछौनोंपर सो रहे थे। एक कमरेमें एक नर्सके
र कुछ बच्चे भी थे। चूँकि रोगी सोये हुए थे, इसलिए मुझे यह
म्मत न पड़ी कि मैं उनसे प्रश्न करके उन्हें परेशान करूँ।
ग फिर नीचे आए। वहाँ मुझे एक छोटा कमरा दिखलाया गया,
समें रोगी अपने कारखानेके गन्दे कपड़े उतारकर रख देते हैं। इस
ओर देखनेसे मालूम हुआ कि इमारतका सदर दरवाज़ा इसी तरफ़ है।
हम लोग पीछेके दरवाज़ेसे दाखिल हुए थे, और इसीलिए पहले
भोजनके कमरेमें पहुँचे थे। गन्दे कपड़ोंवाले कमरेसे लगा हुआ एक
हाल था, जिसमें गुसलखाना था। इसमें ठंडे और गर्म पानीके नल
लगे हुए थे। जहाँ तक मुझे याद है, स्त्री-पुरुषोंके अलग-अलग
नहानेके लिए पार्टीशन लगा हुआ था। शायद ऊपर चढ़ते वक्त
इन-चार्ज महिलाने इसी हालका दरवाज़ा खोला था; उस समय
उसमें कोई स्त्री नहा रही होगी, वही चीख उठी होगी।

मज़दूर यहाँ आकर अपने गन्दे कपड़े उतारकर इस गुसलखाने
... हैं, और फिर सेनाटोरियमके साफ़ कपड़े पहन लेते हैं। फि
... देर तक बैठकखानेमें आराम करके—जहाँ वे अखबार पढ़ते
... सुनते हैं या किसी योजनापर वाद-विवाद करके अपना स
... हैं—वे साढ़े सात बजे भोजन करते हैं, और सारी
... उसे सेनाटोरियममें बिताकर सुबह अपने-अपने कारखा
... पर चले जाते हैं। दोपहरका भोजन वे कारखानोंमें ही
... और शामके पहले फिर इस सेनाटोरियममें वापस नहीं
इसी तरह स्कूलके छात्र भी यहाँ रहते हैं, फ़र्क यह है कि उन्हें र

भोजन साढ़े सात बजेके बजाय साढ़े छै बजे ही मिल जाता है।

यहाँ यह बतला देना ज़रूरी है कि यह सेनाटोरियम कोई अस्पताल नहीं है। जिन मज़दूरोंकी तबियत कुछ खराब रहती है, या जिन्हें बीमारी होनेका ज़्यादा खतरा है, अथवा जो शरीरसे ही कमज़ोर होते हैं, और जिन्हें अपना स्वास्थ्य सुधारनेके लिए अच्छे भोजन और अच्छे रहन-सहनकी ज़रूरत होती है, वे इस सेनाटोरियममें रखे जाते हैं। लेकिन इसके लिए उन्हें कारखानेके डाक्टरसे सर्टिफिकेट लेना पड़ता है। स्कूलके लड़कोंको स्कूलके डाक्टरसे सर्टिफिकेट मिलता है। यहाँ मामूली भोजन—जिसमें तीन चीज़ें होती हैं—दिया जाता है; लेकिन ग़रीब मज़दूरोंके लिए यह मामूली भोजन भी उनके घर या कारखानेके भोजनसे निश्चय ही अच्छा होता है। यहाँका रहन-सहन भी काफ़ी अच्छा है। सभी कमरे और बिछौने एक दम साफ़-सुथरे थे। यह सेनाटोरियम बिलकुल मुफ़्त है। इसका सारा खर्च सामाजिक बीमा-विभाग उठाता है। रूसी सरकारका स्वास्थ्य-विभाग इसे डाक्टर प्रदान करता है; लेकिन उनकी तनख्वाह बीमा-विभाग देता है। चूंकि रूसी कारखाने चौबीसों घंटे चलते हैं, और मज़दूरोंके दल उनमें बारी-बारीसे दिन और रातमें काम करते हैं, इसलिए इस सेनाटोरियममें भी अलग-अलग वक़्तोंमें मज़दूरोंके अलग-अलग दल आते हैं। मुझे बतलाया गया कि मास्को ज़िलेमें इस तरहके छै सेनाटोरियम हैं, और इस बातमें शायद मास्को ही सबमें अग्रसर है।

कम्यूनिटी-हाउस—मास्को



मजदूरोंका एक क्लास-रूम

और रूसके भावी स्वप्नोंकी बातें बता रही थी। रूसकी ये भावी आशायें—भावी नागरिक—बड़ी उत्कंठासे उसे सुन रहे थे। शायद उनके मनमें यह आकांक्षा प्रज्वलित हो रही होगी कि बड़े होकर जब वे देशका झंडा उठावेंगे तो वे देशके उन स्वप्नोंको पूरा करेंगे। मालूम हुआ कि इसी 'हाउस' से संलग्न एक हाल और थिएटर भी है। पास ही एक हाई स्कूल है। 'कम्यूनिटी हाउस' के बच्चोंके लड़के-लड़कियाँ प्रारम्भिक स्कूलमें शिक्षा समाप्त करके इस हाई स्कूलमें पढ़ सकते हैं। रूसमें आधुनिक कम्यूनिटी-जीवनका विचार बहुत कुछ हमारे भारतीय ग्राम्य-जीवनके विचारके समान है। हम अपने देशमें जीवनकी जिस प्रणालीको नष्ट कर रहे हैं, रूस उसीको उत्पन्न करनेके लिए सतत कोशिश कर रहा है। हमारे ग्राम्य जीवनका आदर्श ग्रामीणोंका सहयोग और मित्र-भाव है। इसी पारस्परिक सहयोगके द्वारा ही 'रामलीला', 'रासलीला' 'दंगल' आदि मनोरंजक और ज्ञानदायक बातोंका प्रबन्ध करते, और समान रूपसे उसका आनन्द लेते थे। हरएक गाँवमें, सबके लिए, एक ही नाई, धोबी, लोहार आदि होता था, और गाँवकी पंचायत (Panchayat) को उनपर सर्वोपरि अधिकार होता था। यदि कोई व्यक्ति समाजके हितके विरुद्ध कोई कार्य करता था, तो पंचायत समाजके इन सम्मिलित सेवकों—नाई-धोबी आदि—को आज्ञा दे देती थी कि वे उस व्यक्तिविशेषकी सेवा बन्द कर दें। रूसके कम्यूनिटी हाउसमें भी ग्राम समाजके सभी सदस्योंके लिए सम्मिलित भोजनालय, सम्मिलित स्कूल, सम्मिलित पाकशाले,

चालीस रूबल महीना किरायेपर मज़दूरोंको दिये गये थे। कमरे मा
तौरपर सजे हुए और बहुत साफ़ थे। 'कम्यूनिटी हाउ
अधिवासियोंके लिए सम्मिलित भोजनालय और सम्मिलित धोबीख
है। लेकिन यदि कम्यूनके सदस्य चाहें तो अपना भोजन स्वयं
पका सकते हैं। ढाई वर्ष तकके बच्चोंके लिए एक 'क्रेशे' भी है।
'क्रेशे' ठीक उसी ढंगका था, जैसा मैंने लेनिनग्रेडमें देखा था।
यह छोटा था, और इसमें खेल और संगीतका उतना प्रबन्ध न
'क्रेशे' में बच्चोंके खिलानेका बड़ा मज़ेदार तमाशा देखा। बच्चे
ओरसे नर्सोंको घेरे हुए बड़ी गम्भीरतासे बैठे थे। वे उत्सुक
भरी दृष्टिसे, मुंह बाये, अपनी-अपनी पारी आनेकी राह देख
थे। उनके बिछौने, कपड़े और रूमाल बहुत साफ़ थे। इमार
दूसरे बाज़ूमें ढाई वर्षसे छै वर्ष तकके बच्चोंके लिए एक किंडरगा
और प्रारम्भिक स्कूल था। यदि मेरी स्मरण शक्ति ग़लती न
करती, तो उम्रके अनुसार बच्चोंके तीन दल थे, जो तीन दर्जों
पढ़ते थे। एक दर्जेको देखकर मैं बड़ा प्रभावित हुआ।
सबसे कम उम्रके बच्चोंका दर्जा था। अध्यापिका बीचमें बैठी
और छोटे-छोटे खूबसूरत बच्चे उसे चारों तरफ़से घेरे हुए थे।
उसकी गर्दनसे चिपटा था, दूसरा पीठपर झूल रहा था, तीसरा अप
नन्हें हाथोंसे उसके गाल पकड़े हुए था, और सब-के-सब कुछ
रहे थे। मुझे बताया गया कि वह उन्हें कहानी सुना रही थी
शिक्षाका पहला क़दम कहानीसे ही शुरू होता है। वह उन्
कहानीमें पंचवर्षीय कार्यक्रमकी जादूभरी बातें, ज़ारशाहीके अत्याचा

सके भावी स्वप्नोंकी बातें बता रही थी। रूसकी ये
शायें—भावी नागरिक—बड़ी उत्कंठासे सबे सुन रहे थे।
उनके मनमें यह आकांक्षा प्रज्वलित हो रही होगी कि बड़े
अब वे देशका झंडा उठावेंगे तो वे देशके उन स्वप्नोंको पूरा
। मालूम हुआ कि इसी 'हाउस' से संलग्न एक छब और
र भी है। पास ही एक हाई स्कूल है। 'कम्यूनिटी हाउस' के
लोंके लड़के-लड़कियाँ प्रारम्भिक स्कूलमें शिक्षा समाप्त करके इस
स्कूलमें पढ़ सकते हैं। रूसमें आधुनिक कम्यूनिटी-जीवनका
चार बहुत कुछ हमारे भारतीय ग्राम्य-जीवनके विचारके समान है।
म अपने देशमें जीवनकी जिस प्रणालीको नष्ट कर रहे हैं, रूस
सीको उत्पन्न करनेके लिए सतत कोशिश कर रहा है। हमारे
ग्राम्य जीवनका आदर्श ग्रामीणोंका सहयोग और मित्र-भाव है।
वे पारस्परिक सहयोगके द्वारा ही 'रामलीला', 'रासलीला' 'दंगल'
आदि मनोरंजक और लाभदायक बातोंका प्रबन्ध करते, और समान
रूपसे उनका आनन्द लेते थे। हरएक गांवमें, सबके लिए, एक
ही नाई, धोबी, लोहार आदि होता था, और गांवकी पंचायत
(Commune) की उनपर सर्वोपरि अधिकार होता था। यदि कोई
व्यक्ति समाजके हितके विरुद्ध कोई कार्य करता था, तो पंचायत
समाजके इन सम्मिलित सेवकों—नाई-धोबी आदि—को आज्ञा दे
सकती थी कि वे उस व्यक्तिविशेषकी सेवा बन्द कर दें। रूसके
कम्यूनिस्ट समाजमें भी ग्राम समाजके सभी सदस्योंके लिए
सम्मिलित भोजनालय, सम्मिलित स्कूल, सम्मिलित धोबीखाने,

सम्मिलित क्लब और थियेटर आदि रखनेकी कोशिश हो रही
आजकल रूस उत्पादनके प्रत्येक क्षेत्रमें—चाहे वह कृषि-सम्बन्धी
या औद्योगिक—विशेषज्ञ पैदा करनेकी अत्यधिक कोशिश कर र
और उसे इस विशेषज्ञता (Specialisation) पर बड़ा ग
है। यह विशेषज्ञता हमारे ग्रामोंमें न जाने कबसे चली आ
नाई, धोबी, सुनार, लोहार ही नहीं, बल्कि किसान, कुम्हार, बढ़ई
पुरोहित तक पुश्तहा पुश्तसे अपने-अपने विषयोंके विशेषज्ञ हैं;
हमारे यहाँ जातिभेदका विचार ही इसी विशेषज्ञतापर अवलम्बि
जैसा कि हमारे गीतामें स्पष्ट रूपसे कहा गया है—

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः"

लेकिन आजकल पाश्चात्य विचारोंमें मस्त होकर और पूँ
प्रतियोगिताका सामना होनेपर, हम लोगोंने अपने जीवनकी
पद्धति तोड़ दी है। हमें मजबूरन यह करना पड़ा; लेकि
समझमें यह ग़लत रास्ता था। रूसको पश्चिमकी महान भू
हो गई है, और वह अपने समाजका पुनर्निमाण कर रहा
शायद लगभग प्राचीन हिन्दू आदर्शोंकी लाइनपर ही होगा।
'कम्यूनिटी हाउसों' की तुलना हमारे ग्रामोंसे हो सकती है।
ग्रामोंमें अब तक तमाम ग्राम-निवासी—चाहे वे जमींदार
किसान, मालिक हों या मज़दूर, महाजन हों या कर्ज़दार;
यह कि उनकी आर्थिक स्थितिमें चाहे जो अन्तर हो—सा
दावतोंमें बराबरीसे बैठते हैं, और एक ही-सी पत्तलमें भोजन क
गाँवके उत्सवोंमें सबकी आवाज़ बराबर होती है। ठीक यही

'कम्यूनिटी हाउसों' में है। इससे कोई सरोकार नहीं कि कोई मजदूर क्या कमाता है, उसे या उसके बच्चोंको सम्मिलित भोजनालयसे वैसा ही भोजन मिलेगा; 'क्रेश' में उसके बच्चेकी वैसी ही देख-रेख होगी, और स्कूलमें उसके लड़केको वैसी ही तालीम मिलेगी, जैसी कि एक इंजीनियरके लड़केको। बच्चोंकी परवरिश कम्यूनिस्ट विचारोंसे की जा रही है। उन्हें सिखाया जाता है कि वे अपने व्यक्तिगत स्वार्थकी बात न सोचकर सम्पूर्ण 'कम्यूनिटी'—समाज—के स्वार्थोंके लिए सोचें।

---

'कम्यूनिटी हाउसों' में है। इससे कोई सरोकार नहीं कि कोई मज़दूर क्या कमाता है, उसे या उसके बच्चोंको सम्मिलित भोजनालयसे वैसा ही भोजन मिलेगा ; 'क्रेशे' में उसके बच्चेकी वैसी ही देख-रेख होगी, और स्कूलमें उसके लड़केको वैसी ही तालीम मिलेगी, जैसी कि एक इंजीनियरके लड़केको। बच्चोंकी परवरिश कम्यूनिस्ट विचारोंसे की जा रही है। उन्हें सिखाया जाता है कि वे अपने व्यक्तिगत स्वार्थकी बात न सोचकर सम्पूर्ण 'कम्यूनिटी'—समाज—के स्वार्थोंकी चिन्ता करें।

---

# सोलहवाँ अध्याय

हम लोग चहलक़दमी करते हुए हाईस्कूल पहुंचे। यहां हमें यात्रियोंका एक दूसरा दल भी मिला। उनमें अधिकांश अमेरिकन थे। पहले हम लोग एक कमरेमें गये, जहां बहुतसे लड़के-लड़कियां पियानोंकी गतपर गाना गा रही थीं। एक कोनेमें कई मेजें पड़ी हुई थीं, जिनपर कुछ विद्यार्थी झुके हुए, रेडियो सेटकी बनावट सीख रहे थे। स्कूलमें पढ़ाई भी बारी-बारीसे होती है। विद्यार्थियोंका एक दल जब व्यावहारिक शिक्षा पाता है, उस समय दूसरा दल दर्जेमें बैठकर अध्यापकोंके व्याख्यान सुनता है। इसके अलावा सारे विद्यार्थी कई दलोंमें विभक्त हैं। अलग-अलग दलोंके लिए अलग-अलग दिनोंके हफ़्ते मुक़र्रर हैं। मान लीजिए कि एक दलका हफ़्ता शनिवारसे बृहस्पतिवार तक होता है, तो दूसरे दलका मंगलवारसे रविवार तक। यह तो मैं पहले ही बता चुका हूं कि रूसमें सिर्फ छै दिनका हफ़्ता होता है, और छुट्टीका कोई एक दिन नियत नहीं है। यह इसलिए किया गया है, जिसमें स्कूल और फैक्टरियां पूरे जोरसे चल सकें। मुझे बताया गया कि इस स्कूलमें ३,००० विद्यार्थी हैं, जो पन्द्रह-पन्द्रह सौके दलमें शिक्षा पाते हैं। विद्यार्थियोंकी इतनी संख्याको शिक्षा देना इसीलिए सम्भव हो सका है कि इनके दो और अलग-अलग दिनोंके हफ़्ते हैं।

जो लड़के अपनी बारी आनेके इन्तज़ारमें होते हैं, वे इधर-उधर

...कर या व्यर्थकी बातचीतमें अपना वक्त बरबाद करनेके बजाय, ...कमरेमें इकट्ठे हो जाते हैं, और यहाँ खुशी-खुशी ट्रेनिंग-प्राप्त ...कोंसे संगीत या विज्ञान सीखकर अपने समयका सदुपयोग करते ...। लड़के और लड़कियाँ साथ-साथ पढ़ती हैं। हमने प्रार्थना की ... विद्यार्थी एक पुराना ग्राम-गीत और एक क्रान्तिकारी गीत ...कर सुनावें। इन-चार्ज अध्यापकने कृपा करके हमारी प्रार्थना ...वीकार कर ली। पुराना ग्राम-गीत बहुत-कुछ भारतीय गीतों-सा ...न पड़ा। मैं संगीतज्ञ नहीं हूं, इसलिए यह नहीं कह सकता कि ...ह हमारे किस राग या रागिनीसे मिलता-जुलता था; फिर भी मेरे ...नजान कानोंमें वह बहुत-कुछ भारतीय गीतोंके समान ही जान पड़ा। ...ाम-गीतके तालोंपर कुछ लड़के-लड़कियाँ हाथसे हाथ पकड़कर ...ाम-नृत्य भी नाचने लगीं। आधुनिक ढंगका क्रान्तिकारी गीत भी ...हुत-कुछ बंगाली गीतों-सा जान पड़ा। कुछ शब्दोंका—जैसे ...भाई' आदि—उच्चारण और अर्थ, दोनों ही बंगलाकी भाँति है। ...रूसके गिरजोंकी बनावट भी हिन्दोस्तानी रथोंकी बनावटसे मिलती-जुलती है; वह पाश्चात्य देशोंके गोथिक ढंगके गिरजोंसे बिलकुल भिन्न है। पुराना रूस धर्म, अन्ध-विश्वास, जमींदार-प्रणाली—...मनन्त-प्रणाली—और रहन-सहन आदिमें बहुत-कुछ मौजूदा भारतसे मिलता-जुलता था।

एक दूसरे बड़े हालमें छात्र-छात्राओंको कुवायद (ड्रिल) और ...व्यायामके खेल कराये जा रहे थे। इस हालमें करीब-करीब पचास ...विद्यार्थी एकत्रित थे, जिनमें लड़कियोंकी संख्या अधिक थी। मैंने

अध्यापकसे पूछा—"क्या मैं जान सकता हूं कि इस स्कूलमें
और लड़कियोंमें क्या अनुपात है ?"

"लगभग ७० फी-सदी लड़कियां और ३० फी सदी
होंगे।"—उसने जवाब दिया।

"तब तो जान पड़ता है कि शिक्षाकी दौड़में लड़कियां
पछाड़ रही हैं।"—मैंने कहा।

"जी हां, लड़कियां लड़कोंसे ज़्यादा होशियार और तेज़ होती
वे आसानीसे और कम समयमें बहुत-सी बातें सीख लेती हैं।"

"इस अनुपातसे मैं क्या यह समझूँ कि आपके यहां
लड़कोंको तालीम नहीं मिल रही है, अथवा यह समझूँ कि
देशकी आबादीमें पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंकी संख्या ज़्यादा है ?"

"नहीं, हर्गिज़ नहीं। अभी तक लड़कियां स्कूलोंसे
रखी जाती थीं, इसलिए आजकल उनकी संख्या लड़कोंसे अधि
लेकिन और दूसरे स्कूलोंमें उनकी संख्या उतनी नहीं,
यहां है।"

सभी छात्र-छात्राएं स्वस्थ और प्रसन्न दीख पड़ती
उन्हें देखकर मेरी नज़रोंके सामने अपने देशके मरियल और
विद्यार्थियोंकी शक्लें घूम गईं।

हम लोग एक-एक करके सभी दर्जोंमें ले जाये गये। हर
अनुशासन और सुव्यवस्था दीख पड़ी। एक कमरेमें छात्र
प्रोत्साहन और दंड देनेके विभिन्न तरीक़े दीख पड़े। एक बड़ा बो
तख्ता—लगा हुआ था, जिसका आधा हिस्सा लाल और आधा

गा हुआ था। जो विद्यार्थी पूरा और अच्छा काम करते हैं, उनके नाम सफेद हिस्सेपर और जो ठीक काम नहीं करते, उनके नाम काले हिस्सेपर लिख . दिये जाते हैं। यहाँ 'दीवारी अखबार' और 'हस्त-लिखित' अखबार भी दीख पड़े। इन अखबारोंमें विद्यार्थियों द्वारा कही की हुई सभाओंकी खबरें, सामयिक विषय, साहित्यिक लेख, पंचवर्षीय कार्यक्रमके अनुसार प्रत्येक दर्जेकी उन्नति और यदि कोई लड़का अपना सबक पूरा नहीं करता, या साम्यवादी विचारोंके विरुद्ध कोई काम करता है, तो उसकी व्यक्तिगत आलोचना आदि बातें नियमित रूपसे प्रकाशित की जाती हैं। बस, यही कोड़े हैं, जिनसे रूसी विद्यार्थियोंको सजा दी जाती है। किसी तरहकी मार-पीट या शारीरिक दंड देनेकी मनाही है। अगर कोई विद्यार्थी कोई अपराध करता है, तो उसका विचार करनेके लिए विद्यार्थियोंकी एक 'दोस्ताना अदालत' ( Friendly Court ) बैठती है। वनस्पति-शास्त्र और उससे सम्बन्ध रखनेवाले विषयोंके अध्ययनके लिए हरे वृक्ष अथवा वृक्षोंके नमूने ( मॉडल ) मौजूद थे। हरएक विद्यार्थीको एक विदेशी भाषा—चाहे वह अंगरेजी हो, या फ्रेंच, या जर्मन—सीखनी पड़ती है, और तेरह-चौदह वर्ष तकके विद्यार्थियोंको रसायन, भौतिक विज्ञान, वनस्पति-शास्त्र आदि पढ़ना पड़ता है।

सबसे नीचेकी मंज़िलमें मेशीन-रूम था, जिसमें विद्यार्थी अपने हाथों मेशीनें चलाकर कुछ मामूली चीज़ें बना रहे थे। इस स्कूली कारखानेमें विद्यार्थियोंको दो घंटे काम करना पड़ता है, और हफ्तेमें चार घंटेके लिए वे किसी बड़े कारखानेमें भेजे जाते हैं। इस कमरेमें

"साक्षरताके बिना राजनीति चल ही नहीं सकती; निरक्षरोंके लिए केवल अफ़वाहें, गप्पें, अन्ध-विश्वास और परियोंकी कहानियाँ ही होती हैं, और ये सब चीज़ें राजनैतिक वर्ग-चेतनासे बहुत दूर हैं।" इसलिए समूचे समाजको अपने साम्यवादी आदर्शोंमें शराबोर करनेके लिए, सरकार जनसाधारणको शिक्षित बनानेके लिए, अपनी सारी शक्ति लगा रही है। कुछ वर्षों तक यह शिक्षा बहुत बुरी तरह और बड़े गलत तरीक़ेसे दी गई; लेकिन बोल्शेविकोंको यदि अपनी भूल मालूम हो जाय, तो वे फौरन ही उसे दुरुस्त करनेके लिए तैयार रहते हैं। सन् १९३२ में कम्यूनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय कमेटीने देशको सावधान कर दिया था कि उसकी शिक्षा-पद्धति गलत है; राजनीति पढ़ानेके जोशमें साहित्य, गणित, इतिहास, भूगोल, रसायन आदि विषयोंकी उपेक्षा हो रही है। उस समय तक विद्यार्थियोंको सिर्फ [illegible] राजनैतिक वाक्य और क्रान्तिकारी मन्त्र अथवा कहानियाँ सिखाई जाती थीं। पुराने समाजकी हर चीज़को घृणासे देखनेके कारण संगीत और नाटक ठुकराये जाते थे। यूनिवर्सिटियोंमें इतिहास तककी शिक्षाको हीन समझा जाता था; मगर अब उन्हें अपनी भूल मालूम हो गई है। अब उन्होंने पाठ्य-क्रममें इस तरहका परिवर्तन कर दिया है, जिससे विद्यार्थी भविष्यमें आदर्शवादके व्यर्थ स्वप्न देखनेवालोंके स्थानमें, देशके नेता बन सकें।

स्कूल-कालेजोंमें पढ़नेवाले विद्यार्थियोंकी संख्यासे इस बातका अन्दाज़ हो सकता है कि रूसमें शिक्षा कैसे ज़ोरोंसे बढ़ रही है।

रूसी विद्यार्थी—पुस्तकालयमें



रूसी विद्यार्थी—प्रयोगशालामें

### विभिन्न शिक्षा-संस्थाओंमें विद्यार्थियोंकी संख्या

| | प्रारम्भिक स्कूल | सेकेण्डरी स्कूल | यूनिवर्सिटी | कृषि-कालेज | टेकनिकल स्कूल |
|---|---|---|---|---|---|
| १९१४-१५— | ७८,००,००० | ५,००,००० | १,२५,००० | २६०० | २,९७,००० |
| | | [ लगभग ] | | | |
| १९३२— | १,९०,००,००० | ४५,५०,००० | ५,००,००० | २,०७,८०० | ८,५०,००० |

सन् १९२० में रूसकी आबादीमें केवल ३२ प्रति सैकड़ा व्यक्ति साक्षर थे; सन् १९३२ में उनकी संख्या बढ़कर ९१ प्रति सैकड़ा पहुंच गई थी। आजकल आठसे ग्यारह वर्ष तकके लड़के-लड़कियोंको स्कूल जाना अनिवार्य है। सन् १९३३ में यह आयु बढ़ाकर बारह वर्ष कर दी जानेवाली थी; लेकिन मुझे बताया गया कि मास्कोमें पन्द्रह वर्ष तककी उम्रके लड़के-लड़कियोंको स्कूल जाना पड़ता है।

स्कूलोंमें कोई एक सरकारी भाषा मुक़र्रर नहीं है। देशके हरएक प्रान्तको यह स्वतन्त्रता है कि वह अपने स्कूलोंमें अपनी स्थानीय भाषा पढ़ा सके। रूस कोई छोटा देश नहीं—पूरा महाद्वीप है। वहां भाषाएँ भी कम नहीं हैं, इसलिए इस स्वतन्त्रताने साक्षरताकी उन्नतिमें बड़ी सुविधा पहुंचाई है। रूसके बहुत-से क़बीलों—जैसे जिप्सी तुरख्त आदि—में अपनी कोई लिपि या वर्णमाला भी नहीं थी; परन्तु आज उनकी छपी हुई किताबें, व्याकरण, कोश और यहां तक कि अख़बार भी मौजूद हैं। मुझे मालूम हुआ कि इस समय रूसमें सत्तर विभिन्न भाषाओंमें स्कूल चलते हैं। कम तनख्वाह पानेवाले मजदूरोंके बच्चोंको स्कूलमें दोपहरका भोजन भी मुफ्त मिलता है। अन्य लोगोंके बच्चोंसे एक बारके भोजनका १२ कोपेकसे २५ कोपेक तक ( १ रूबल=१०० कोपेक ) लिया जाता है।

हाई स्कूलकी पढ़ाईका पूरा कोर्स दस वर्षका है। लेकिन मुझसे बताया गया कि शीघ्र ही उसे बढ़ाकर बारह वर्ष कर दिया जायगा—यानी विद्यार्थियोंको अब सत्रह वर्षके बजाय उन्नीस वर्षकी उम्र तक स्कूलोंमें रहना पड़ेगा। बड़ी उम्रके लड़कोंको दिनमें छे घंटे पढ़ना पड़ता है; पर छोटी उम्रवालोंका दिन चार ही घंटेका होता है। मेरे साथके एक अमेरिकन यात्रीने स्कूलकी दरार पड़ी दीवार और टूटे फर्शको दिखलाते हुए कहा—"इन्हें देखिये। यह नई इमारत सिर्फ पाँच-छे वर्ष पुरानी है; लेकिन देखिये, जल्दबाजीमें कैसी रद्दी बनी है। इन लोगोंने अपने अज्ञान और जल्दबाजीमें बहुत-सा धन बरबाद कर डाला।" वास्तवमें इमारत कम-से-कम पचास वर्ष पुरानी जान पड़ती थी, यद्यपि मेरी पथ-प्रदर्शिकाने बताया कि वह स्कूलके लिए नई ही बनी है।

---

उसने पूछा—"आप यहाँ काहेके आसरेमें खड़े हैं?"

"पथ-प्रदर्शिका मेरा पासपोर्ट लेने गई है।"

"क्या आप आज जा रहे हैं?"—उसने पूछा।

"शायद कल जाऊँ।"—मैंने उत्तर दिया।

"अच्छा, मैं अभी आपका पासपोर्ट खोजे देती हूं।"—यह कहकर वह बिजलीकी तरह ग़ायब हो गई।

रूसी मुझे बहुत खूबसूरत दिखाई पड़े। उनके चेहरोंकी गढ़न और मुखश्री कितनी अच्छी है, और वे कितने स्वतन्त्र, कितने कृत्रिमताहीन और कितने स्पष्ट वक्ता हैं! मैं समझता हूं कि यदि रूसी स्त्रियोंको पेरिस या बर्लिनका शृंगार और पोशाकें मिल सकें, तो वे समूचे यूरोपमें सबसे अधिक सुन्दरी सिद्ध होंगी।

हम दोनों पेट्रोवका स्ट्रीटमें 'टार्गसिन' देखने गये। 'टार्गसिन' विदेशियोंके लिए एक स्टोर या बाज़ार है, जहाँ वे रूसी यात्राकी यादगारमें कुछ खरीद सकते हैं।

यह होटलसे दूर नहीं था, इसलिए हम लोग पैदल ही गये। रास्तेमें लम्बे भूरे कोट पहने हुए कुछ फ़ौजी सिपाही गुज़र रहे थे। पथ-प्रदर्शिकाने इशारा करके कहा—"यही हमारी लाल फ़ौजके सदस्य हैं।"

"लेकिन यह तो भूरे हैं।"—मैंने कहा।

"हाँ, क्रान्तिके दिनोंमें ये लाल थे; लेकिन अब ऐसे ही हैं, जैसे कि आप देख रहे हैं।"

"जान पड़ता है कि सरकार इनपर सबसे अधिक मेहरबानी

चलती है। इनके पास कपड़े भी काफ़ी हैं, और इनके चेहरोंसे भी मालूम होता है कि ये खाते-पीते खुशहाल हैं।"

"हाँ, इनके लम्बे कोटोंमें दो मजदूरोंकी पोशाकें बन सकती हैं; लेकिन इन्हें तो आरामसे रखना ही चाहिए, क्योंकि इन्हींपर सरकारकी रक्षा निर्भर है।"—उसने कहा।

'टार्गसिन' एक बड़ा भारी स्टोर है, जिसमें खाना-पीना, कपड़ा-लत्ता, जूता-मोज़ा, फर्निचर, बर्तन, पुस्तकें और फोटोग्राफ—यानी जीवनकी सभी आवश्यक चीज़ें बिकती हैं। स्टोर बहुत साफ़-सुथरा था, और माल भी अच्छी तरह सजा था। नौकर-चाकर भी तेज़ और विनम्र थे। यूरोपके किसी भी अच्छे स्टोरसे इसकी तुलना की जा सकती है। यहाँपर विदेशियोंके लिए अन्य स्थानोंकी बनिस्बत दाम बहुत कम है, और यहाँ विदेशी सिक्के—पाउण्ड और डालर—ही भी लिये जाते हैं। जिस एक सेबके लिए मुझे होटलमें दस शिलिंग (६।।=) देने पड़े थे, वही यहाँ तीन या चार पेन्समें (=)।। या =)) मिल सकता था। लेकिन दोस्तियोंकी चीज़ें यहाँ भी बहुत महँगी हैं। उन्होंने लकड़ीके एक मामूली सिगरेट-केसके लिए दो पौण्ड (२७) और मारिस हिन्दसकी प्रसिद्ध पुस्तक '... ...' के लिए दस शिलिंग और एक रूमालके लिए दो-तीन पौण्ड तक चार्ज किये थे। फिर भी जिनके पास "पौण्ड" रूपमें विदेशी सिक्के हों, उनके लिए यहाँ खोद्य सामग्री सस्ता पड़ता है। यह स्टोर विदेशियोंके लिए ही है; लेकिन यहाँ मुझे कुछ रूसी भी खरीद करते हुए देख पड़े। पूछनेपर मालूम हुआ कि ये अपने विदेशी रिश्तेदारों और

मित्रोंके लिए, जो विदेशोंमें हैं, चीज़ें खरीद रहे हैं। जब कोई यात्री रूससे लौटने लगता है, तो सीमान्तपर उसे 'टार्गसिन' का 'कैशमेमो' दिखलाना पड़ता है, नहीं तो उसका खरीदा हुआ माल रोक लिया जाता है। खज़ांची, जो एक्सचेंजकी दरसे चीज़ोंके दाम लगाकर रुपया वसूलते थे, मुझे होशियार नहीं जान पड़े। उन्हें दाम लगानेमें ज़रूरतसे बहुत ज़्यादा वक्त लगता था। इसके सिवा एकके एक्सचेंजकी दर दूसरेके एक्सचेंजकी दरसे भिन्न दीख पड़ती थी। कोई तो एक पाउण्डमें साढ़े सात रूबलके हिसाबसे दाम लगाता था, और कोई सात या साढ़े छे रूबलके हिसाबसे ही। लेनिनग्रेडमें हमारे होटलमें ही एक छोटा-सा स्टोर था; लेकिन वहाँ मुझे इस तरहके किसी 'टार्गसिन' की बात नहीं मालूम हुई।

रूसियोंको अपने रूबलसे इस 'टार्गसिन' में चीज़ें खरीदनेमें सुविधा नहीं होती। उनके लिए 'को-आपरेटिव स्टोर' हैं। तीन सौ या उससे अधिक सदस्य मिलकर एक 'को-आपरेटिव स्टोर' खोल सकते हैं। 'Centrosoyus' अथवा केन्द्रीय 'को-आपरेटिव स्टोर' बहुत बड़े पैमानेपर अपने सदस्य-स्टोरोंके लिए आवश्यक चीज़ें बनाता है, और उन्हें ज़िलेके स्टोरोंमें बाँट देता है। ये संस्थाएँ उन मज़दूरों और अधिकारियोंके लिए, जिन्हें कार्यदात्री संस्थाएँ भोजन नहीं देतीं, बावर्चीखाने और रोटीखाने भी चलाती हैं। आजकल देशकी फुटकर चीज़ोंकी ६५ प्रति सैकड़ा ज़रूरतें ये 'को-आपरेटिव स्टोर' पूरी करते हैं, ३० प्रति सैकड़ा अन्य सरकारी संस्थाएँ पूरी करती हैं, और सिर्फ़ ५ प्रति सैकड़ा प्राइवेट रोज़गारियोंके हाथमें है।

हम लोग टहलते हुए स्वेर्डलोव स्कायर पहुंचे। यह पहले थियेटर स्कायर था। इसकी एक तरफ़ ग्रेण्ड थियेटरकी शानदार इमारत खड़ी है, और दूसरी तरफ़ एक छोटा थियेटर है। यहींपर एक आफ़िसमें पथ-प्रदर्शिकाने मेरे लिए रेलका टिकट खरीदा और बर्थ रिज़र्व कराया। इसमें भी बहुत ज्यादा वक़्त लगा। यह देरी रूसके 'होशियार' कर्मचारियोंकी अयोग्यता प्रकट करती है। इसके बाद हम लोग पैदल ही 'लेनिन इन्स्टीट्यूट' और 'स्वतन्त्रताका स्तम्भ' (Obelisk of Freedom) के पास पहुंचे। यह स्तम्भ सन् १९१७ की क्रान्तिकी विजयके उपलक्षमें बनाया गया था। 'लेनिन इन्स्टीट्यूट' एक पुस्तकालय है, जिसमें महत्त्वपूर्ण पुस्तकोंका अत्यन्त विशाल संग्रह है। सत्यानाशी कहलानेवाले बोल्शेविकोंकी बनाई हुई इमारतोंमें यह सबसे बढ़िया है। हम लोग क्रान्तिके म्यूज़ियम और ऐतिहासिक म्यूज़ियमके पाससे होकर गुज़रे; लेकिन समयकी कमीके कारण उन्हें भीतरसे नहीं देख न सके।

मुझे यू० एस० एस० आर० की सरकारी गाइड-बुकसे ज्ञात हुआ कि रूसमें 'वोक्स' ( Voks ) नामकी एक संस्था है, जिसका उद्देश्य विदेशोंसे सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करना है। वह राजनीतिसे सम्बन्ध नहीं रखती। इसी संस्थाने कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुरको रूसमें निमन्त्रित किया था। वोक्स सब देशोंके बड़े-बड़े लेखकों, कवियों, वैज्ञानिकों, नटों, नर्तकों, कलाकारों तथा अन्य सांस्कृतिक विषयोंके विद्वानों और महापुरुषोंको निमन्त्रित करके, उनके सन्दर्शन और परामर्शसे अपने देशकी सांस्कृतिक उन्नति करती है।

वोफसका पता है :—

17, Trubnikovski Pereulok, Moscow, 69.

मैं अपनी पथ-प्रदर्शिकाके साथ इस संस्थामें पहुंचा। पथ-प्रदर्शिकाने उन लोगोंसे कहा कि मैं किसी ऐसे व्यक्तिसे बातचीत करना चाहता हूं, जो अंगरेज़ी जानता हो और मुझे रूसी संस्कृति और रूसी विधानपर आवश्यक बातें बतला सके। थोड़ी देर इन्तज़ार करनेके बाद एक बूढ़ा आदमी सामने आया, और उसने अपनी रूसी उच्चारणवाली अंगरेज़ीमें कहा—"गुड आफ्टरनून।"

चूँकि मैं हिन्दोस्तानसे आया था, इसलिए पूर्वीय शाखाका इन-चार्ज मुझसे बात करनेके लिए भेजा गया; लेकिन अभाग्यवश उसकी अंगरेज़ी इतनी कमज़ोर थी कि मुझे पथ-प्रदर्शिकाकी सहायता लेनी पड़ी। इस संस्थासे एक मासिक पत्र—'Soviet Culture Review' और एक पाक्षिक पत्र—'Socialist Construction in USSR', अंगरेजी, फ्रेंच और जर्मन भाषाओंमें प्रकाशित होते हैं। ये पत्र संसारकी जनताको इस बातकी सच्ची खबरें देते हैं कि रूसमें क्या हो रहा है, और वह कैसे उन्नति कर रहा है। उन्होंने मुझे कृपा करके इन पत्रोंके कई अंक दिये।

मैंने कहा—"मैंने संस्कृति और उद्योग-धन्धोंमें आपकी बहुत-कुछ उन्नति अपनी आंखों देख ली है, इसलिए उनके बारेमें सवाल करके मैं आपको परेशान करना नहीं चाहता; लेकिन रूसका राजनैतिक विधान मेरे लिए एक गोरखधंधा बना हुआ है। आपकी रिफरेन्सकी किताबोंसे जान पड़ता है कि आपकी सोविएट ही देशकी सर्वसत्ता

; लेकिन किसी भी सोवियटके किसी भी उत्तरदायित्वपूर्ण पदपर
ेलिनका नाम नहीं दीख पड़ता, यद्यपि सुनता यही हूं कि वह
्टेटर है।"

"स्टेलिन कम्यूनिस्ट पार्टीका प्रधान-मंत्री है;"—पथ-प्रदर्शिकाने
या किया—"लेकिन यूनियनसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं।
० एस० एस० आर० ४२ स्वराज्य-प्राप्त (Autonomous) हिस्सोंमें
 है। इनमें से ६ रियासतें वे हैं, जिनसे सोवियट-संघ बना है,
१ स्वराज्य-प्राप्त प्रजातन्त्र (Autonomous Republics) हैं,
ौर १८ स्वराज्य-प्राप्त प्रदेश (Autonomous Regions) हैं।
पने आन्तरिक मामलोंमें ये स्वराज्य-प्राप्त भाग एक-दूसरेसे
वतन्त्र हैं।"

"आन्तरिक मामलोंसे आपका क्या मतलब है?"

"आन्तरिक मामलोंसे मतलब है देशके क़ानून, स्वास्थ्य, शिक्षा,
ंस्कृति, उद्योग-धन्धे आदि। परन्तु साम्पत्तिक, आर्थिक और
मज़दूरी-सम्बन्धी बातोंमें उन्हें यूनियनसे सलाह करके ही काम करना
पड़ता है। अन्तर्राष्ट्रीय बातोंपर केवल यूनियनकी केन्द्रीय
ार्यकारिणी समितिको ही अधिकार है।"

"आपका मतलब फ़ौज, रक्षा और वैदेशिक सम्बन्धोंसे है?"—
मैंने पूछा।

"हां, इनके साथ ही आमद-रफ्तके साधन, विदेशी व्यापार,
दीवानी और फौजदारीके क़ानून और आर्थिक योजना आदि बातें भी
केन्द्रीय संस्थाके द्वारा ही होती हैं।"—उसने कहा।

है; लेकिन किसी भी सोवियटके किसी भी उत्तरदायित्वपूर्ण पदपर स्टैलिनका नाम नहीं दीख पड़ता, यद्यपि सुनता यही हूं कि वह डिक्टेटर है।"

"स्टैलिन कम्यूनिस्ट पार्टीका प्रधान-मंत्री है;"—पथ-प्रदर्शिकाने स्पष्ट किया—"लेकिन यूनियनसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं। यू० एस० एस० आर० ४२ स्वराज्य-प्राप्त (Autonomous) हिस्सोंमें बंटा है। इनमें से ६ रियासतें वे हैं, जिनसे सोवियट-संघ बना है, १५ स्वराज्य-प्राप्त प्रजातन्त्र ( Autonomous Republics ) हैं, और १८ स्वराज्य-प्राप्त प्रदेश ( Autonomous Regions ) हैं। अपने आन्तरिक मामलोंमें ये स्वराज्य-प्राप्त भाग एक-दूसरेसे स्वतन्त्र हैं।"

"आन्तरिक मामलोंसे आपका क्या मतलब है?"

"आन्तरिक मामलोंसे मतलब है देशके कानून, स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कृति, उद्योग-धन्धे आदि। परन्तु साम्पत्तिक, आर्थिक और मजदूरी-सम्बन्धी बातोंमें उन्हें यूनियनसे सलाह करके ही काम करना पड़ता है। अन्तर्राष्ट्रीय बातोंपर केवल यूनियनकी केन्द्रीय कार्यकारिणी समितिको ही अधिकार है।"

"आपका मतलब फौज, रक्षा और वैदेशिक सम्बन्धोंसे है?"—मैंने पूछा।

"हां, इनके साथ ही आमद-रफ्तके साधन, विदेशी व्यापार, दीवानी और फौजदारीके कानून और आर्थिक योजना आदि बातें भी केन्द्रीय संस्थाके द्वारा ही होती हैं।"—उसने कहा।

लिए सूदपर कर्ज़ देता है। आमतौरसे सूद ५ से ७ प्रति सैकड़ा तक होता है।"

"तो 'प्रोमबैंक' को अपनी पूंजी लगानेसे क्या लाभ है?"

"यह बैंक नये कारखाने शुरू करनेके लिए है, और वह सभी कारखानोंके मालकी बिक्रीपर २२ प्रति सैकड़ा टैक्स वसूल करता है, और सिद्धान्त रूपमें उसे आमद-रफ़्तके ट्रस्टोंपर १०० फी-सदी लेने तकका हक़ है। 'गोसबैंक' कारखानोंके विकासके लिए, अथवा उनके चालू होनेके बाद धनकी जो ज़रूरत हो, उसके लिए, कर्ज़ देता है। साथ ही वह समूचे व्यापार—देशी और विदेशी दोनों तरहके व्यापार—उद्योग-धन्धों, कृषि और जंगलोंकी उपज तथा नोटोंके प्रचलन आदि बातोंपर नियन्त्रण रखता है।"

"आप मुनाफ़े और सूदकी बातें करती हैं; पर कारखाने मुनाफ़ा कैसे कर सकते हैं? मैं तो यही समझता था कि आपके कारखाने अपने मालको केवल लागत मूल्यपर ही बेंचते हैं। वे मुनाफ़ा किसके फ़ायदेके लिए करते हैं?"—मैंने कहा।

"नहीं, आपकी धारणा ग़लत है।"—कहकर वह मुसकराईं—"कारख़ाने, रेलवे, बिजली-कम्पनियाँ, इंजन और ट्रैक्टरोंकी फैक्टरियाँ तथा सभी हल्के उद्योग-धन्धे अलग-अलग ट्रस्टोंकी मातहतीमें चलते, और हरएक ट्रस्टको अपनी नफ़ा-घटीका हिसाब देना पड़ता है। सभी ट्रस्ट उत्पादनकी लागतपर फी-सदी कुछ मुनाफ़ा रखकर अपना-अपना माल बेंचते हैं। ये सब ट्रस्ट, चाहे वे उत्पादनके हों या खपतके, एक-दूसरेसे स्वाधीन हैं। उनका सम्बन्ध वैसा ही है, जैसा

लिए सूदपर कर्ज़ देता है। आमतौरसे सूद ५ से ७ प्रति सैकड़ा तक होता है।"

"तो 'प्रोमबैंक' को अपनी पूंजी लगानेसे क्या लाभ है ?"

"यह बैंक नये कारखाने शुरू करनेके लिए है, और वह सभी कारखानोंके मालकी बिक्रीपर २२ प्रति सैकड़ा टैक्स वसूल करता है, और सिद्धान्त रूपमें उसे आमद-रफ़्तके ट्रस्टोंपर १०० फी-सदी लेने तकका हक़ है। 'गोसबैंक' कारखानोंके विकासके लिए, अथवा उनके चालू होनेके बाद धनकी जो ज़रूरत हो, उसके लिए, कर्ज़ देता है। साथ ही वह समूचे व्यापार—देशी और विदेशी दोनों तरहके व्यापार—उद्योग-धन्धों, कृषि और जंगलोंकी उपज तथा नोटोंके प्रचलन आदि बातोंपर नियन्त्रण रखता है।"

"आप मुनाफ़े और सूदकी बातें करती हैं; पर कारखाने मुनाफ़ा कैसे कर सकते हैं ? मैं तो यही समझता था
कारखाने अपने मालको केवल लागत
मुनाफ़ा किसके फ़ायदेके लिए करते हैं ?"

"नहीं, आपकी धारणा ग़लत
'कारख़ाने, रेलवे,
था सभी हल्के उद्योग
, और हरएक ट्रस्टको
भी ट्रस्ट
पना-अपना माल
पतके, एक-दू

पूँजीवादी देशोंमें माल बनानेवालों और उसे व्यवहार करनेवालों (Consumers) का होता है।"

उसका यह कथन कुछ स्पष्ट नहीं जान पड़ा, इसलिए मैंने उसे साफ़ करनेके लिए पूछा—"मैंने आपकी केन्द्रीय योजना ( Central planing ) की बात सुनी है ; लेकिन यदि भिन्न-भिन्न ट्रस्ट व्यापारपर स्वतन्त्र रूपसे नियन्त्रण रखते हैं, तो केन्द्रीय योजना कैसे सम्भव हो सकती है ?"

"लेकिन 'गोसबैंक' तो एक केन्द्रीय संस्था है, और सारे ट्रस्ट उसके अधीन हैं। कच्चे माल और तैयारी मालकी क़ीमत वही निर्धारित करता है। किसी ट्रस्टको—चाहे वह उत्पादनका हो, या खपतका—यदि किसी चीज़के निर्धारित मूल्यमें आपत्ति हो, तो वह उसे पुनर्विचारके लिए 'गोसबैंक' के पास उपस्थित करता है, न कि उस ट्रस्टके पास, जिसके मालपर आपत्ति है। रही उत्पादनकी केन्द्रीय योजना, सो उसके लिए 'गोसप्लेन' आगामी पाँच वर्षोंके उत्पादनकी योजना बनाकर उसे विभिन्न विषयोंके ट्रस्टों और कम्पनियोंके पास भेजता है। ये ट्रस्ट उस योजनाको पृथक्-पृथक् फ़ैक्टरियोंमें भेजते हैं, जहाँ मज़दूर उसपर बहस करके उसमें संशोधन-परिवर्तन करते हैं। आवश्यक संशोधनोंके साथ योजना पुनः उसी ढंगसे 'गोसप्लेन' के पास वापस जाती है, जिस ढंगसे वह उसके पाससे आती है। अन्तमें सब बातोंपर विचार करके 'गोसप्लेन' यह निश्चय करता है कि क्या होना चाहिए। यही केन्द्रीय योजना बनानेका तरीक़ा है। अब आप समझे ?"—उसने पूछा।

पूँजीवादी देशोंमें माल बनानेवालों और उसे व्यवहार करनेवालों (Consumers) का होना है।"

उसका यह कथन कुछ स्पष्ट नहीं जान पड़ा, इसलिए मैंने उसे साफ़ करनेके लिए पूछा—"मैंने आपकी केन्द्रीय योजना ( Central planing ) की बात सुनी है ; लेकिन यदि भिन्न-भिन्न ट्रस्ट व्यापारपर स्वतन्त्र रूपसे नियन्त्रण रखते हैं, तो केन्द्रीय योजना कैसे सम्भव हो सकती है ?"

"लेकिन 'गोसबैंक' तो एक केन्द्रीय संस्था है, और सारे ट्रस्ट उसके अधीन हैं। कच्चे माल और तैयारी मालकी क़ीमत वही निर्धारित करता है। किसी ट्रस्टको—चाहे वह उत्पादनका हो, या खपतका—यदि किसी चीजके निर्धारित मूल्यमें आपत्ति हो, तो वह उसे पुनर्विचारके लिए 'गोसबैंक' के पास उपस्थित करता है, न कि उस ट्रस्टके पास, जिसके मालपर आपत्ति है। रही उत्पादनकी केन्द्रीय योजना, सो उसके लिए 'गोसप्लेन' आगामी पाँच वर्षोंके उत्पादनकी योजना बनाकर उसे विभिन्न विषयोंके ट्रस्टों और कम्पनियोंके पास भेजता है। ये ट्रस्ट उस योजनाको पृथक्-पृथक् फैक्टरियोंमें भेजते हैं, जहाँ मजदूर उसपर बहस करके उसमें संशोधन-परिवर्तन करते हैं। आवश्यक संशोधनोंके साथ योजना पुनः उसी ढंगसे 'गोसप्लेन' के पास वापस जाती है, जिस ढंगसे वह उसके पाससे आती है। अन्तमें सब बातोंपर विचार करके 'गोसप्लेन' यह निश्चय करता है कि क्या होना चाहिए। यही केन्द्रीय योजना बनानेका तरीक़ा है। अब आप समझे ?"—उसने पूछा।

"हाँ, लेकिन यह तो उत्पादनकी बात हुई। अगर खपतपर भी उसी संस्थाका नियन्त्रण न होगा, तो फिर अत्यधिक उत्पादन और उसके साथ व्यापारकी मन्दीकी जटिल समस्याएं पैदा हो जायँगी।"

"आप ठीक कहते हैं; लेकिन खपतपर भी 'गोसप्लेन'का नियन्त्रण है। मेशीन, खनिज पदार्थ और कच्चा माल—सारेका सारा सरकारी फैक्टरियोंमें खप जाता है, इसलिए उसकी खपतपर, उत्पादनके अनुसार, नियन्त्रण रखना आसान है।"

"अब आपने व्यक्तिगत व्यापारकी स्वतन्त्रता दे दी है। अब किसान लोग सरकारको केवल एक अन्न-कर ( Grain-tax ) देकर अपने अतिरिक्त अन्नको जिस भाव चाहें, खुले बाज़ार बेंच सकते हैं। क्या आप समझते हैं कि इससे सरकारकी तखमीना की हुई उपजमें फ़र्क़ नहीं पड़ सकता ?"—मैंने पूछा।

"क़ानूनन किसान अपनी उपजको बाज़ारमें बेच सकते हैं; लेकिन यदि वे उसे वहां बेचते हैं, तो उनपर बहुत ज़्यादा टैक्स लगता है, इसलिए आमतौरसे वे उसे सरकारी संस्थाओंको ही बेचना पसन्द करते हैं। प्राइवेट रोज़गारियोंको—यहां तक कि प्राइवेट गाड़ीवानों तकको—भोजनका टिकट ( राशन-कार्ड ) नहीं मिलता। दूसरे रोज़गारोंमें, केवल कुछ बहुत मामूली घरेलू धन्धोंको छोड़कर, कोई भी उत्पादनकी चीज़ प्राइवेट व्यापारियोंके हाथमें नहीं है।

---

# अठारहवाँ अध्याय

एक रिक्शामें बैठकर मैं और कई दूसरे यात्री जेल देखने गये। जेलको भी यहाँ 'सुधार-गृह' कहा जाता है। हमें जेलके लोहेदार फाटकपर छोड़कर पथ-प्रदर्शिका भीतर गई—शायद अधिकारियोंसे इजाज़त लेनेके लिए। हम लोग वहाँ घूमते हुए इस रहस्यमय देशके विषयमें विचार-परिवर्तन करने लगे। किसीने कहा—"ओह! हम लोग इन भयंकर लाल क्रान्तिकारियोंको कैसा होआ समझते थे!"

"लेकिन ये लोग ठीक वैसे ही हैं, जैसे कि किसी अन्य सुसभ्य जातिके लोग।"—दूसरेने उत्तर दिया।

"विदेशी अखबारोंसे हमें यही ज्ञान पड़ता था कि रूसियोंने सारी पुरानी चीज़ोंको मिटा दिया है, [illegible] पहलेकी तमाम मूल्यवान कलाकी वस्तुएँ नष्ट कर दी हैं; और यहाँ न-जाने कितने अनाथ हैं, जिन्हें यह भी पता नहीं कि वे किसकी सन्तान हैं।"—एक महिलाने कहा।

"ये सब (विदेशी अखबार) अव्वल नम्बरके झूठे हैं। जिसे रूसमें [illegible] असली खेल [illegible], मैं तो [illegible] कि [illegible]।"—एक अमेरिकन बोला।

इतनेमें फाटककी जंजीर खुलनेकी झनझनाहट हुई। हम लोग एक-एक करके भीतर दाखिल हुए। [illegible] आकर हम लोगोंका

गिनती की गई, और हमारे नाम-पते लिखे गये—शायद दर्शकोंकी किताबमें। उनके बाद एक खुला सहन पार करके हम लोग एक दूसरे वेटिंग-हालमें पहुंचे, जहां एक चायखाना और जलपानके लिए रिफ्रेशमेंट-रूम था। क़ैदी यहां खाने-पीनेकी जो चीज़ें चाहें, खरीद सकते हैं। यहां पन्द्रह मिनट इन्तज़ार करनेके बाद हम लोग जेलके भीतरी हिस्सेमें ले जाये गये।

पहले हम लोग पहली मंज़िलमें एक थियेटरके रंगमंचके सामने ले जाये गये। थियेटरका स्टेज काफ़ी बड़ा था, और दर्शकोंका स्थान भी पटा हुआ था। वहां कुछ कुर्सियां पड़ी थीं, और दीवारोंपर पंचवर्षीय कार्यक्रमके मोटो लिखे हुए थे। लाल दूलपर सफ़ेद अक्षरोंमें कहीं लिखा था—"हमें अपनी योजना पूरी करनी है", और कहीं लिखा था—"योजना पूरी करके राष्ट्रकी मदद कीजिए।" यह मोटो इसलिए लिखे गये थे, ताकि क़ैदियोंको अपने नागरिक कर्तव्योंकी याद रहे। इस रंगमंचमें क़ैदी कभी-कभी नाटक खेलते या सिनेमा देखते हैं। मेरे आश्चर्यका ठिकाना न था—क़ैदियोंके लिए सिनेमा और थियेटर! पथ-प्रदर्शिकाने जेलके पुराने और नये शासनका अन्तर समझाया। पुराने ज़मानेमें जेल अपराधियोंसे बदला लेने और उन्हें दंड देनेके उद्देशसे बनाये जाते थे; लेकिन नये जेलोंका उद्देश्य है समाजके भूले-भटके सदस्योंको सुधारना और उन्हें इस बातका अवसर देना कि वे नये समाजके उपयुक्त नागरिक बन सकें। अब जेलके लिए 'टूर्मा' ('Turma') शब्दका, जिसका अर्थ 'जेल' है, प्रयोग नहीं होता, बल्कि उसके स्थानमें

'इस्प्रावडम' ('Isprardom') शब्द इस्तेमाल होता है, जिसका अर्थ है 'सुधार-गृह'।

इसके बाद हम लोग बैठकखाने और पुस्तकालयमें ले जाये गये। पुस्तकालयके दोनों पुस्तकाध्यक्ष क़ैदी थे। उनके ऊपर एक इन-चार्ज अफ़सर रहता है। पुस्तकालयके पाठक तो क़ैदी थे ही। पुस्तकालयके सिवा इस भाग्यशाली स्थानके अधिवासियोंके लिए क्लास-रूम भी थे। पुस्तकालय और क्लास-रूममें कुछ अलमारियोंमें जेलकी फैक्टरीमें क़ैदियों द्वारा काते हुए सूत और बिने हुए कपड़ोंके कुछ अच्छे तथा कुछ दोषपूर्ण नमूने और क़ैदियोंकी बनाई हुई कुछ अन्य वस्तुओंके नमूने रखे थे। दीवारपर अलग-अलग चार्टोंमें दोषपूर्ण नमूनोंके दोष समझाये गये थे, जिससे दूसरे लोग उन दोषोंसे बच सकें। पुस्तकालयके एक कोनेमें किसी उन्नत मेशीनका नकशा टँगा था, जिसे किसी होशियार क़ैदीने बनाया था। वह इसलिए टाँगा गया था कि दूसरे क़ैदी उसे देखकर उसपर बहस कर सकें। कामके घंटोंके बाद क़ैदियोंको क्लासोंमें बाक़ायदा शिक्षा दी जाती है, जिससे जेलसे छूटनेपर वे अच्छे नागरिक बन सकें। खाली वक़्तमें ये लोग पुस्तकालयसे लेकर किताबें पढ़ते हैं।

हम लोग उन कोठरियोंमें गये, जहाँ क़ैदी रहते हैं। ये छोटी-छोटी तंग कोठरियाँ न होकर बड़े-बड़े, लम्बे-चौड़े कमरे थे। हर कमरेमें कई-कई लोहेके स्प्रिंगदार पलंग पड़े थे, जिनपर सफ़ेद दूधिया चादरें और तकिये नज़र आते थे। हर कमरेमें रेडियोका लाउड-स्पीकर मौजूद था। रूसने रेडियो-ब्राडकास्टिंगके (प्रचारके

बनवानेके लिए बीस कोपेक और लेंडरसे बाल सवारनेके लिए तीस कोपेक देने पड़ते हैं। लेकिन ये लोग पैसोंकी परवा नहीं करते। इन सबके रिश्तेदार आज इनसे मिलनेके लिए आवेंगे। आप जानते हैं कि अपने प्यारोंके सामने ये लोग गन्दा चेहरा लेकर तो जायेंगे नहीं।"—पथ-प्रदर्शिकाने कहा।

हूँ......तो अब ये लाल बागी भी शौक़ीन होते जा रहे हैं!

"क़ैदियोंको कितने-कितने दिन बाद अपने रिश्तेदारोंसे मुलाक़ात करनेकी इजाज़त मिलती है?"—मैंने पूछा।

"ओह, यह बात तो क़ैदियोंके चाल-चलनपर मुनहसिर करती है। क़ानून-क़ायदे तोड़नेकी सज़ामें आमतौरसे मुलाक़ात करने या चिट्ठी लिखनेका अधिकार छीन लिया जाता है। अगर ये लोग अच्छा काम करते हैं, तो इन्हें बाईस दिन या उससे भी ज़्यादाकी छुट्टी मिलती है। छुट्टीमें ये लोग जाकर अपने रिश्तेदारोंसे मिल सकते हैं, या सरकारी खेतोंपर, जहाँ इन्हें ज़्यादा मज़दूरी मिलेगी, काम कर सकते हैं।"—उसने कहा।

अख़बारोंमें मैंने पढ़ा भी था कि हालमें अच्छे चाल-चलनके लिए यू० एस० एस० आर० ने १२०० क़ैदियोंको मियादके पहले ही छोड़ दिया था।

"क्या ये लोग बाहरवालोंको जितनी चाहें, चिट्ठियाँ लिख सकते हैं?"—मैंने प्रश्न किया।

"बेशक। वे जितनी चाहें, उतनी चिट्ठियाँ लिखें, बशर्ते कि क़ायदा तोड़नेके लिए उनके ख़िलाफ़ कोई रिपोर्ट न हो।

र तो देखना ही है; लेकिन प्राइवेट बातोंपर यह एतराज नहीं
ता।"

"क्या ये जितनी बार चाहें, उतनी बार बाहरवालोंसे मुलाकात
र सकते हैं?"—मैंने पूछा।

"यह सब कैदीके चाल-चलनपर निर्भर करता है। आप
मुलाकात करनेकी ही बात लिये फिरते हैं, 'अपराधियोंके उपनिवेशों'
(Criminal Colonies) में छुट्टीके दिन कैदी पासके गाँवोंमें भी
जा सकते हैं; यहाँ तक कि वे उपनिवेशमें अपनी प्रेमिकाको—
जिसके साथ उनकी सगाई पक्की हुई हो—बुलाकर रख सकते हैं!"

"क्या......?"

मेरे लिए यह बात संसारका आठवाँ आश्चर्य थी। कैदी छुट्टा
छोड़ दिये जायँ और जेलके भीतर प्रेम-चर्चा करें! वास्तवमें यह
मनुष्यतापूर्ण बर्तावकी पराकाष्ठा है! रूसियोंने मनुष्यकी मानव-
वृत्तियोंको कुचला नहीं। यहाँ हम लोग भूल जाया करते हैं कि
आखिर अपराधी भी आदमी ही है। हम यह नहीं सोचते कि यद्यपि
अपराधीने क्षणिक गर्मीमें आकर वर्तमान कानूनका उल्लंघन किया है,
फिर भी वह रक्त-मांसका ही बना हुआ पुतला है। उसे भी
काम तृष्णा होती है......जिसका होना शरीरका स्वाभाविक धर्म है।
लेकिन हम लोग इन बातोंपर ध्यान ही नहीं देते, और जेलके भीतर
त निकलनेपर अपराधीके साथ पशुओं-जैसा बर्ताव
यह बर्ताव बदलेमें उसे पशु बनाकर ही छोड़
हमारे जेलखाने अपराधियोंका सुधार न करके

और भी शातिर तथा और भी खतरनाक बना डालते हैं। मुझे बताया गया कि [illegible] रूसी जेलखानेमें छुट्टीके दिन कैदियोंकी स्त्रियाँ रातभर उनके साथ रह सकती हैं। इसके लिए आवश्यक एकान्तका भी प्रबन्ध है।

मैंने पूछा—"क्या जेलके अधिकारी बाहरवालोंको जेलकी चारदीवारीमें आने देते हैं? कम-से-कम हम लोगोंके लिए तो भीतर जाना आसान नहीं जान पड़ा।"

"आप इमारतमें कहाँसे ले आये? साधारण कैदी 'अपराधियोंके उपनिवेश' में रखे जाते हैं। इस उपनिवेशके चारों तरफ कोई चहारदीवारी तो होती नहीं कि उसमें कोई आ-जा न सके; वह तो सिर्फ गाँवकी तरह एक पुरवा-सा होता है।"—उसकी बातें मुझे अधिकाधिक आश्चर्यमें डाल रही थीं।

"तब यह क्या है?"—मैंने पूछा।

"यह एक सुधार-गृह है। जिन लोगोंको बड़े गहरे जुर्मोंमें सजा होती है, अथवा जो दुबारा जेलमें आते हैं, वे ही यहाँ रखे जाते हैं, बाकी पहली बार जुर्म करनेवाले, जो धोखेबाजी, गबन इत्यादिके मुजरिम होते हैं, आमतौरसे उपनिवेशोंको भेज दिये जाते हैं।"

"क्या बिना चहारदीवारीके उपनिवेशोंसे वे भाग नहीं जाते?"

"नहीं, वे भागकर जायेंगे कहाँ? भागनेपर वे रहेंगे क्या? छुट्टीके दिन वे रातको दस बजे तक उपनिवेशसे बाहर रह सकते हैं।"

"पर जेलके जीवनमें और एक साधारण नागरिकके जीवनमें फर्क ही क्या रहा?"

"वाह, आप उपनिवेशमें हैं, या सुधार-गृहमें हैं, यह विचार दुखदायी है।...फिर आपका वोट देनेका अधिकार छिन जाता है—जो रूसमें सबसे बड़ा श्राप है।"—वह बोली।

कुछ कैदी बाहरके आँगनमें, गिरती हुई बर्फमें, खड़े हुए लकड़ी चीर रहे थे।

हम लोग घूमते हुए एक कपड़ेके मिलमें पहुंचे। इस मिलमें सूतकी कताई-बुनाई हो रही थी। यहाँ बहुतेरी औरतें भी दीख पड़ीं। इस मिलमें कैदियोंको काम सिखाकर कारीगर और विशेषज्ञ बनाया जाता है।

मैंने पथ-प्रदर्शिकासे पूछा—"क्या स्त्री-कैदी पुरुष-कैदियोंके साथ रखी जाती हैं?"

"नहीं, वे साथ नहीं रखी जातीं; लेकिन अगर चाहें, तो कैदी-कैदिन एक दूसरेसे प्रेम करके विवाह कर सकते हैं, और जेलके भीतर पति-पत्नीके रूपमें रह सकते हैं।"—

यह और भी मजेकी बात थी!

"लेकिन इस जेलमें 'क्रेशे' तो है ही नहीं। वे अपने बच्चोंको कहाँ रख सकेंगी? क्या वे यहाँ बच्चे नहीं पैदा कर सकतीं?"

"वे चाहें, तो समीपके गाँवमें बच्चोंको रख सकती हैं, और उन्हें दूध पिलानेके लिए जा सकती हैं। अपराधियोंके उपनिवेशोंमें तो 'क्रेशे' हैं ही।"

"कैदियोंको कितनी देर काम करना पड़ता है?"

"रोज आठ घंटे।"

"लेकिन मैंने तो देखा कि [illegible] कुछ [illegible] थे। [illegible] काम क्यों नहीं करते ?"

"ओह, [illegible] अपनी बारी आनेपर काम करेंगे।"

हम लोग कैदियोंके भोजनालयमें पहुँचे। [illegible] साफ-सुथरा था। कुछ लोग आराम [illegible] भोजन [illegible] थे। हर कैदीको प्रोत्साहन दिया जाता है कि वह उसी कामको [illegible] जिसमें उसे दिलचस्पी हो, अथवा जिसे वह पहलेसे [illegible] करता हो। [illegible] सब-के-सब कैदी थे। यहाँ भी उन्हें हजामत बनानी पड़ती थी। उन्हें भी अन्य कैदियोंकी तरह काम करके महीना मिलता है। [illegible] कैदियोंसे वे जो हजामत बनवाई वसूलते हैं, वह सब [illegible] फंडमें जमा [illegible] जाता है।

समूची संस्थाका परिचालन व्यावहारिक रूपमें कैदी ही करते हैं। जेलका कोई कर्मचारी अगर अपनी ड्यूटीमें कोताही करे, तो कैदी अपने 'दीवारी अखबार' में उसकी आलोचना कर सकते हैं। अधिकारी केवल यह देखते हैं कि कोई शिकायत विद्वेषपूर्ण या फिजूल तो नहीं है; वरना कैदियोंको जो वे चाहें, कहनेकी पूरी आजादी है। वे मीटिंगोंमें, रेडियोमें, या अखबारमें जेलकी उन्नतिके उपाय या परिवर्तन सुझा सकते हैं। उन्हें बार-बार स्मरण दिलाया जाता है कि उन्हें अच्छा नागरिक बनना चाहिए; उनमें से हरएकको राष्ट्रके महान कार्यक्रममें अपना भाग पूरा करना है। यहाँ कैदी कितने स्वाभाविक ढंगसे रखे जाते हैं। यहाँ भी उनके आत्म-सम्मानको अपमानित नहीं किया जाता। इसके विरुद्ध उन्हें

"अब, आप उपनिवेशमें हैं, या सुधार-गृहमें हैं, यह विचार ही दुखदायी है।...कि आपका वोट देनेका अधिकार छिन जाता है—मेरे रूपमें सबसे बड़ा भार है।"—वह बोले।

कुछ कैदी बाहरके आँगनमें, गिरती हुई बर्फमें, खड़े हुए लकड़ीके कुन्दे चीर रहे थे।

हम लोग घूमते हुए एक कपड़ेके मिलमें पहुँचे। इस मिलमें सूतकी कताई-बुनाई हो रही थी। यहाँ बहुतेरी औरतें भी दीख पड़ीं। इस मिलमें क़ैदियोंको काम सिखाकर कारीगर और विशेषज्ञ बनाया जाता है।

मैंने पथ-प्रदर्शिकासे पूछा—"क्या स्त्री-क़ैदी पुरुष-क़ैदियोंके साथ रखी जाती हैं?"

"नहीं, वे साथ नहीं रखी जातीं; लेकिन अगर चाहें, तो क़ैदी-क़ैदिन एक दूसरेसे प्रेम करके विवाह कर सकते हैं, और जेलके भीतर पति-पत्नीके रूपमें रह सकते हैं।"—

यह और भी मज़ेकी बात थी!

"लेकिन इस जेलमें 'बच्चे' तो हैं ही
...हाँ रख सकेंगी? क्या वे यहाँ बच्चे न

"वे चाहें, तो समीपके गाँवमें
...पिलानेके लिए जा सकती
...े' हैं ही।"

"यहाँ क़ैदियोंको...

"हर रोज़ आठ घंटे

गिराने नहीं, बल्कि ऊँचा उठानेके लिए है। इसका उद्देश है समाजके भूले-भटके सदस्योंको सत्पथ दिखलाना।"

यह सच भी था। सरकार बदला लेनेकी भावनासे कैदियोंके साथ व्यवहार नहीं करती, बल्कि उन्हें समझा-बुझाकर राजी करनेकी भावनासे व्यवहार करती है।

---

अपने आत्म-सम्मानको क़ायम रखनेमें सहायता दी जाती है। उन्
पढ़ना, लिखना और हिसाब सिखाया जाता है। अखबारों, किता
और रेडियोके द्वारा उच्च विचारों और विदेशोंसे उनका परिचय कराय
जाता है। उन्हें काम सिखाकर अच्छा कारीगर बनाया जाता है, औ
जेलसे छूटनेपर उनकी मज़दूरीकी काटी हुई रक़म उनके हाथपर ध
दी जाती है, जिससे वे कम-से-कम कुछ दिन तक—जब तक उन्
कोई काम न मिले—अपना भोजन चला सकें। क़ैदीके भावी जीवनमें
क़ैद काटनेके कारण कोई दाग नहीं लगता। रूसमें क़ैदी कोई भी
उच्च पद—जिसके योग्य वह हो—पा सकता है। सिर्फ़ इसीलिए कि
वह सज़ा काट चुका है, कोई उसे काम देनेसे इनकार न करेगा।
यह समझा जाता है कि क़ैदी रास्ता भूलकर अपराधके मार्गपर जा
पड़ते हैं, इसलिए जब उन्हें फिरसे सुमार्गपर लगा दिया जाय, तब
उन्हें भी जीवनकी सारी सुविधाएँ मिलनी चाहिए। न तो सरकार
उनपर मुँह बनाती है और न समाज ही।

मेरे साथके एक यात्रीने कहा—"कमाल है!"

मैंने कहा—"यहाँ रेडियो, जलपानकी दूकान, अखबार, नाईखाना,
थियेटर और इन सबसे बढ़कर प्रेम-चर्चा और विवाह-शादी तक
जेलमें मौजूद है, तब जेल-जीवन कैसा? यह तो घरेलू जीवनसे
बढ़कर है।"

"जनाबमन, यह जेल नहीं है,"—नवयुवती पथ-प्रदर्शिकाने कहा—
"यह 'सुधार-गृह' है। यह इसलिए नहीं है कि क़ैदीकी सारी
इंसानियतको कुचलकर निकाल बाहर किया जाय। यह उन्हें दबानेके

लिए नहीं, बल्कि ऊंचा उठानेके लिए है। इसका उद्देश है समाजके भूले-भटके सदस्योंको सत्पथ दिखलाना।"

यह सच भी था। सरकार बदला लेनेकी भावनासे कैदियोंके साथ व्यवहार नहीं करती, बल्कि उन्हें समझा-बुझाकर राजी करनेकी भावनासे व्यवहार करती है।

---

# उन्नीसवाँ अध्याय

मेरी यात्रा समाप्त हो गई। मैं इसी शामको मास्कोसे रवा
हो गया ; पर लाल यात्रियोंके मुल्कपर अन्तिम परदा डालनेके पह
मैं दूसरे पंचवर्षीय कार्यक्रमके सम्बन्धमें, जिसपर उन दिनों कु
वाद-विवाद चल रहा था, कुछ कहना चाहता हूं। रूसमें मेरे रह
समय दैनिक पत्रोंमें विभिन्न विभागोंके प्रधान अधिकारियोंकी रिपोर्टें
प्रकाशित हो गई थीं। इन रिपोर्टोंमें उन्होंने बतलाया था कि प्रथम
पंचवर्षीय कार्यक्रमके सवा चार वर्षोंमें—जितने दिन वह कार्यक्रम
चालू रहा—उन्होंने क्या-क्या कर दिखाया। मुझे मास्कोका एक
अंगरेज़ी दैनिक 'मास्को डेली न्यूज़' पढ़नेका मौक़ा मिला था।
पाठकोंको इसका कुछ आभास देनेके लिए कि पहले कार्यक्रममें कितना
काम हुआ और दूसरा कार्यक्रम कितना विशाल है, मैं नीचे कुछ
आंकड़े देता हूं :—

| ...्या | पहले कार्यक्रमका प्रस्ताव | पहले कार्यक्रमका उत्पादन | १९३७ तक दूसरे कार्यक्रमकी योजना |
|---|---|---|---|
| ...र | ५१,००० | १,०५,८५० | — |
| ...ी गाड़ियाँ | १२,६०० | ३०,००० (१९३२ के आंकड़े) | — |
| ... इंजन | ८२५ | ८१२ (१९३१ के आंकड़े) | — |
| | ६·०१ करोड़ | ७·६८ करोड़ (१९३१ के आंकड़े) | — |

| | | | |
|---|---|---|---|
| बिजलीकी रेल | — | — | १२,००० मील |
| बिजलीकी पॉवर | — | १७ अरब K.W.H | ? अरब K.W.H |
| ट्रैक्टरकी शक्ति | | | |
| बिजलीका खर्च | | १०० यूनिट | ४०० यूनिट |

रूसी धन्धोंका विकास कितने ज़ोरोंसे हो रहा है, इसका अन्दाज़ लगानेके लिए मैं यहाँ केवल एक बड़े धन्धे—यानी मोटर बनानेके धन्धे—के आँकड़े देता हूँ :—

| सन् | उत्पादन |
|---|---|
| १९३० | ८,५०० |
| १९३१ | २४,५०० |
| १९३२ | ५६,००० |

रूसियोंका दावा है कि जिस उद्देश्यकी पूर्तिमें अमेरिकाको तीन वर्षसे अधिक लगे, उसे रूसी छः वर्षमें ही पूरा कर डालेंगे। उन्होंने तथ्यों और आँकड़ों द्वारा इस दावेकी सचाईको साबित भी कर दिया है।

अपने दूसरे [illegible]की समाप्तिपर, जहाँ तक भारी उद्योगोंका सम्बन्ध है, यू० एस० एस० आर० पूर्ण स्वावलम्बी बन जायगा। तब वह हलके उद्योग-धन्धोंकी ओर—यानी उन धन्धोंकी ओर, जिनसे जनताके रहन-सहनका स्टैण्डर्ड ऊँचा होगा—ध्यान देगा। अभी तक [illegible] भारी उद्योग-धन्धोंकी तरफ [illegible] था, क्योंकि उसके भारी उद्योग धन्धे वास्तवमें थे ही नहीं, और बिना उनके उसका अस्तित्व ही ख़तरेमें था। इसलिए देशकी रक्षाके लिए उसे [illegible],

कुर्बान करनेके सिवा चारा ही न था। अभी तक रूसी जनतामें जो थोड़ा बहुत श्रेणी-भेद है, दूसरे कार्यक्रमके बाद वह भी उठ जायगा। रूसियोंने निश्चय कर लिया है कि वे एक ऐसे समाजका निर्माण करके छोड़ेंगे, जो वर्ग या श्रेणी-भेदसे एकदम मुक्त हो इस समय रूसके बुद्धिवर्गीय लोग 'कारीगर' (skilled) के नामसे पुकारे जाते हैं, और उन्हें अन्य लोगोंकी अपेक्षा अधिक वेतन और सुविधाएं प्राप्त हैं। रूसी चाहते हैं कि सभी लोगोंको साक्षर और 'कारीगर' बनाकर इस भेदको भी उठा दिया जाय; लेकिन अगले तीन-चार कार्यक्रमोंसे पहले वे लोग इसमें सफल हो सकेंगे, इसमें मुझे शक है।

रूससे मैं जो किताबें और कागज़ात लाया था, दुर्भाग्यसे वे नष्ट हो गये, इसलिए इस सम्बन्धमें मैं आंकड़ों और व्याख्यानोंके सारे उद्धरण नहीं दे सकता। उन पुस्तकोंके नष्ट होनेके पहले मैंने अपने लेखोंमें जो आंकड़े दिये थे, वही यहां दिये गये हैं। यह आंकड़े रूसकी उन्नतिकी कथा आप ही कहते हैं। मैंने जहां तक हो सका, पाठकोंके सामने इस रहस्यपूर्ण देशका पक्षपात-रहित विवरण उपस्थित करनेकी कोशिश की है। मैंने अपनी शक्ति-भर यू० एस० एस० आर० की काली और उजली दोनों दिशाएँ देखकर उनको उन पाठकोंके, जो किसी पक्षपात-रहित लेखनीसे आतंकवादकी इस लीलाभूमिके सम्बन्धमें कुछ जाननेके लिए उत्सुक हैं, सामने रखनेका प्रयत्न किया है।

इसमें सन्देह नहीं कि रूसने अनेक ऐसी बातें कर दिखाई

है, जो प्रायः असम्भवकी श्रेणीमें गिना जाता था। दस वर्षमें रूसियोंने अपने देशकी जितनी उन्नति की है, उतनी रूसकी तरह पिछड़ा हुआ कोई अन्य देश सौ वर्षमें भी कर सकेगा, इसमें सन्देह है। पर साथ ही कम्यूनिस्ट जितना दावा करते हैं, उतना सोलहो आना ठीक नहीं है। उन्हें व्यावहारिक क्षेत्रमें आकर अपने कई कट्टर आदर्शोंके सम्बन्धमें परिवर्तन और समझौते करने पड़े हैं। फिर भी सामाजिक विकासकी दृष्टिसे रूस संसारके लिए अध्ययनकी वस्तु है।

मैं शामकी गाड़ीसे मास्कोसे रवाना हुआ। ट्रेनमें एक रूसी सज्जनसे भेंट हुई। उन्होंने अपनेको ग्रन्थकार बताया। मैंने उनसे पूछा—"आपको हरएक पुस्तकपर क्या मिलता है?"

'हरएक ४०,००० शब्दोंपर चार सौ रूबल।"

"क्या अधिकारी आपकी सारी पुस्तकें खरीद लेते हैं?"

"हाँ, उन्हें उनकी बहुत जरूरत है।"

"आप नाटक लिखते हैं, या उपन्यास?"

"मैं स्कूली पुस्तकें लिखता हूँ। उसमें अच्छी गुञ्जायश है, लाभ भी ज़्यादा होता है; फिर आपको पुस्तकोंकी बिक्रीकी बिलकुल चिन्ता नहीं करनी पड़ती। अगर पुस्तकें पाठ्यक्रमके अनुसार लिखी गई हों, तो शिक्षा-विभाग उन्हें ले लेता है।"—उसने समझाया।

"अच्छा, आपके नाटककारों और उपन्यास-लेखकोंको काफ़ी पैसा ना है?"

लेखक महोदयने अपनी आँखों जो देखा या सुना, उसका वर्ण[illegible] उन्होंने पुस्तकमें किया है; परन्तु 'आजके रूस'का पूरा आभा[illegible] पानेके लिए कुछ और भी चाहिए, इसलिए मैंने यह परिशिष्ट भा[illegible] जोड़ दिया है। इसमें जो आंकड़े दिये गये हैं, उन्हें यथासम्भ[illegible] अप-टू-डेट बनानेका प्रयत्न किया गया है। उनके प्रामाणिक होने[illegible] सन्देहकी बहुत कम गुंजाइश है, क्योंकि अधिकांशमें वे स्टॅलि[illegible] द्वारा तैयार की हुई सोविएट यूनियनकी कम्यूनिस्ट पार्टीकी केन्द्री[illegible] कमेटीकी रिपोर्टसे लिये गये हैं। (यह रिपोर्ट सन् १९३४ मे[illegible] प्रकाशित हुई है।)

—ब्रजमोहन वर्मा
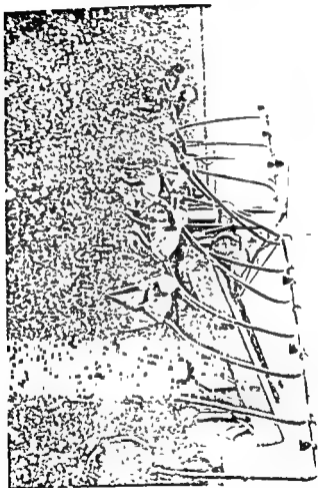
अब तक जो क्रान्तियाँ होती रहीं, उनमें केवल शासक व
शासन-प्रणालियोंमें ही परिवर्तन होता रहा। जनसाधारणके आ
या सामाजिक गठनपर उनका प्रभाव न-कुछके बराबर ही प
रहा। हाँ, फ्रांसकी राजक्रान्तिने अलबत्ता कुछ न
सिद्धान्तोंको जन्म दिया था, जिसका प्रभाव संसारके अनेक देश
पड़ा था। परन्तु रूसी क्रान्तिकारियोंने अपने पुराने शासकोंक
नेस्तनाबूद नहीं किया, बल्कि देशके समूचे सामाजिक और आ
संगठनकी जड़पर भी कुठाराघात किया है। वे सोलह क
आदमियोंके जीवनको एक नवीन सांचेमें—ऐसे सांचेमें, जिसको
भी आज तक किसीने न देखी थी—ढाल रहे हैं। वे एक
काल्पनिक आदर्श समाजका निर्माण कर रहे हैं, जो मानव-इतिहा
बिलकुल नया और निराला होगा। उनका प्रयोग सफल होगा
असफल, हितकर होगा या अनिष्टकर—इस बातपर भयंकर मतभ
है, और इसका निर्णय समय ही कर सकेगा ; परन्तु इस बातसे क
भी इनकार न करेगा कि उनका प्रयोग मानव-इतिहासका सब
महान प्रयोग है। यह इतना विशाल है कि उसकी कल्पना भ
मुश्किल है। इस रूसी प्रयोगको निरपेक्षता मन्दात लगाने
लिए हमें रूसकी भौगोलिक स्थिति, वहाँके अधिवासियोंकी वि
और वर्तमान अवस्था आदि बातें ध्यानमें रखनी होंगी।

देश और लोग

रूस संसारका सबसे बड़ा देश है। यह एशियाके पूर्वीय छोरसे
लेकर यूरोपके पश्चिम-पूर्वीय छोर तक फैला हुआ है। यदि दुनिया

और प्रशान्त महासागर उसके तट-प्रदेशको धोता है, तो पश्चिमकी ओर एटलांटिक महासागर अपनी भुजा—बाल्टिक समुद्र—पसारकर उसके चरण-स्पर्श करता है। उसके उत्तरी सीमान्तको ध्रुव-प्रदेशकी सर्दी बारहो महीने बर्फका सफेद कफन ओढ़ाये रहती है। दक्षिणकी ओर काला समुद्र और कास्पियन समुद्रके अतिरिक्त बल्गेरिया, टर्की, ईरान, अफगानिस्तान और चीन उसके पड़ोसी देश हैं।

रूसका क्षेत्रफल ८१,४४,२२८ वर्गमील है। वह संसारकी समूची बसने-योग्य भूमिका छठवाँ हिस्सा घेरे हुए है। एक ही राजनैतिक शासनके अधीन, एक ही स्थानपर, इतना बड़ा कोई दूसरा भूभाग संसारमें नहीं। यद्यपि क्षेत्रफलमें ब्रिटिश साम्राज्य रूससे थोड़ेसे अधिक बड़ा है; लेकिन वह समूची पृथिवीपर, हजारों भिन्न-भिन्न कोनोंमें, छितराया हुआ है। क्षेत्रफलके हिसाबसे रूस यूरोप महाद्वीपसे,—जिसमें रूसको छोड़कर सत्ताईस देश हैं—चार गुना, हिन्दोस्तानसे साढ़े चार गुना और इंग्लैण्डसे सौ गुना बड़ा है!

रूसके पश्चिमी सिरेसे पूर्वीय सिरे तक जाना चाहें, तो आपको पूरे आठ दिन लगेंगे!

देशके मध्य भागमें, एशिया और यूरोपके सीमान्तपर, यूराल पहाड़ है, और साइबेरियाके दक्षिणी भागमें आल्टाई पर्वत है; बाकी समूचा देश एक अत्यन्त विशालकाय मैदान है। इस मैदानमें कहीं-कहींपर खेत हैं, कहीं-कहींपर जंगल हैं,

समय पहले-पहल इस देशके लिए 'रूस' और इसके अधिवासियोंके लिए 'रूसी' शब्दका प्रयोग हुआ था।

दसवीं शताब्दीमें, वाल्डीमीर राजाके शासनकालमें, रूसने ईसाई धर्म स्वीकार किया ; लेकिन वे ग्रीसके कट्टर ईसाई धर्म (Orthodox Greek Church) के अनुयायी बने। इस कालके रूसी सामाजिक दृष्टिसे दो श्रेणियोंमें विभाजित थे। एक श्रेणीमें राजा, उनके अनुगामी और शहरोंमें रहनेवाले स्वतन्त्र लोग थे, और दूसरीमें थे गुलाम और किसान।

तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दीमें रूसके उत्तरी हिस्सेमे लिथुआनिया और पोलैण्ड वालोंने अपनी शक्ति बढ़ाई, और दक्षिणी हिस्सेमें मंगोलियों और तातारियोंने एक राज्य स्थापित किया। उस समय मास्कोका राज्य तातारियोंके अधीन एक करद राज्य था ; लेकिन तातारियोंके पतनपर मास्कोके राजाका प्रभुत्व बहुत बढ़ गया।

कुस्तुनतुनियाका बैज़न्टाइन साम्राज्य रोमन साम्राज्यका उत्तराधिकारी था। बैज़न्टाइन साम्राज्यकी समाप्तिपर मास्कोके राजाने सन् १५४७ में अपनेको रोमन साम्राज्यका उत्तराधिकारी घोषित करके सुप्रसिद्ध रोमन सम्राट 'सीज़र' के नामपर 'ज़ार' की पदवी ग्रहण की। इस प्रकार 'ज़ार' 'सीज़र' और 'क़ैसर' शब्द एक ही शब्दके तीन भिन्न-भिन्न रूप हैं। अब रूसमें ज़ारोंका शक्तिमान स्वेच्छापूर्ण शासन स्थापित

अधिकार प्राप्त थे ; लेकिन

किसी तरहका कोई

सहज ज़ारका 'सर्फ़' (Serf) या 'गुलाम' कहा जाना था। धीरे-धीरे गिरजों और पादरियोंने बड़ी-बड़ी जमींदारियाँ अधिकृत करके बहुत धन और बल प्राप्त कर लिया।

ज़ार आइवनकी मृत्युपर गद्दीके कई दावेदार खड़े हुए, जिससे देशमें बड़ी गड़बड़ी मची। अन्तमें सन् १६०३ में माइकेल रोमानाफ़ ज़ार चुना गया। इसीके नामपर ज़ारका वंश रोमानाफ़ कहलाया। लेनिनने इसी रोमानाफ़-वंशका आखिरी चिराग बुझाया था।

रोमानाफ़ ज़ारोंने किसानोंके अधिकार घटा-घटाकर ज़मींदारोंकी शक्ति बढ़ाई। सारेके सारे किसान जमींदारोंके गुलाम—'सर्फ़'—बन गये।

सन् १६६८ में ज़ार महान पीटरके गद्दीपर बैठनेपर रूसका सुधार यूरोपियन राष्ट्रोंमें होने लगा। पीटरने अपने देशके साहित्य, कला, शिक्षा, व्यापार, संस्कृति आदिको बहुत प्रोत्साहन दिया और अनेक सुधार किये। उसने सेंट-पीटर्सबर्ग नगर बसाकर वहाँ अपनी राजधानी स्थापित की। सेंट-पीटर्सबर्ग क्रान्तिके कुछ दिन बाद तक रूसकी राजधानी रहा। यही आजकल लेनिनग्रेड कहलाता है।

लेकिन पीटरके सारे सुधार धनियों और रईसोंके लिए ही थे। किसानोंकी दशा गुलामोंकी भाँति ही बनी रही। सारे टैक्सोंका भार उन्हींपर पड़ता था। जमींदार नाराज होकर उन्हें साइबेरियाके ठंडे वनोंमें भेज सकता था; बेंत लगवा सकता था; अथवा किसी दूसरे जमींदारके हाथ बेच सकता था। किसान जमींदारके अत्याचारोंके विरुद्ध सरकारसे फ़रियाद नहीं कर सकते थे। इनका

हुक्मसे खानों और कारखानोंमें काम करनेके लिए किसान 'सर्फ़' है भेजे जाते थे। फल-स्वरूप रूसमें थोड़े-से आदमी तो बहुत धन होते रहे और बाक़ी सब अत्यन्त दरिद्र। वहाँ मध्य-श्रेणी पूर्ण तरह विकसित हो न हो पाई।

रूसी ज़ारशाहीका रोलर कई शताब्दी तक किसानोंपर चलता रहा। उन्नीसवीं शताब्दीमें किसानोंमें इस गुलामीके विरुद्ध बेचैनी पैदा हुई। नवीन आर्थिक परिस्थितियोंसे किसानोंको 'सर्फ़' बनाये रखनेमें अधिक लाभ भी न रह गया था, इसलिए सन १८६१ में ज़ारने 'सर्फ़'-प्रथाका अन्त कर दिया। किसान आज़ाद कर दिये गये; लेकिन उससे उनकी दशामें कोई सुधार न हुआ, क्योंकि देशमें किसीको राजनैतिक अधिकार प्राप्त न था। शिक्षाके प्रचारसे व्यापारी और धनीवर्ग भी राजनैतिक अधिकारोंकी कमीको बुरी तरह महसूस करने लगा। सन् १८७६ में षड़यन्त्रकारियोंने गुप्त रूपसे 'जनताकी स्वतन्त्रता' नामक एक सभा बनाई, और उसीसे रूसी क्रान्तिका सूत्रपात हुआ। सन् १८८१ में इसी सभावालोंने ज़ारकी हत्या कर दी। नया ज़ार अलेक्ज़ेंडर द्वितीय और भी अधिक अत्याचारी निकला। उसने दमनकी चक्की और भी कसकर चलाई। इसपर षड़यन्त्रकारियोंने भी ज़ोर पकड़ा। आये दिन सरकारी अधिकारियोंकी हत्याएँ होने लगीं। एलेक्ज़ेंडरके बाद निकोलस ज़ार हुआ। यही रूसका अन्तिम ज़ार था। 'सर्फ़'-प्रणालीका अन्त होनेपर कारखानोंमें काम करनेवाले मजदूरोंका एक नया वर्ग बन गया। लेकिन इस वर्गकी दशा भी बड़ी बुरी थी। निकोलसके शासनके

आरम्भमें ही इन मज़दूरोंकी एक बड़ी हड़ताल हुई, जिसका उसने बड़ी निष्ठुरतासे दमन किया। लोगोंमें दिन-ब-दिन असन्तोष बढ़ रहा था। सन् १८९८ में रूसमें 'सोशल डेमाक्रेटों' की एक पार्टी बनी, जिसने गुप्त रूपसे क्रान्तिकारी विचारोंका प्रोपेगेण्डा शुरू किया। यह क्रान्तिकारी दल रूसमें तो अपनी कोई सभा कर न सकता था, इसलिए सन् १९०३ में उसने लन्दनमें अपनी एक कानफ्रेंस बुलाई। इस कानफ्रेंसमें कुछ सिद्धान्तोंको लेकर आपसमें फूट पड़ गई। कानफ्रेंसके अधिकांश लोग अपने एक नेता निकोलाय लेनिनके साथ हो गये, इसलिए वे अपनेको 'बोल्शेविक' कहने लगे। रूसी भाषामें 'बोल्शेविक' शब्दका अर्थ है—बड़ा या बहुमत। बाक़ी अल्पसंख्यक लोग 'मेनशेविक'—अल्पमत—के नामसे पुकारे जाने लगे।

इस कानफ्रेंसके बाद ही रूस-जापानमें युद्ध छिड़ गया, जिसमें रूस हार गया। क्रान्तिकारियोंने अपने विचारोंके प्रचार करनेका यह अच्छा मौक़ा समझा। वे शासनको ही नहीं, वरन समूचे सामाजिक संगठनको ही बदल देना चाहते थे। देशमें कुछ नरम दलके लिबरल भी थे, जो रूसमें इंग्लैण्ड जैसी पार्लामेंटरी शासन-प्रणाली स्थापित हो जानेसे ही सन्तुष्ट होना चाहते थे।

९ जनवरी सन् १९०५ को कई हज़ार मज़दूर गेपन नामक एक पादरीकी अध्यक्षतामें ज़ारके शरत्-प्रासादके सामने ज़ारको अपनी दुःखगाथा सुनानेके लिए एकत्रित हुए। ज़ारकी फ़ौजने इन निहत्थे मज़दूरोंपर गोली चलाकर एक हज़ार आदमियोंको मौतके घाट उतार दिया। इसपर सारे संसारमें ज़ारशाहीके विरुद्ध घृणाकी एक लहर

गोड़ गई। किसान लोगोंने इन मोर्चोंपर ज़ारपर प्रभाव डाला कि वह पार्लमेंटरी शासन स्थापित करें। अन्तमें ज़ारने इसे मंज़ूर करके 'डूमा'—पार्लमेंट—की स्थापना की। लेकिन यह पार्लमेंट दिखावटी ही थी, उसे अधिकार न होनेके बराबर था। अक्तूबर १९०५ में एक देशव्यापी हड़ताल हुई, जिसमें, रेल, तार, डाकखाने, कारखाने, व्यापारियोंकी कोठियां, दूकानें और स्कूल तक बन्द हो गये। ज़ारने मजबूर होकर एक घोषणापर दस्तख़त किये, जिसमें उसने लोगोंको व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और सभा-समितियां बनाने, व्याख्यान देने और विचार प्रकट करनेकी स्वतन्त्रता देनेका वचन दिया, और वादा किया कि बिना डूमाकी मंज़ूरीके कोई भी क़ानून न बनाया जायगा। पर शीघ्र ही डूमाके अधिकार छीन लिये गये और पुराना दमन आरम्भ हो गया।

सन् १९१४ में महायुद्धमें रूसने मित्र-राष्ट्रोंका साथ दिया। कुप्रबन्धके कारण देशकी आन्तरिक अवस्था इतनी ख़राब हो गई कि मार्च १९१७ में बग़ावत शुरू हो गई। डूमाके मेम्बरोंने करेंस्कीकी अध्यक्षतामें एक अस्थायी सरकार बनाकर ज़ारको गद्दी छोड़नेके लिए मजबूर किया। लेकिन डूमाके बाहर जो क्रान्तिकारी थे, वे साम्यवादी शासन स्थापित करना चाहते थे। अनेक मज़दूरों, सिपाहियों और किसानोंने अपनी-अपनी सोवियटें—पंचायतें—बना रखी थीं। इनमें अनेक बोल्शेविक भी थे, जिन्होंने फ़ौरन युद्ध समाप्त करनेकी सलाह दी। पहले तो सोवियटोंने उसे न माना; पर बादमें उन्होंने उसे मंज़ूर कर लिया। इसी समय लेनिन विदेशसे लौटकर रूस

हुआ और उसने बोल्शेविक पार्टीका संचालन अपने हाथमें लिया।

२६ अक्टूबरको दूसरी क्रान्ति शुरू हुई। बोल्शेविकोंने बिना गोली चलाये, रेल, तार और सरकारी इमारतोंपर कब्जा कर लिया। [illegible] इस परिवर्तनको दबानेके लिए घोर चेष्टाएँ हुईं, मगर जीत क्रान्तिकारियोंकी हुई। कई वर्ष तक गृह-युद्ध चलता रहा। मित्र-राष्ट्रोंने क्रान्तिकारियोंकी साम्यवादी सरकारको मिटानेके लिए धन, सेना, युद्धसामग्री और राजनैतिक दाँव-पेंचोंसे अनेक प्रयत्न किये। रैंगल, कोलचक आदि बोल्शेविक-विरोधी सेनापति खड़े किये गये; मगर अन्तमें वे सब परास्त हुए। १९२१-२२ में रूसमें बड़ा भयंकर अकाल पड़ा, जिसमें लाखों आदमी मर गये।

### संसारकी तीन आर्थिक प्रणालियाँ

इस समय संसारमें सम्पत्तिके विभाजन और सामाजिक गठनकी तीन आर्थिक प्रणालियाँ दीख पड़ती हैं—पूँजीवाद, कम्यूनिज्म और साम्यवाद या सोशलिज्म।

संसारके तमाम देशोंमें पूँजीवादकी प्रणाली प्रचलित है। इस प्रणालीमें उत्पादनके साधनोंपर लोगोंका व्यक्तिगत अधिकार रहता है। लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थके लिए मनमानी प्रतियोगिता और चालबाजियाँ कर सकते हैं। सरकार इसमें कम-से-कम हस्तक्षेप करती है। कम्यूनिस्टोंका कथन है, इस प्रणालीके कारण संसारकी सारी सम्पत्ति $\frac{1}{10}$ लोगोंके—मुट्ठी-भर धनिकोंके—हाथमें आ गई है, और वही उसका भोग करते हैं; बाकी $\frac{9}{10}$ मेहनत-मजदूरी करनेवाली जनता सम्पत्तिसे वंचित रह जाती है।

### उद्योग-धन्धोंमें रूसका स्थान

आधारभूत उद्योग-धन्धों ( Basic industries ) में संसारके देशोंमें रूसका सन् १९१३ में कौन-सा स्थान था, और सन् १९२८ और १९३२ में कौन-सा स्थान हो गया, यह बात नीचेकी तालिकासे प्रकट होगी :—

| उद्योग-धन्धा | १९१३ | १९२८ | १९३२ | |
|---|---|---|---|---|
| | | | संसारमें | यूरोपमें |
| बिजलीकी शक्ति | पन्द्रहवाँ | दसवाँ | छठा | चौथा |
| कोयला | छठा | छठा | चौथा | तीसरा |
| कच्चा लोहा | पाँचवाँ | छठा | दूसरा | पहला |
| मेशीनें | चौथा | चौथा | दूसरा | पहला |
| तेल | दूसरा | तीसरा | दूसरा | पहला |
| खेतीकी मेशीनें | — | चौथा | पहला | पहला |
| ट्रैक्टर | — | चौथा | पहला | पहला |
| पीट (Peat) | — | — | पहला | पहला |
| मोटर | — | बारहवाँ | छठा | पहला |
| समस्त उद्योग-धन्धे | — | पाँचवाँ | दूसरा | पहला |

इस प्रकार सन् १९१३ में रूसका कोई भी स्थान न था, पर आज उसका नम्बर दूसरा है।

### विभिन्न देशोंका औद्योगिक उत्पादन

पिछले तीन वर्षोंसे सारा संसार व्यापारिक मन्दीसे दुखी तथा पीड़ित है। प्रत्येक देशका उत्पादन घट रहा है, इसके विपरीत रूसका

उत्पादन बढ़ रहा है। यह नीचेके आंकड़ोंसे प्रकट होगा। सन् १९२९ के आंकड़ोंको १०० मानकर उत्पादनको घटा-बढ़ी दिखाई गई है :—

| देश | १९२९ | १९३० | १९३१ | १९३२ | १९३३ |
|---|---|---|---|---|---|
| रूस | १०० | १२९·७ | १६१·९ | १८४·७ | २०१·६ |
| अमेरिका | १०० | ८०·७ | ६८·१ | ५३·८ | ६४·९ |
| इंग्लैण्ड | १०० | ९२·४ | ८३·८ | ८३·८ | ८६·१ |
| जर्मनी | १०० | ८८·३ | ७१·७ | ५९·८ | ६६·८ |
| फ्रांस | १०० | १००·७ | ८९·२ | ६९·१ | ७७·४ |

यदि महायुद्धके पूर्व सन् १९१३ के आंकड़ोंसे तुलना करें, तो यह घटा-बढ़ी और भी स्पष्ट दीख पड़ेगी।

सन् १९१३ का उत्पादन यदि १०० था तो—

| देश | १९२९ | १९३० | १९३१ | १९३२ | १९३३ |
|---|---|---|---|---|---|
| रूस | १९४·३ | २५२·१ | ३१४·७ | ३५९·० | ३९१·९ |
| अमेरिका | १७०·२ | १३७·३ | ११५·६ | ९१·४ | ११०·२ |
| इंग्लैण्ड | ९९·१ | ९१·५ | ८३·० | ८३·५ | ८५·२ |
| जर्मनी | ११३·० | ९९·८ | ८१·० | ६७·६ | ७५·४ |
| फ्रांस | १३९·० | १४०·० | १२४·० | ९६·१ | १०७·६ |

इस प्रकार सन् १९१३ के बाद जहां किसी भी देशका उत्पादन १० फी-सदीसे अधिक नहीं बढ़ा, बल्कि उल्टा घट गया, वहां रूसका उत्पादन २९१ फी सदी बढ़ा!

चौमुखी उन्नति

तीन वर्षमें—१९३० के अन्तसे १९३३ के अन्त तक—रूसने कितनी उन्नति की है, यह नीचेके आंकड़ोंसे प्रकट होगी :—

| विषय | १९३० | १९३३ |
|---|---|---|
| राष्ट्रीय आय | ३५,००,००,००,००० रूबल | ५०,००,००,००,००० रूबल |
| आबादी | १६,०५,००,००० | १६,८०,००,००० |
| मज़दूर और आफिसके कर्मचारी | १,४५,३०,००० | २,१८,८३,००० |
| औद्योगिक मज़दूरकी वार्षिक आयका औसत | ९९१ रूबल | १,५१९ रूबल |
| सामाजिक बीमा-फंड | १,८१,००,००,००० रूबल | ४,६१,००,००,००० रूबल |
| साक्षरता | ६७ फी सदी | ९० फी सदी |
| स्कूलोंमें छात्रोंकी संख्या | १,४३,५८,००० ( १९२९ ) | २,६४,१९,००० |
| वैज्ञानिक रिसर्चकी संस्थाएँ | ४०० (१९२९) | ८४० |
| मज़दूर-किसानोंके क्लब | ३२,००० (१९२९) | ५४,००० |
| सिनेमा-थियेटर | ९,८०० (१९२९) | २९,२०० |
| अखबारोंका प्रचार | १,२५,००,००० कापियाँ (१९२९) | ३,६५,००,००० कापियाँ |
| दूकानें और स्टोर | १,८४,६६२ | २,७७,९७४ |
| को-आपरेटिव व्यापार | १८,९०,००,००,००० रु० | ४९,००,००,००,००० रु० |
| मोटर | ८,८०० (१९१३) | १७,८००० |
| मज़दूरोंके कामके घंटे | ८ घंटे प्रतिदिन | ७ घंटे प्रतिदिन |

खेतोंका विभाजन ( लाख हेक्टरोंमें )

| | १९२९ | १९३० | १९३१ | १९३२ | १९३३ | १९३३ के रकबेका फी सदी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सोव्होज़ | १५ | २९ | ८१ | ९३ | १०८ | १०·६ |
| कोल्होज़ | ३४ | २९७ | ६१० | ६९१ | ७५० | ७३·९ |
| प्राइवेट खेत | ९११ | ६९२ | ३५३ | २१३ | १५७ | १५·५ |
| जोड़ | ९६० | १०१८ | १०४४ | ९९७ | १०१५ | १०० |

रूसी फौज

रूस साम्राज्यवादी देश नहीं है। वह दूसरोंपर हमला करना नहीं चाहता, इसलिए वह, आबादीको देखते हुए, अपेक्षाकृत छोटी सेना रखता है ; यह बात नीचेके अंकोंसे प्रकट होगी :—

| देश | सेना | १०० की आबादीपर सैनिक-संख्या |
|---|---|---|
| फ्रांस | ६,७३,००० | १६ |
| इटली | ३,५३,००० | ८ |
| पोलैंड | २,७०,००० | ९ |
| रूमानिया | ३,२५,००० | १८ |
| सोवियट रूस | ५,६२,००० | ३·५ |

रूसी प्रजातन्त्र

रूसी साम्यवादी सोवियट प्रजातन्त्रोंके संघमें निम्न-लिखित सात प्रधान प्रजातन्त्र हैं :—

आदर्शके विपरीत है। उदाहरणके लिए, सन्यवाद राष्ट्रीयताका विरोधी और अन्तर्राष्ट्रीयताका समर्थक है; परन्तु उजबकिस्तान और ताजिकिस्तानमें रूसी राष्ट्रीयताको प्रोत्साहन दे रहे हैं। बात यह है कि इन प्रदेशोंमें अनेक क़बीले और फ़िरक़े बसते हैं, जिनमें आपसमें सदा लड़ाई-झगड़े चलते रहते हैं। इन लड़ाई-झगड़ोंको दूर करने और इन प्रदेशोंको एकताके सूत्रमें बाँधनेके लिए यह ज़रूरी था कि पहले उनमें राष्ट्रीयताकी भावना उत्पन्न की जाय, फिर उन्हें अन्तर्राष्ट्रीयताके रंगमें रँगा जाय।

--

रूसी तुर्किस्तान की एक सुन्दरी, जो यू० एस० एस० आर० की

"रूसियोंने यह चालाकी की कि शान और इज्जतके जितने बड़े पद थे, वे सब ताजिक जनताके क्रान्तिसे सहानुभूति रखनेवाले प्रतिनिधियोंको दिये। साथ-ही-साथ कुछ अताजिक साम्यवादी वेतन और सम्मानमें साधारण, परन्तु काम और मौक़ेकी जगहोंपर नियुक्त किये गये, ताकि वे ताजिक अधिकारियोंको बोल्शेविक नीतिसे इधर-उधर भटकने न दें।

"देशकी आर्थिक नीतिके विषयमें सोवियट यूनियनके केन्द्रीय योजना-कमीशनने ताजिकिस्तानके लिए यह मार्ग नियत किया है—

" 'ताजिकिस्तानको सर्वथा कृषिपर अवलम्बित देशसे कृषिजीवी तथा औद्योगिक देश बनानेकी नींव डाली जाय। पासके पूर्वी देशोंपर भविष्यमें सांस्कृतिक और आर्थिक दोनों दृष्टियोंसे पड़नेवाले प्रभावको प्रथम, और यूनियनको रुईकी जरूरत पूरी करनेके लक्ष्यको द्वितीय स्थान दिया जाय। ग्रामोंका आर्थिक पुनर्निर्माण तथा उनमें साम्यवादके नियमोंका समावेश किया जाय। यही ताजिकिस्तानका कार्यक्रम रहे।'

"सरकारने सड़कोंके बनानेमें १९२९ में ६० लाख, १९३० में १ करोड़ २० लाख और १९३१ में २ करोड़ रूबल खर्च किये हैं (आजकल रूबल २) रुपयेके लगभग है)। नये उद्योग-धन्धोंको स्थापित करनेमें पाँच वर्ष पहले कुल २ लाख ७० हजार और १९३१ में १ करोड़ ४० लाख रूबल खर्च किये गये। १९२८ में रुई केवल ४००० हेक्टरमें (१ हेक्टर २॥ एकड़के लगभग समझिये) बोई जाती थी; परन्तु १९३० में वह १,२०,००० हेक्टरमें बोई गई

आबपाशीपर १९२९ में ३० लाख रूबल खर्च हुए थे ; पर १९३१ में एक दम ६ करोड़ १० लाख रूबल खर्च किये गये। कुछ महीनोंमें ही रुई और अनाजके नीचे तीस फी सदी ज़मीन सामूहिक फार्मोंके नीचे आ गई। १९३० में केवल स्टेलीनाबादमें एक अस्पताल था। आज ताजिकिस्तानमें ६१ अस्पताल, ३७ दाँतोंके क्लिनिक, २,१२५ बीमारोंके लिए अस्पतालोंमें रहकर इलाज करानेके कमरे आदिका प्रबन्ध है, और २०० डाक्टर हैं।

"ताजिकिस्तानमें आर्थिक पुनर्निर्माणके सिवा धर्मान्धता और सुधार-विरोधिताका सामना करनेके लिए बोल्शेविकोंका दूसरा भयंकर और घातक अस्त्र है धर्मरहित, आधुनिक वैज्ञानिक सांसारिक शिक्षा।

"१९२५ में ताजिकिस्तानमें केवल ६ आधुनिक स्कूल थे। १९२६ के अन्तमें ११३ स्कूल हो गये, जिनमें २३,००० बालक-बालिकाएँ अध्ययन कर रहे थे। १९२९ में ५०० स्कूल हुए। १९३१ में ,००० से ज्यादा शिक्षा-संस्थाएँ एक लाख बीस हज़ार विद्यार्थियोंको शिक्षित कर रही थीं। १९२९-३० में सरकारी बजटमें शिक्षापर ० लाख रूबल और १९३०-३१ में १ करोड़ ८० लाख रूबल खर्च किये गये।" *

इस शिक्षा और कम्यूनिज़्मके प्रचारका फल यह है कि धर्मान्धताके लिए बदनाम मुसल्मान भी ज़ोरोंसे नास्तिक हो रहे हैं। 'बुतशिकन' ( मूर्ति भंजक ) बनकर गर्व करनेवाले मुसल्मानोंने आज कम्यूनिज़्मके प्रभावमें समरक़न्दकी प्रधान मसजिदकी चोटीपर

* श्री बालकृष्ण गुप्त—'विशाल भारत' फरवरी १९३३

लेनिनका शानदार 'बुत' ( मूर्ति ) खड़ा कर रखा है। अनेकों मसजिदोंमें आज क्लब खुल गये हैं।

लेकिन सबसे आश्चर्यकी बात है मुसलमान स्त्रियोंका उद्धार। दस वर्ष पूर्व तमाम मुसलमान स्त्रियाँ बाहरी दुनियासे बेखबर, पर्देमें बन्द रहकर जीवन बिताती थीं। पुरानी धारणाके अनुसार पुरुष उन्हें पैरकी जूती समझते थे। बहु-विवाह ज़ोरोंसे प्रचलित था, मगर आज वहाँ स्त्रियाँ धड़ाधड़ पर्दा छोड़कर बाहर निकल रही हैं। बोल्शेविकोंने रेडियोका अच्छा खूब उपयोग किया है। घरोंके भीतर दिनमें, जब पुरुष कामपर चले जाते हैं, रेडियो द्वारा स्त्रियोंको गाने सुनाये जाते हैं, घरेलू बातें समझाई जाती हैं, और उनमें स्वतन्त्रताके भाव पैदा किये जाते हैं। तलाक़के नियम भी रूसकी तरह ही ढीले कर दिये गये हैं। स्त्रियोंके क्लब खोल दिये गये हैं, जिनमें अप-टू-डेट आरामकी सारी चीज़ें मौजूद हैं। आजकल जहाँ मियाँने बीबीसे बुरा बर्ताव किया या सवतिनोंसे झगड़ा हुआ, वहीं बीबी घरसे निकलकर क्लबमें जा पहुँची। यह ज़रूरी नहीं कि वह पहलेसे क्लबकी सदस्या हो। क्लबकी कम्यूनिस्ट स्त्रियाँ उससे उसका दुखड़ा सुनती हैं, उसके रहने और खाने-पीनेका इंतज़ाम कर देती हैं, और फटपट उसके पतिसे तलाक़ दिलाकर उसे किसी कारखानेमें काम दिलाकर सामाजिक और आर्थिक दोनों तरहसे स्वतन्त्र बना देती है। बोल्शेविक लोग कारखानोंके ज़रिये औरतोंको अपने पुराने हाथके धन्धोंसे उठाकर मज़दूरोंसे भी गुनी अधिक मज़दूरी देते हैं; उनके लिए अच्छे आरामदेह मकान, सुन्दर भोजनालय, बच्चोंके

धात्रीशालाएं और अस्पतालोंका प्रबन्ध करते हैं। ये सब सुविधा और आरामके साधन अन्य स्त्रियोंको भी अपने पुराने ज़नानखानोंसे बाहर आनेके लिए प्रलोभन दे रहे हैं। कार्यकी गति ज़रा मन्द है लेकिन इस मार्गके द्वारा स्त्रीके पुनः अपने हरममें वापस जानेकी सम्भावना नहीं।

अन्य एशियाई देश

"जंगली घुमक्कड़ चारवाहोंको नये-नये नगरोंमें बसाकर सभ्य बनाया जा रहा है। सन् १९३१ में १५ नये नगरोंकी नींव पड़ी थी। जो मंगोल जीवन-भर काफिलोंके साथ सफरमें ही रहते थे, अब वे ज़मीन-जायदादके स्वामी बनने लगे हैं। जो मूर्ख सैरबीनमें चित्र देखकर दांतों-तले उंगली दबाते थे, वे अब रेलमें यात्रा करते हैं, रेडियोके समाचार सुनते हैं, और अपने बच्चोंको विज्ञानकी शिक्षा दे रहे हैं। पत्र पढ़ने और सुननेका उन्हें घोर व्यसन हो गया है। ·· ना अखबारके उनको चैन नहीं मिलता। छोटेसे प्रदेश उज़बकितानमें आबादी तो कुल पांच लाखकी है; लेकिन पत्र निकलते हैं तीन। कज़ाकस्तानसे १४ पत्र निकलते । दागस्तानकी जनसंख्या कुल सात लाख है—यानी कलकत्तेकी आधी; लेकिन वहां छै पत्र प्रकाशित होते हैं। क्रीमियाकी आबादी भी प्रायः इतनी ही है; पर वहांसे भी दो पत्र निकलते हैं। ट्रान्स-काकेशसकी आबादी तेईस लाख है। यहां तुर्की और तातारी भाषामें १९ पत्र प्रकाशित होते हैं। अजरिस्तानमें केवल सवा लाख मनुष्य बसते हैं। वहां कई पत्र निकलते हैं। इनके अतिरिक्त प्रत्येक कारखाने,

सभा-सोसायटी, क्लब और स्कूल-कालेजोंमें 'दीवारी-अखबार' हैं। दीवारों में काले बोर्डकी भाँति कुछ स्थान संरक्षित रहता है। इसमें नित नये समाचार और विचार सम्पादक-मण्डली हाथसे देती है। पाठक लोग उसकी चारों ओर खड़े होकर अपनी समाचार-पिपासा तृप्त करते हैं। समाचार अधिकांशमें ऐसे ही रहते हैं, जिनसे मुसलमान जनतामें कम्यूनिज़्मका प्रचार हो।"*

* श्री पुरन्धर शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०—'विश्वमित्र' नवम्बर १९३०

# शब्दकोष

माइकन=Ikon=रूसी ईसाइयोंकी उपास्य मूर्तियाँ ।

आर० के० आई०=R. K. I.=Peoples Commissariate for Worker's and peasant's Inspection=किसानों और मज़दूरोंके काम-काज और दशापर निगरानी रखनेवाला विभाग ।

इकाई=Unit ।

कुलक या कुलाक=Kulak.=दोहनकारी, सूदखोर, दूसरेकी मेहनतसे अनुचित लाभ उठानेवाला धनी किसान ।

कोल्होज़ेज़=Colhozes or Kolkhozes=सामूहिक खेत । देखिये पृष्ठ ११४

क्रेमलिन=Kremlin=यह मास्को नगरकी एक ऐतिहासिक इमारत है, इसीमें बोल्शेविक सरकारका प्रधान दफ़्तर है ।

जी० पी० यू०=G. P U.=Gaypayoo.=क्रान्तिकी, उसके शत्रुओंसे रक्षा करनेके लिए रूसने जो खुफ़िया पुलिस बनाई थी, वह जी० पी० यू० कहलाती है । इसे बड़ा अधिकार प्राप्त है, और इसके जुल्मोंकी यूरोपमें अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं ।

डिक्टेटर=Dictator=ऐसा व्यक्ति, जिसे किसी चीज़पर अनियन्त्रित अधिकार हो—सर्वेसर्वा ।

दीवारी-अख़बार=Wall-paper देखिये पृष्ठ २३७

दोहन=Exploitation

नेप=Nep=New Economic Policy.=नवीन आर्थिक-प्रणाली । देखिये पृष्ठ २२३

पंचवर्षीय कार्यक्रम=Five Years Plan. देखिये पृष्ठ २२३

पूँजीवाद=Capitalism

'Pioneer' देखिये पृष्ठ १५२

साधन=Natural Resources

—Proletariat. यह फ्रेंच शब्द है । रोमन इतिहासमें यह शब्द ...की सबसे निकृष्ट श्रेणीके लिए घृणाके साथ व्यवहार किया जाता था।

मगर रूसने इसे एक सम्मान-पूर्ण शब्द बना दिया है। अब उसका अर्थ अपनी मेहनतसे रोटी कमानेवाला श्रम-जीवी वर्ग होता है।

प्रोलेटेरियन=Proletarian=प्रोलेटेरिएट सम्बन्धी।

बुद्धिवर्गीय=Intellectuals

बूर्जुआ=Bourgeois. इस शब्दका वास्तविक अर्थ था—'दूकानदारी करनेवाली मध्य श्रेणीका व्यक्ति।' लेकिन अब उसका प्रयोग धनिकों अथवा उस श्रेणीके लोगोंके लिए किया जाता है, जो पराये परिश्रमपर जीते हैं। मान लीजिये आपका एक कारखाना है, जिसमें सौ मज़दूर काम करते हैं। कारखानेके इन्तज़ाममें आप मज़दूरोंसे भी अधिक परिश्रम करते हैं,—फिर भी मज़दूरोंका शुमार श्रम-जीवी—'प्रोलेटेरिएट'—में और आपका शुमार पर-श्रम-जीवी—'बूर्जुआ'—में किया जायगा।

बोल्शेविक=Bolshevik=अधिकांश या बहुमत। परन्तु अब इसके मानी हो गये हैं—'रूसी साम्यवादी क्रान्तिकारी' या 'कोई भी क्रान्तिकारी या साम्यवादी।'

बोल्शेविज़्म=साम्यवाद, क्रान्तिवाद।

मिस्त्री=Technician

म्यूज़ियम=संग्रहालय, अजायबघर

यात्रा-विभाग=Intourist. रूसी सरकारने विदेशियोंको रूसकी यात्रा करानेके लिए एक विशेष विभाग खोल रखा है। एक निश्चित रकम देनेपर यह विभाग यात्रीको रूसके प्रधान स्थानोंकी यात्रा करा देता है। यात्रामें यात्रीके रहने, खाने-पीने, सवारी, पथ-प्रदर्शक आदि सभी बातें इसी विभागके ज़िम्मे होती हैं। इस पुस्तकमें जहाँ यात्रा-विभागका ज़िक्र आता है, वहाँ इसी विभागसे मतलब है।

यू० एस० एस० आर०—USSR—Union of Socialist Soviet Republics—साम्यवादी सोवियट प्रजातंत्र संघ या रूस। वर्तमान रूसी राज्यका सरकारी—कानूनी—नाम यही है।

रोलर=सड़क कूटनेका इंजन
लाल=Reds=बागी। फ्रेंच राज्यक्रान्तिमें बागियोंने लाल रंगकी एक टो संगीनकी नोकमें खोंसकर उसे अपना झंडा बनाया था। तबसे ला रंग बगावतका रंग और लाल शब्द बागीका पर्यायवाची बन गया है।
लिबरल=Liberal
लेनिन्स कार्नर=Lenin's Corner. रूसमें अनेक सार्वजनिक संस्थाओंमें एक कोनेमें लेनिनकी तसवीर लगी रहती है और उसकी बगलमें उग्र कम्युनिस्ट प्रोपेगेण्डेसे भरे कागज चिपके रहते हैं। इसीको 'लेनिन्स कार्नर' कहते हैं।
वर्ग=Class
वास्तववादी=Realistic
विसा=Visa. विदेशकी यात्रा करते समय अपने देशकी सरकारसे अनुमति पत्र लेना पड़ता है, जिसे 'पासपोर्ट' कहते हैं। इस पासपोर्टपर, जिस देशको आप जाना चाहें उस देशके राजदूतके हस्ताक्षर कराने पड़ते हैं। ये हस्ताक्षर 'विसा' कहलाते हैं।
शाक-ब्रिगेड=Shock Brigade='तूफानी दस्ता', देखिये पृष्ठ १५३
'सर्फ'=Serf देखिये पृष्ठ २१७
सामाजिक बीमा-विभाग=Social Insurance Department
सुधीवर्ग=Intelligentsia=किसी देशका वह जो वर्ग अपने स्वतन्त्र विचार रखनेका इच्छुक हो।
सोव्होज़ेज़=Sovhozes=सरकारी खेत। देखिये पृष्ठ ११४
सोविएट=Soviet. यह रूसी भाषाका शब्द है। इसका अर्थ है मजदूरों या सैनिकों द्वारा निर्वाचित की हुई सभा या पंचायत। रूसमें अलग-अलग प्रान्तों, जिलों या रियासतोंकी अलग-अलग पंचायतें या सोविएटें हैं। चूँकि देशका मौजूदा शासन इसी प्रकारकी पंचायतोंके हाथमें है, इसलिए रूसी सरकार 'सोविएट सरकार' कहलाती है।
स्टेन्डर्ड=Standard.=मापदण्ड
स्त्री-पुरुष भाव=Sex-mentality.

# सोलहवाँ अध्याय

हम लोग चहलक़दमी करते हुए हाईस्कूल पहुंचे। यहां हमें यात्रियोंका एक दूसरा दल भी मिला। उनमें अधिकांश अमेरिकन थे। पहले हम लोग एक कमरेमें गये, जहां बहुतसे लड़के-लड़कियां पियानोंकी गतपर गाना गा रही थीं। एक कोनेमें कई मेज़ें पड़ी हुई थीं, जिनपर कुछ विद्यार्थी झुके हुए, रेडियो सेटकी बनावट सीख रहे थे। स्कूलमें पढ़ाई भी बारी-बारीसे होती है। विद्यार्थियोंका एक दल जब व्यावहारिक शिक्षा पाता है, उस समय दूसरा दल दर्जेमें बैठकर अध्यापकोंके व्याख्यान सुनता है। इसके अलावा सारे विद्यार्थी कई दलोंमें विभक्त हैं। अलग-अलग दलोंके लिए अलग-अलग दिनोंके हफ़्ते मुक़र्रर हैं। मान लीजिए कि एक दलका हफ़्ता शनिवारसे बृहस्पतिवार तक होता है, तो दूसरे दलका मंगलवारसे रविवार तक। यह तो मैं पहले ही बता चुका हूं कि रूसमें सिर्फ़ छै दिनका हफ़्ता होता है, और छुट्टीका कोई एक दिन नियत नहीं है। यह इसलिए किया गया है, जिसमें स्कूल और फैक्टरियां पूरे ज़ोरसे चल सकें। मुझे बताया गया कि इस स्कूलमें ३,००० विद्यार्थी हैं जो पन्द्रह-पन्द्रह सौके दलमें शिक्षा पाते हैं। विद्यार्थियोंकी इतनी बड़ी संख्याको शिक्षा देना इसीलिए सम्भव हो सका है कि उनके दो दल और अलग-अलग दिनोंके हफ़्ते हैं।

जो लड़के अपनी बारी आनेके इन्तज़ारमें होते हैं, वे इधर-उ